मूल्य १५/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

नवम्बर ९३

अलौकिक विशेषांक

मेरा वायदा है मैं इसी जन्म में तुम्हें पूर्णता दूंगा ही

मैं किसी के भी मन को अपने अनुकूल बना लेता हूं

मंत्र साधना में सफलता के उपाय

कुण्डलिनी षट्चक्र भेदन

अलौकिक गुटिका

अलौकिक रहस्य

भारत का भविष्य आने वाले वर्षों में

वर्ष - १ अंक - ६

मनोबल की मशाल जिसे थमा रहा हूं तुम्हारे हाथों में

- सद्गुरुदेव

हमें विश्वास हो गया है कि आप सब वे ही हैं, जिन की धमनियों में पूज्यपाद गुरुदेव का ही रक्त प्रवाहित हो रहा है . . . ठीक अपने सद्गुरु देव की ही तरह धधकता हुआ , गतिशील, प्रेम और चेतना के प्रवाह से भरा हुआ, कुछ करने के लिए आतुर, आग्रहशील और व्यग्र . . . *युग बदले लेकिन आपकी चेतना नहीं बदली. . . और यह बदलनी भी नहीं थी, क्योंकि यह किसी साधारण गुरु का प्रवाह नहीं, आपके सद्गुरुदेव परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का प्रवाह है*. . . और यह कहने में मुझे संकोच नहीं , कोई भी घमंड नहीं कि आप सभी एक युग परिवर्तन - कारी गुरु के चरणों में बैठे हैं . . . यह एक सत्य है, जिसे प्रकट कर रहे हैं आज आप सभी -- भारत के विभिन्न प्रांतों और गांवों में फैले हुए, आप सभी शिष्य , साधक और पाठक गण।

तभी तो हम गर्व से कह रहे हैं, हमें विश्वास हो गया . . .

आपके पत्र निरन्तर मिलते हैं, आपका टेलीफोन से संदेश और साथ ही दिल्ली व जोधपुर कार्यालय में प्राप्त हो रही समाचार पत्रों की कटिंग. . . भारत के विभिन्न भाषाओं में, विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित, नव चेतना का प्रतीक, इस घुटन भरे युग में ताजी हवा का एक झोंका . . .

हमें विश्वास दिला रही है कि पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने शिष्य रूपी नन्हें - नन्हें पौधों को , अपने हृदय के स्नेह रस और प्रेम से सींचा है, वह परिश्रम व्यर्थ नहीं गया है . . . निरन्तर बड़े हो रहे हैं ऐसे सैकड़ों पौधे, जो आगे चलकर सैकड़ों और हजारों को ही नहीं, लाखों को अपनी छांव के नीचे विश्राम देने में समर्थ हो रहे हैं।

हमें गर्व है आप पर -

स्थान - स्थान पर आप सभी के द्वारा करायी जा रही वॉल पेन्टिग और होर्डिंग का समाज पर जिस तरह से प्रभाव पड़ रहा है, उसे अब स्पष्ट करने की आपको भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि *नित्य जोधपुर एवं दिल्ली में प्राप्त हो रहे हैं ऐसे सैकड़ों पत्र और फोन, जिन्होंने इस प्रकार से सूचना प्राप्त कर, हमसे सम्पर्क साधा है,*- और उल्लेख कर रहे हैं ये. आपके नाम का भी . . . पूर्ण विवरण और पता मांग रहें हैं, हमसे, आप सभी का।

क्योंकि **लाभ प्राप्त किया है उन्होंने, एक श्रेष्ठ मासिक को पढ़कर और लाभ प्राप्त कर रहे हैं, पूज्यपाद गुरुदेव से सीधे सम्पर्कित होकर।** आपका यह योगदान, आपको उन शिष्यों की श्रेणी में ले गया है, जिनको आने वाली पीढ़ियां भी स्मरण करेंगी और आपके वंशज गर्व से कहेंगे-- आप उनके पितामह या प्रपितामह थे।

पत्रिका परिवार ने निर्णय लिया है कि नव वर्ष के महत्वपूर्ण एवं अत्याधुनिक ढंग से छपने वाले महत्वपूर्ण विशेषांक में ऐसे सभी शिष्यों एवं पाठकों का परिचय उनके चित्र सहित प्रकाशित किया जाएगा। जिससे उनके नगर में अधिकाधिक नवागंतुक सीधे उनसे मिलकर लाभान्वित हो सकें। **अद्वितीय सौभाग्य के भागी बने हैं आप . . . आपका नाम, आपका यह कार्य, सैकड़ों - सैकड़ों के मध्य चर्चा का विषय बन गया है। गर्व से सिर ऊपर उठ जाता है हमारा, जब हम पत्रों में आप जैसे सुयोग्य पाठकों और शिष्यों का नाम पढ़ते हैं। सचमुच आप संस्था रूपी भवन निर्माण में नींव व स्तम्भ के रूप में गतिशील हो रहे हैं।**

एक शीतल सुगन्ध का परिचय करा रहे हैं, समाज के सदस्यों को, पत्रिकाओं की जंगल जैसी घनी हो गयी बाढ़ के बीच में गुलाब पौधे पर खिले पुष्प की तरह सुगंधित हो रही है -- आपकी यह पत्रिका। निश्चय ही इसका श्रेय आपको ही तो जाता

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ दिवो दिवेन सहपूर्ण सह
कृतेन दिवेन एता सह
अरत्वं न मृते न दिवे सह।।

हम भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए साथ - साथ चलें, स्वार्थवश आलोचना कर अपने-आप को मृतवत् न बना लें, निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर हों।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र -तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्य किसी भी रूप में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

विषय सूची

साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

स्तोत्र

कुण्डलिनी एवं योग

कथ्य

दीक्षा

प्रसंग

वर्ष १३ | अंक ११ | नवम्बर ६३

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०६

एवं

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

पाठकों के पत्र

⊙ मुझे ज्ञात हुआ कि पत्रिका का जनवरी अंक **गोपनीय तंत्र विशेषांक** था और बुक स्टॉल पर आते ही समाप्त हो गया। क्या कार्यालय में कुछ अंक शेष हैं अथवा इसे प्राप्त करने के लिए क्या करूं?

गोकुल प्रसाद चौबे, हरिद्वार

-- जनवरी अंक एवं शेष विशेषांकों के पुनर्प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। इसकी सूचना आपको पत्रिका के माध्यम से प्राप्त हो जाएगी।

सम्पादक

⊙ सितम्बर अंक देख मुझे प्रेरणा मिली है कि मैं भी अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन पत्रिका के माध्यम से दूं। कृपया मुझे नियम भेज दें।

मुकेश गहलौत , तिनसुकिया

⊙ **"मधुमेह"** लेख अच्छा लगा। मैं उसके उपाय के लिए आपका बताया योगासन कर रही हूं। वैसे अभी तक मैंने कोई कसरत अपने वजन और उम्र को लेकर नहीं की थी।

श्रीमती शीला जायसवाल, नई दिल्ली

⊙ अगस्त का **"योग विशेषांक"** जीवन की दैहिक समस्याओं से लड़ते निराश व्यक्तियों के लिए 'तिनके का सहारा' समान सिद्ध हुआ है . . . निःसंदेह **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका हम पाठकों के लिए कामधेनु के समान ही इच्छित फल देने वाली है। क्या मैं हनुमान साधना कर सकती हूं?

कविता सहदेव, लखनऊ

-- विवाहित स्त्रियों के लिए हनुमान साधना करने पर प्रतिबंध नहीं है। यदि आप चाहें तो हनुमान साधना कर सकती हैं।

सम्पादक

⊙ सम्मोहन विशेषांक के बारे से सम्मोहन संबंधी लेखों की कड़ियां बिखरी - बिखरी सी क्यों आ रही है, जबकि इस विशेषांक के बाद तुरंत ही अगले एक - दो अंकों में आपको पूरी पद्धति स्पष्ट कर देनी चाहिए थी।

दिलीप ध्यानी , ग्वालियर

⊙ इस वर्ष के प्रारम्भ में प्रतिमाह दिया जाने वाला स्तम्भ **' काल - निर्णय '** क्यों समाप्त कर दिया? यदि उसे देने में कोई असमर्थता हो तो, प्रतिमाह साधना- सिद्धि के सफल मुहूर्त संक्षेप में दे दिया करें।

श्रीमती शांति शर्मा, इलाहाबाद

⊙ सितम्बर अंक के पृष्ठ ६९ पर वर्णित द्वितीय योगासन में क्या उसे बांये हाथ से टखने को पकड़ने के बाद फिर दूसरे क्रम में दायें हाथ से बांये टखने को पकड़ना आवश्यक है अथवा नहीं।

दर्शन शर्मा, सोनीपत

— दांये क्रम से करने के बाद उसको बांए क्रम से करना आवश्यक है। लेख की इस त्रुटि की ओर आप द्वारा ध्यान आकर्षित कराने के लिए हम आभारी हैं।

सम्पादक

⊙ **"मंथन'** के अन्तर्गत **"अगला प्रधान मंत्री कौन "** का समापन कड़ी पढ़कर आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि आप द्वारा घोषित नाम तो चौंकाने वाले ही हैं। तीसरा नाम गोपनीय क्यों कर दिया? इससे तो जिज्ञासा बची ही रह गयी।

भागीरथ शुक्ल, शांडिल्य, देवघर

⊙ **'स्वर्णप्रभा यक्षिणी'** लेख पहले प्रकाशित हुई अन्य यक्षिणी साधनाओं से ज्यादा स्पष्ट है। मुद्राओं का वर्णन करने के साथ उनके बनाने की विधि भी स्पष्ट किया करें।

अनिल जे. पटेल, पंचमहल

⊙ अक्टूबर के अंक में पूर्व घोषित अनेक लेख प्राप्त न होने से उनके विषय में जिज्ञासा शेष रह गयी। क्या आप उनको भविष्य में प्रकाशित करेंगे।

केवल चंद, मुरादाबाद

⊙ **"१०८ सौ टंच . . . "** लेख के कारण यह अंक केवल विशेषांक नहीं सम्पूर्ण ग्रंथ बन गया है। मैंने इस अंक की तीन प्रतियां खरीद कर सुरक्षित कर ली हैं।

निरूपमा शांति, हैदराबाद

⊙ **'कपिला योगिनी'** प्रयोग एक नया चिंतन है और मेरे नगर में इस लेख को लेकर बुद्धिजीवियों के मध्य काफी चर्चा रही।

डॉ. ओमप्रकाश गौड़, जबलपुर

⊙ आपने **'महाबली दशकंधर . . .'** लेख द्वारा विवादास्पद रावण के ज्ञान पक्ष को सामने रख कर साहस पूर्ण कार्य किया है। अन्यथा एक श्रेष्ठ ज्ञान केवल लोक निन्दा के भय से प्रकाश में आने से वंचित रह जाता।

जय प्रकाश, २४ परगना

⊙ विगत कुछ अंकों से **शिष्योपनिषद** को पत्रिका में न पाकर मन में विचार आ रहा है कि क्या इसका प्रकाशन समाप्त हो गया है अथवा आगामी अंकों में इसी प्रकार के श्रेष्ठ साधनात्मक चिंतन एवं ज्ञान से भरे लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा?

प्रवीन जोशी, बड़ौदा

⊙ पत्रिका में पूर्व घोषित अनेक लेख नहीं प्राप्त हुए . . . खेद रहा, किन्तु अनेक दुर्लभ लक्ष्मी साधनाओं, सौन्दर्य लक्ष्मी साधना, से मन का खेद जाता रहा। इतनी ठोस जानकारी से भरा अंक प्रकाशित करने के लिए बधाई।

टी. सुब्बाराव, भोपाल

⊙ पत्रिका के सितम्बर अंक में अद्‌भुत आकर्षण है , सद्‌गुरुदेव से संबंधित लेख पढ़कर मैं बहुत शांति पा रहा हूं। आप का सभी पाठकों को 'पुत्र' शब्द से पुकारना मेरे मस्तिष्क में अभी तक गुंजरित हो रहा है।

बाबुल, मिर्जापुर

सम्पादकीय

'अलौकिक' और 'चमत्कार' पूर्ण ये दो शब्द आध्यात्म के साथ उसके सहयोगी अथवा पर्यायवाची बन कर साथ ही साथ चलते रहते हैं, जबकि आध्यात्म में न तो कुछ अलौकिक है और न ही चमत्कार-पूर्ण। इसका सीधा सा अर्थ है कि जो कुछ भी व्यक्ति अपनी बुद्धि अथवा सप्रयासों से नहीं समझ पाता उसे वह **'अलौकिक'** मान बैठता है। यही 'अलौकिक' तथ्य ज्ञात किये जा सकते हैं-- साधनाओं के माध्यम से, जो अभी तक मानव नहीं ज्ञात कर सका है अपने उपकरणों और वैज्ञानिक यंत्रों से। साधना इस शरीर को ही एक सुघड़ और परिष्कृत यंत्र बना देने की क्रिया है। पत्रिका परिवार की यह रीति रही है कि हमें किसी भी साधना को गोपनीय नहीं रखना है, चाहे वह अर्थ प्राप्ति की साधनाएं हो , चाहे वह आध्यात्मिक साधनाएं हो या फिर इतरयोनि वर्ग से संबंधित साधनाएं हों।

पत्रिका का पिछला अंक **'महालक्ष्मी विशेषांक '** था और जिस प्रकार से पाठकों ने हृदय से स्वागत किया और स्टॉल पर आते ही घर - घर पहुंच गयी। उससेतथा पाठकों के पत्र से हमें विश्वास हो गया है कि वास्तव में साधनाओं के प्रति समाज में एक नई चेतना आई है। कोई कारण ही नहीं है, कि पाठक को प्रामाणिक साधनाएं मिले और वह साधनाओं में संलग्न न हो, पत्रिका का यही उद्देश्य रहा है। केवल मात्र क्षणिक मनोरंजन ही हमारा उद्देश्य नहीं है। हमारा उद्देश्य है कि साधनाओं के माध्यम से आपके जीवन में निरन्तर आनंद और उत्साह का वातावरण बन सके।

कार्तिक का यह उल्लास पूर्ण माह सम्पूर्ण रूप से साधनात्मक माह है। यह पूरा माह ही चैतन्य माह है, और इसी कारणवश हम जीवन के विविध पक्षों, विविधरंगों की ही भांति विविध प्रयोगों की एक सम्पूर्ण कड़ी लेकर उपस्थित हुए हैं। इस ''अलौकिक विशेषांक'' में।

सर्वथा नूतन और रोचक तथ्यों की प्रथम प्रस्तुति के साथ - साथ . . .

आपको यह अंक रोचकता और ज्ञान दोनों का ऐसा सम्मिश्रण देगा जिसके द्वारा आपका यह माह केवल एक दीपावली पर्व तक ही नहीं वरन सम्पूर्ण रूप से पर्व का आनंद देने वाला सिद्ध होगा।

ऐसी ही समस्त मंगलकामनाओं और शुभ-कामनाओं के साथ . . .

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

धधकती ज्वालाओं के बीच एक महकता हुआ गुलाब

जिनकी कोई भी भविष्यवाणी गलत सिद्ध नहीं हुई

मैं देख रहा हूं नरसंहार, लाखों युद्ध बंदी. . . मैं देख रहा हूं इस धरा पर फैला रक्त. . . किसी पड़ोसी देश के उन्माद का फल. . .

अगले कुछ माह में ही. . .

उदासी तैर आयी डॉ.श्रीमाली जी की आंखों में. . .

श्रीमाली जी को एक गुरु रूप में मैं कम जानता हूं इसकी अपेक्षा एक सफल भविष्यवक्ता के रूप में मैं ज्यादा उनके निकट में रहा। ज्योतिष के मंचों पर मुझे उनके साथ बैठने का गौरव प्राप्त हुआ है, विश्व ज्योतिष सम्मेलन में उनको अध्यक्षता करते हुए मैंने देखा है और मैंने यह अनुभव किया है कि वे अत्यधिक भावुक संवेदनशील पर साथ ही साथ अत्यधिक कठोर और सम्पूर्ण भविष्यवक्ता हैं।

उनको देखने से एक आनन्द और तृप्ति का अनुभव होता है, उनके पास बैठने से एक खुमारी सी महसूस होती है, एक शांति सी प्रतीत होती है, ऐसा लगता है कि वास्तव में ही कोई एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व और दिव्य आत्मा के पास हम बैठे हैं, मैंने उन्हें खिलखिलाते हुए, मुस्कराते हुए देखा है और साथ ही साथ उन्हें गम्भीर, उदास और उद्वेलित होते हुए भी अनुभव किया है।

पर उन्हें व्यथा या चिन्ता लगभग है ही नहीं, परिवार की चिन्ता भी वे कम ही करते हैं क्योंकि वे अत्यधिक व्यस्त रहते हैं और निरंतर कुछ न कुछ सृजन करते ही रहते हैं चाहे काव्य हो, चाहे पत्रिका का सम्पादन हो, चाहे ज्योतिषीय ग्रंथ हो। श्रीमाली जी ही वे पहले व्यक्तित्व हैं जिन्होंने ज्योतिष को संस्कृत के कठघरे में से निकाल कर भारत की जनता को ज्योतिष से परिचित कराया। साधारण सहज शैली में ज्योतिष को प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुंचाया। ज्योतिष में जो कठमुल्लापन, पंडिताऊ पन , जो सड़ान्ध पैदा हो गई थी उसको दूर करने का प्रयास किया और उनके ही प्रयासों का यह फल है कि आज जगह - जगह पर ज्योतिष सम्मेलन हो रहें हैं। समाज में

ज्योतिषियों को सम्मान मिला है। ज्योतिष अपने आप में एक प्रामाणिक विधा मानी गई है, लोगों को ज्योतिष पर विश्वास होने लगा है, और इन सबके पीछे यदि कोई दृढ़ता के साथ व्यक्तित्व है तो वह श्रीमाली जी हैं।

जब - जब भी संसार में कहीं पर भी कुछ भी घटना घटित होने वाली होती है वे पहले से ही व्यथित दिखाई देने लग जाते हैं, मैं उनको काफी समय से जानता था। सन् ६२ में चीन का हमला जब भारत वर्ष पर हुआ तो मैंने टेलीफोन पर उनसे सम्पर्क स्थापित किया -- मैंने कहा 'श्रीमाली जी देश पर वज्रपात हो गया है, क्या होगा? उसी क्षण टेलीफोन पर ही उन्होंने जवाब दिया **''भारत थोड़ा बहुत खंडित तो जरूर होगा पर भारत का स्वाभिमान जग जायेगा और दृढ़ता के साथ विश्व के मानचित्र पर खड़ा हो जायेगा''** और आने वाले समय में उनकी ये पक्तियां ज्यों की त्यों सच दिखाई दे रही है। उसके बाद से ही भारत वर्ष को एक झटका लगा पर आत्म गौरव का बोध भी हुआ, एहसास भी हुआ और उसी का परिणाम हुआ कि आगे जो भारत और पाकिस्तान में युद्ध हुआ उसमें भारत ने सफलता के साथ विजय प्राप्त की। पाकिस्तान के हमले से पूर्व जब मुझे वे ज्योतिष सम्मेलन के अवसर पर मिले, उस समय ऐसी कोई चर्चा नहीं थी कि कुछ अघटित घटना होने वाली है, पर मैंने अनुभव किया कि श्रीमाली जी चिंतित और उदास थे, मैंने एकांत के क्षणों में पूछा कि आप कुछ परेशान से लग रहें हैं, क्या आपका स्वास्थ्य ठीक है?

उन्होंने सूनी आंखों से मेरी ओर देखते हुए कहा - ' 'मैं देख रहा हूं कि भारत वर्ष पर विपत्तियां आने वाली है युद्ध की विपत्ति, संग्राम की विपत्ति, नाश की विपत्ति।'' पर दूसरे ही क्षण उनके आंखों में चमक लौट आयी, मगर यह जरूरी है उन्होंने बात की तारतम्यता को जोड़ते हुए कहा - **''क्योंकि भारत वर्ष को स्वाभिमान दिखाने का यह सबसे अच्छा मौका है, इस युद्ध से संसार एक बार एहसास कर लेगा कि भारत वर्ष अपने आप में एक सम्पूर्ण शक्ति है।''**

मैंने आश्चर्य के साथ पूछा - क्या?

उन्होंने जवाब दिया - ''हां! एक पड़ौसी देश उन्माद में भारत वर्ष पर प्रहार कर सकता है **और करेगा। निकट भविष्य में यह घटना घटित होने वाली है, मैं देख रहा हूं नरसंहार, मैं देख रहा हूं लाखों युद्ध बंदी, मैं देख रहा हूं इस धरती पर फैला हुआ खून -- और एक बार फिर वे अपनी आंखों में उदासी लिए आकाश की ओर एक टक देखने लगे।''**

अगले ही तीन- चार महीनों में ये सभी घटनाएं सत्य साबित हुईं, मेरी डायरी में आज भी वे पंक्तियां, जो श्रीमाली जी के साथ बातचीत की थी अंकित हैं **कि यह ठीक है, जरूरी हो गया है युद्ध, इससे हमारा देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ विश्व के सम्मुख खड़ा हो सकेगा। उसके बाद ही विश्व ने यह एहसास किया भारत वर्ष अपने आप में एक पूर्ण शक्ति है।**

इसके बाद उनके साथ मेरा सम्पर्क नहीं रह सका, उन्होंने ज्योतिष के सम्मेलनों में भाग लेना कम कर दिया था, यात्राएं उन्होंने कम कर दीं वे अपने आप में खो से गए थे, एक बार दिल्ली में मिलने पर जब मैंने पूछा भी कि आप ने ज्योतिष सम्मेलनों में आना बंद कर दिया है।

तो उन्होंने उत्तर दिया - हां। यह विद्या गौरवमयी विद्या है, और जब छोटे और टुच्चे लोगों के हाथों कोई विद्या चली जाती है तो उस विद्या का पतन होने लग जाता है। आस्था हिलने लग जाती है , विश्वास डगमगाने लग जाता है। और *मैं देख रहा हूं कि जिन लोगों को ज्योतिष का सामान्य सा भी ज्ञान नहीं है वे भी विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी होने का दावा करने लग गये हैं, तो इस विद्या का पतन होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है* और इसीलिए उन विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषियों में मेरे जैसे आदमी का बैठना अनुकूल अनुभव नहीं करता इसीलिए मैं स्वयं पीछे हट गया हूं।''

और वास्तव में मैंने दुख के साथ अनुभव किया है कि हर गली, हर सड़क, हर मोहल्ले में यदि आदमी को कोई काम नहीं मिलता है तो श्रीमाली जी की चार छः किताबें पढ़कर ज्योतिषी होने का दावा करने लग जाते हैं, और ज्यों ही ज्योतिषी होने का दावा करते हैं और एक बड़ा सा बोर्ड लगा देते हैं **'' विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी''।** भारत वर्ष में भारत प्रसिद्ध या प्रान्त प्रसिद्ध

(शेष पृष्ठ २५ पर)

रूस तो खंड-खंड हो जाएगा, आने वाले दिनों में उसका और भी अधिक विघटन होना है. . . अंकित है मेरी डायरी में डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी की यह भविष्यवाणी . . . पूर्ण प्रामाणिकता से. . .

प्रातः स्मरण

देवी भागवत' में वर्णित इस प्रातः स्मरण का महत्व स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, जिसमें नित्य प्रति प्रातः किस चिन्तन से मां भगवती का चिन्तन किया जाय - इसका काव्यात्मक विवरण है। इस पद के नित्य पाठ के साथ ही साथ संस्कृत से अनभिज्ञ पाठकों को इसमें निहित श्रद्धा व भावना की भावभूमि मानस में प्रतिबिम्बित हो सके, इसी हेतु इस पद के अन्त में अनुवाद के स्थान पर संक्षिप्त भावार्थ भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां, सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां, रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ।। १ ।।
प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड, शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां, चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ।। २ ।।
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं, धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां, मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णो।। ३ ।।
अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचक नामं स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्।।४ ।।
उमा उषा च वैदेही रमा गंगेति पंचकम्।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ।। ५ ।।
कृत्वा समाधिस्थितया धिया ते, चिन्तां नवाधारनिवासभूताम्।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसारयात्रा मनुवर्तयिष्ये ।। ६ ।।
संसारयात्रामनु वर्तमानं, तवाज्ञया श्रीत्रिपुरेश्वरेशि।
स्पर्धातिरस्कार कलिप्रमाद - भयानि मे नात्र भवन्तु मातः।। ७ ।।
जानामि धर्मं न च मे प्रवित्तिः - र्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया ऋषिकेशि हृदिस्थयाहं, यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ।। ८ ।।
मंजुसिंजितमंजीरं वाममर्ध महेशिनुः, आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम् ।। ९ ।।
सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यांविद्यां च धीमहि, तां सर्वेप्रणमाम्येति बुद्धिं या नः प्रचोदयात् ।। १०।।

शरद के चन्द्र की किरणों की भांति उज्ज्वल कांति वाली मां भगवती, जिनके नीलवर्णीय सहस्त्र हस्त विविध आयुधों से युक्त हैं तथा जिनके चरण लाल कमल की भांति उज्ज्वल हैं, वे विविध आभूषणों से भूषित मां पराम्बा, दैत्यों का विनाश एवं मुनिजन व देवताओं को भी मोहित करने में समर्थ हैं, वे ही भक्तों की अभिलाषा को पूर्ण करने वाली, पापों के पुंज को नष्ट करने में समर्थ हैं। संसार में आवागमन के क्रम को भंग करने वाली मूल शक्ति का मैं नित्य चिन्तन, मनन व प्रणाम ज्ञापन करता हूं।

मां ! मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए कि मैं नित्यप्रति प्रातः उठने पर समाधिस्थ बुद्धि के द्वारा हृदय पूर्वक चिन्तन कर उस दिन की यात्रा में आपकी इच्छा के अनुरूप अनुवर्तन करूं, क्योंकि मैं तो अपनी शक्ति से धर्म को जानते हुए भी उसमें प्रवृत्त नहीं हो पाता, अधर्म को भी जानता हूं किंतु उससे निवृत्त नहीं हो पाता। अब तो इस संसार में उन्हीं का आश्रय लेता हूं जो महेश्वर का बायां अर्धांग हैं एवं विष्णु की परामाया भी। उन्हीं की कृपा से फिर मुझे इस जगत में स्पर्धा, तिरस्कार, कलिप्रमाद व भय नहीं व्याप्त होगा।

अहिल्या, द्रौपदी , तारा , कुन्ती एवं मन्दोदरी -- इन पांच नामों को नित्य प्रति स्मरण करने से पापों का विनाश होता है तथा उमा, ऊषा, सीता, रमा और गंगा इन पंच नामों के नित्य प्रति प्रातः स्मरण से सौभाग्य की वृद्धि होती है। ♦

तुम्हें पिछले किसी जन्म में दिया हुआ वायदा

मैं इसी जन्म में पूरा कर देना चाहता हूं

किसी न किसी जीवन में कभी न कभी तुमसे जरूर वायदा किया होगा कि मैं तुम्हें अमृतत्व का पान कराऊंगा . . . और इसी वायदे को निभाने के लिए मैं इस धरती पर आया हूं . . . और आवाज दे रहा हूं तुम्हें अपने पास बुलाने के लिए कि जिससे मेरे द्वारा किया गया वायदा पूरा हो सके . . .

-- गुरुदेव

तुम मेरे शिष्य हो या मेरे आत्मीय हो या मेरे से परिचित हो या पत्रिका के पाठक हो, किसी न किसी रूप में यदि तुम्हारा और मेरा संबंध बना हुआ है, तो इसकी जड़ें जरूर पिछले किसी जीवन से जुड़ी रही होगी। यह संभव ही नहीं है कि तुम मुझसे इसी जीवन में जुड़े, कई - कई जन्मों से तुम मेरे साथ जुड़े हुए हो, हो सकता है कि तीन जन्म पहले, पांच जन्म पहले, आठ जन्म पहले या दस जन्म पहले। मैंने तुम्हारे साथ यह वायदा किया होगा कि मैं तुम्हें इन **भौतिक बाधाओं से परे हटाकर उस पूर्णता तक पहुंचा दूंगा जिसे 'ब्रह्म' कहा गया है, जिसे पूर्णता कहा गया है, जिसे 'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं' कहा गया है,** और इसके बाद हर जीवन में तुम मुझसे कहीं न कहीं मिले -- शिष्य के रूप में, पाठक के रूप में, परिचित के रूप में और किसी भी अन्य रूप में। हर बार मैंने तुम्हें समझाया है, पूर्णता तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है। हर बार तुम ने मेरा हाथ छोड़ दिया है, हर बार तुम भटक गये, हर बार भौतिकता के दल-दल में फंस गये। हर बार पत्नी, पुत्र और परिवार - जनों के वाक् जाल में उलझ कर अपनी साधना को अधूरा छोड़ दिया और फिर तुम्हें जन्म लेना पड़ा, फिर तुम्हें मल - मूत्र में पड़ना पड़ा फिर तुम उसमें से बाहर निकले, फिर तुम अपने जीवन को बड़ा करते हुए उन्हीं समस्याओं में घिर गये, और जो जीवन का सही आनन्द, जीवन का जो सही प्रेम, स्नेह, ऊंचाई है, प्राप्त नहीं कर पाये।

इसका कारण है हर बार तुम्हारा इस प्रकार की भौतिक समस्याओं से उलझा हुआ रहना, पर इससे तुम्हें मिला क्या? इस जीवन में ही तुम देख लो कि तुम्हें क्या मिल गया है?

थोड़े से कागजी नोट, थोड़े से परिवार के बंधन और इसके साथ ही साथ मिला तुम्हें तनाव, परेशानियां, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाईयां, असंतोष, जीवन की अपूर्णता। क्या यह सब कुछ सही है? क्या जीवन इतना घटिया मामूली सा है कि इन छोटी चीजों के बदले जीवन को बरबाद कर दिया जाए? तुम एक प्रकार से इन तुच्छ कागजी नोटों के बदले अपने जीवन को बरबाद ही कर रहे हो, **सही अर्थों में कहना चाहूं तो तुम्हारा जीवन खरे सोने के सिक्के की तरह है और तुम इसे रांगे के भाव, लोहे के भाव बेच रहे हो, बरबाद कर रहे हो।** ऐसा कब तक चलेगा? ऐसा तुम्हारे जीवन का अधूरापन कब तक समाप्त होगा? कब तक तुम मन में पीड़ा और दर्द लिए घूमते रहोगे? कब तक तुम्हारे मन में छटपटाहट बनी रहेगी, कब तक तुम्हारे जीवन में असंतोष उभर रहा होगा? कौन सा ऐसा क्षण आएगा जब तुम्हें समझ आएगी, कौन सा ऐसा क्षण आयेगा जब तुम अहसास कर सकोगे कि मुझे जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेनी है।

यह पूर्णता गुरु ही दे सकते हैं--

तुम्हारा यह अधूरापन, तुम्हारी यह कमी, तुम्हारी यह न्यूनता संसार का कोई वैज्ञानिक, कोई साइंस, कोई टेक्नोलॉजी दूर नहीं कर सकती। तुम्हारे मन का जो अंधियारा है वह बाहर से दूर हो ही नहीं सकता। कोई ऐसी मशीन बनी ही नहीं जो तुम्हारे असंतोष को दूर कर सके। **तुम जिस पैसे पर गर्व कर रहे हो वे तो चांदी के चंद ठीकरें हैं, टुकड़े हैं। उन चांदी के टुकड़ों से तुम मन का संतोष प्राप्त नहीं कर सकते।** उन कागजी नोटों से मन का आनन्द मोल नहीं ले सकते, प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकते, जीवन की उमंग नहीं खरीद सकते, जीवन का वास्तविक सुख इन रुपयों के बदले नहीं प्राप्त हो सकता। जीवन की श्रेष्ठता केवल पैसों से प्राप्त नहीं हो सकती। यह तुम्हारे मन का आनन्द, यह तुम्हारे मन का संतोष, यह मन की पूर्णता, न तुम्हारे पैसे दे सकते हैं, न तुम्हारी पत्नी दे सकती है, न तुम्हारा पुत्र दे सकता है और न तुम्हारा समाज दे सकता है।

इस समाज में जिसको तुमने पत्नी कहा है, पति कहा है, चाचा, काका, ताऊ जो कुछ कहा है, उन्होंने तुम्हें केवल बंधन दिया है, बांध दिया है, छोटे से कटघरे में, एक छोटे से मकान में, एक पत्नी के साथ, दो चार बच्चों के साथ, पांच हजार रुपयों के साथ वे बंधन दे सकते हैं, मुक्ति नहीं दे सकते, वे तुम्हे परेशानियां दे सकते हैं, उलझने दे सकते हैं, जीवन का आनन्द नहीं दे सकते हैं। वे तुम्हें गृहस्थ की कठिनाइयां दे सकते हैं, तुम्हें आकाश में उड़ने की क्षमता नहीं दे सकते। आकाश में उड़ने का आनन्द हंस ही प्राप्त कर सकता है। वह तो मानसरोवर का हंस ही अनुभव कर सकता है कि मानसरोवर झील में डुबकी लगाने का आनन्द क्या होता है, और **यह आनन्द गुरु के अलावा और कोई दे ही नहीं सकता, न देवता, न मनुष्य, न मित्र, न परिवार, न पत्नी, न पति, न पुत्र, न बन्धु, न बान्धव और जब तक ज्ञान प्राप्त नहीं होगा तब तक तुम्हारे जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती** और जब तक पूर्णता प्राप्त नहीं होती तब तक तुम्हारा यह जीवन बार - बार घिसा-पिटा चलता रहेगा। एक ऐसा जीवन जो घिसे हुए रिकार्ड की तरह है जो बार - बार एक ही बात पर घिसटती रहती है। आखिर तुम कब सावधान होगे? कब चैतन्य होगे? कब एहसास करोगे कि हमें यह सब बन्धन तोड़ कर जीवन का आनन्द प्राप्त करना है, जीवन की उमंग लेनी है, जीवन का ऐश्वर्य प्राप्त करना है। इन रुपयों- पैसों, घर - मकान और चांदी के चंद टुकड़ों के बदले उस खरे सोने को लेना है, उस हीरे को प्राप्त करना है जो जीवन में पूर्ण आनन्द दे सकता है, जीवन में पूर्ण चैतन्यता दे सकता है, जीवन की पूर्णता दे सकता है।

मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से इस एक योनि में ही खड़ा कर सकता हूं--

हमारे शास्त्रों में कहा है कि **चौरासी लाख योनियां** होती हैं। व्यक्ति हर योनियों में भटकता हुआ इस मनुष्य जीवन को प्राप्त करता है। अब तुमने मनुष्य जीवन प्राप्त किया है वह तुम्हारे साठ साल का, सत्तर साल का जीवन है। वैसे भी तुमने तीस - पैंतीस साल समाप्त कर दिए हैं, कुल बीस - पच्चीस साल बचे हैं इस मानव जीवन के, और यह जीवन भी समाप्त हो गया, तो पुनः चौरासी लाख योनियां भटकने के बाद ही यह मानव जीवन प्राप्त हो सकेगा, कब प्राप्त हो सकेगा कुछ कहा नहीं जा सकता। यदि ऐसा जीवन प्राप्त हो भी गया और सही सद्गुरु प्राप्त नहीं हुए तो भी वह जीवन व्यर्थ चला जायेगा, उस जीवन का कोई अर्थ, कोई मकसद नहीं रह पायेगा। अब जबकि तुम्हारे हाथ में यह जीवन है तो इस जीवन का मूल्यांकन करना तुम्हारा फर्ज है। *इस जीवन में तुम्हें सब कुछ कर देना है, इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेनी है, जिससे कि भविष्य में बार - बार जन्म नहीं लेना पड़े बार - बार उस मल - मूत्र में नहीं रहना पड़े बार - बार उस भौतिकता में बंधकर जीवन को एक कटघरे में कैदी की तरह व्यतीत नहीं करना पड़े।* मैं तुम्हें इन चौरासी लाख योनियों के आवागमन से मुक्ति दिलाकर इसी जीवन में मुक्त कर देना चाहता हूं, इसीलिए तो मैं आया हूं।

बिना त्याग के जीवन में पूर्णता आ ही नहीं सकती :-

यह भी अच्छी तरह से समझ लें कि जब तक तुम किसी चीज को अपनी छाती से चिपकाए रखोगे, उससे आसक्ति रखोगे तब तक जीवन में पूर्णता आ ही नहीं सकती, पूर्णता तभी आ सकती है।

मैं तुम्हारे पंखों में गति दूंगा और निरभ्र आकाश में सुदूर ऊंचाई पर उड़ने की जानकारी दूंगा . . .

तुम्हारे सारे दुख, दर्द , दैन्य, अभाव , विषमता और कष्ट मिटा कर पूर्णता दूंगा. . .

जब आप विलुप्त हो जाएं, सबसे परे हट जाएं, किसी के प्रति तुम्हें आसक्ति नहीं रहे न पति के प्रति, न पत्नी के प्रति, न धन के प्रति, न ऐश्वर्य के प्रति, न समाज के प्रति *इन सबसे हट कर जब तुम खड़े हो सकोगे तब तुम सही अर्थों में शिष्य बन सकोगे, साधक बन सकोगे, पूर्णता तक पहुंचने का रास्ता प्राप्त कर सकोगे।* आकाश में उड़ने के लिए पंख फैलाने की क्षमता मिल सकेगी, मानसरोवर में डुबकी लगाने की क्रिया आ सकेगी। इसके लिए बहुत जरूरी है-- **'त्याग '** क्योंकि तुम्हें पूर्णता तक पहुंचाने वाला केवल एक ही व्यक्तित्व है जिसको हमने **'गुरु'** कहा है, जिसको **'पूर्णमदः'** कहा है, जिसको ***'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु , गुरुर्देवो महेश्वरः'*** कहा गया है। उस तक पहुंचने की क्रिया ही तुम्हारी पूर्णता है। उन्हें प्राप्त करने की क्रिया ही तुम्हारी श्रेष्ठता है। उनके होंठों पर तुम्हारा नाम आ जाना ही अपने आप में महानता है क्योंकि उनके सामने तो सैकड़ो, हजारों, लाखों व्यक्ति हैं और शिष्य हैं और सबके नाम याद रखना संभव नहीं है। जब तक उनके होंठो पर तुम्हारा नाम नहीं होगा, उनके हृदय में जब तक तुम बस नहीं जाओगे तब तक उनके और तुम्हारे बीच में संबंध कैसे बन पायेंगे। संबंध बनाने के लिए जरूरी है कि तुम बिल्कुल अपने गुरु के साथ एकाकार हो जाओ, मिल जाओ, एक हो जाओ, तुम्हारा और गुरु का अस्तित्व अलग रहे ही नहीं।

त्याग : गुरु तक पहुंचने का पहला कदम -

और यह तभी संभव है जब तुम त्याग कर सको 'बुद्ध' की तरह जिसने अपने गुरु के सामने जाकर अपने गले का हार, अपने आभूषण, अपने राजषी वस्त्र चरणों में समर्पित कर दिये और कहा – 'अब मैं मुक्त हूं'। कोई राजसी चीज मेरे पास नहीं है। मैं केवल आप के दिए वस्त्र धारण करना चाहता हूं। मैं इसी जीवन में आपके चरणों में पूर्णता प्राप्त कर लेना चाहता हूं।

तुम्हें मुक्त होना है **"बुद्ध"** की तरह, एक राजा का पुत्र होने के बाद भी अपने पूरे ऐश्वर्य के साथ गुरु - चरणों में समर्पित हो गया, सौंप दिया– नहीं चाहिए ये चांदी के टुकड़े, नहीं चाहिए यह वैभव, *नहीं चाहिए यह ऐश्वर्य, नहीं चाहिए यह सम्पन्नता। मुझे केवल आप की श्रेष्ठता और दिव्यता चाहिए। मुझे चाहिए कि मैं आप के हृदय में स्थान बना सकूं।* मैं आप के आंखों के रास्ते आप के हृदय में पहुंच सकूं। मैं आप के होठों पर अपना नाम अंकित कर सकूं और यह त्याग ही इस बात का अहसास होगा, इस त्याग से ही गुरु इस बात को अनुभव कर सकेंगे कि तुम में लगन है, चेतना है। गुरु को तुम्हारा धन, वैभव, ऐश्वर्य चाहिए नहीं, मगर वह तुम्हारा त्याग देखना चाहता है। देखना चाहता है कि तुम सिर्फ होठों से ही "गुरु" शब्द का उच्चारण कर रहे हो या तुम्हारे हृदय में भाव है, एक चिन्तन है, एक विचार है कि अपने आप को पूर्णता के साथ समर्पित करने की क्षमता है। **यह क्षमता तुम्हारे त्याग से अनुभव हो सकेगी। यह तुम्हारे चिन्तन से स्पष्ट हो सकेगी। यह तुम्हें तब प्राप्त हो सकेगी, जब तुम अपना सब कुछ समर्पित कर दोगे, सब कुछ सौंप दोगे।** जो कुछ रांगा है, लोहा है, तांबा है यह सब कुछ सौंप कर ही उस पूर्णता को प्राप्त कर सकोगे जिसे **'हीरा'** कहा गया है। जिसको अपने आप में **'बहुविभुषित'** कहा गया है, जिसको 'पूर्णमदः' कहा गया है। इस प्रकार से ही जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकोगे और वह गुरु यह अहसास कर लेगा कि यह वास्तव में समर्पित है, वास्तव में ही इसमें त्याग -वृत्ति है। वास्तव में इसने त्याग को विसर्जित कर दिया है। न इसे पद का मोह है, न यह ऑफिसर है न इस बात का गरूर है, न इसे धन का घमण्ड है, न व्यापार का और न परिवार का घमण्ड रहा है। सब कुछ गुरु चरणों में सौंप दिया है, विमुक्त भाव से बिना लाग लपेट के। तब गुरु अपने हाथ को तुम्हारे सिर पर रख देगा। तब गुरु इस बात को अनुभव कर सकेगा कि अब तुम में एक पूर्ण त्याग की भावना है और यह सब कुछ सौंप देना ही पूर्णता है। यह सब कुछ विसर्जित कर देना ही श्रेष्ठता है।

अपना जो कुछ है वह सब कुछ उनके चरणों में समर्पित कर देना पहला कदम है उस रास्ते पर जो पूर्णता की ओर जाता है, अमरत्व की ओर जाता है, जो रास्ता श्रेष्ठता की ओर जाता है, जो गुरु से एकाकार होने का रास्ता है। आज तक जितने भी उच्च कोटि के योगी सन्यासी बने चाहे वह शंकराचार्य हों, चाहे गोरखनाथ हों, चाहे सूर ,मीरा, तुलसी, कबीर हों, चाहे विश्वामित्र , वशिष्ठ, कणाद, अत्रि,पुलस्त्य हों, चाहे बुद्ध हों , चाहे महावीर हों सभी अपने वैभव के साथ धन और ऐश्वर्य के साथ गुरु- चरणों में समर्पित हुए हैं अहसास कराने के लिए कि मुझे अब त्याग ही करना है, अब मुझे अपने पास कुछ रखना ही नहीं है। ये चांदी के टुकड़े आप रखिये मुझे तो आप वह दीजिए जो वास्तव में हीरे हैं, बहुमूल्य जीवन है, जो अपने आपमें श्रेष्ठता है। यही स्थिति गुरु को अहसास दिला सकती है कि वास्तव में लगन है इसके मन में, धोखा नहीं है, धूर्तता नहीं है, चालाकी नहीं है, मक्कारी नहीं है सही अर्थों में समर्पण है, सही अर्थो में भव्यता के साथ अपने को समर्पित कर देने की क्रिया है और जब ऐसा होगा तब गुरु अपने सीने से लगा लेगा। अहसास कर लेगा कि यह व्यक्ति वास्तव में हीरक खंड है इसके मन में कोई लाग -लपेट नहीं है न पत्नी के प्रति , न पुत्रों के प्रति, न समाज के प्रति न धन -सम्पत्ति के प्रति। ठोकर मार कर खड़ा हो गया है, उस जगह जाने के लिए जहां जाने के लिए योगी - यति भी तरसते हैं, उस जगह जाने के लिए जहां अमृत का झरना निरंतर प्रवाहित रहता है, उस जगह जाने के लिए जिसको सिद्धाश्रम कहा गया है, उस जगह जहां मृत्यु होती ही नहीं अमरत्व प्राप्त हो जाता है।

यह याद रखो कि मैं पृथ्वी लोक पर कुछ विशेष उद्देश्य को लेकर आया हूं . . . अन्य ग्रहों के शिष्यों के बीच भी मेरी उपस्थिति अनिवार्य है... ध्यान रखो कि तुम्हारा यह जीवन बरबाद न हो जाए . .

यह अवसर कब आएगा -

मैं पूछ रहा हूं कि निर्णय लेने के लिए कब तक सोचते रहोगे ? कब तक किनारे पर बैठे हुए कंकर,पत्थरों से अपनी झोलियां भरते रहोगे? कितना समय बिता दोगे? आठ - दस जन्म तो बिता चुके हो, दो - चार साल नहीं। जानते हो आठ- दस जन्म किसे कहते हैं? पन्द्रह - बीस वर्ष जो तुमने बिता दिए किसे कहते हैं? ऐसे तो सोचते - सोचते तुम्हारा तो पूरा जीवन बीत जायेगा और गुरु तुम्हारे हाथ से छूट जायेगा। तुम्हारे हाथ में रह जायेगा केवल समाज का जहर, समाज की पीड़ाएं, तनाव, दुख, चिन्ताएं, कष्ट और आत्म - ग्लानि। इनके अलावा तुम्हारे पास कुछ रहेगा ही नहीं। गुरु तुम्हारे पास नहीं रह पायेगा, गुरु तो आगे निकल गया होगा और हाथ मलने, पश्चाताप करने के अलावा तुम्हारे पास कुछ रहेगा ही नहीं। हो सकता है अगला जीवन लो और गुरु तुम्हें नहीं मिलें, इसीलिए जो कुछ करना है इसी जीवन में करना है, जो कुछ निर्णय करना है अभी करना है और आज ही करना है। आज ही अपने आप को समर्पित कर देना

(शेष पृष्ठ ६२ पर)

विश्व का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्मी से संबंधित स्तोत्र

इन्द्राक्षी स्तोत्र

यह भगवती का श्रेष्ठ स्तोत्र है और यदि साधक अपने सामने **''इन्द्राक्षी यंत्र''** रखकर नित्य इस स्तोत्र का एक पाठ कर ले तो निश्चय ही वह सभी दृष्टियों से सम्पन्न होकर पूर्णता प्राप्त कर लेता है। यह स्तोत्र देवताओं को भी दुर्लभ है । **मेरे अनुभव में यह आया है कि धन- धान्य , पुत्र - पौत्र , बन्धु - बान्धव, सुख - सौभाग्य , पूर्णता , वाहन सभी की प्राप्ति के लिए और पूर्ण रूप से दरिद्रता निवारण के लिए इससे श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं है।**

किसी पूर्णमासी के दिन इन्द्राक्षी यंत्र स्थापन करें। बाजोट पर पीला कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर गुलाब के पुष्प रखकर **इन्द्राक्षी यंत्र** को स्थापित करें, फिर इस स्तोत्र का पाठ करें। नित्य एक बार या पांच बार पाठ करने से कुछ ही दिनों में जीवन में अनुकूलता आने लगती है, और सभी दृष्टियों से सम्पन्नता प्राप्त होती है।

विनियोग -

ॐ अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र महामंत्रस्य श्री शचि पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री इन्द्राक्षी देवता महालक्ष्मी बीजं भुवनेश्वरी शक्तिः लक्ष्मी कीलकं मम श्री इंद्राक्षी प्रसाद सिद्धयर्थे मम मनोकामना सिद्धये विनियोगः।

फिर इंद्राक्षी ध्यान करें --

नेत्राणां दशभिः शतै परिवृताम्, अत्युग्र मर्यावराम
हेमांभा वहति बिलम्वित् शिखै मामन्त केशांविलां।।
घण्टा मण्डित पाद पद्म युगलां नागेन्द्र कुम्भस्तनी।
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसः कल्पोत सिद्धि प्रदाम।।
इन्द्राक्षी द्विभुजां देवि, पीत वस्त्र द्वयांविता,
वाम हस्ते कमलधराम् दक्षिणेनवरप्रदाम्।
इन्द्रार्दिभी सुरेर्वन्दयाम् वन्दे शंकरवल्लभाम्
एवम् ध्यात्वां महादेवि पठामि सर्व सिद्धये ।

स्तोत्र :

ॐ ऐं श्रीं श्रीं हुं हुं इन्द्राक्षी मामू रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय, जलरोधम शोषय शोषय दुःख व्याधिं स्फोटय स्फोटय , दुष्टादि भंजय भंजय मनोग्रन्थिम् प्राण ग्रन्थिम रोग ग्रन्थिम् घातय घातय इन्द्राक्षी

मामूरक्षय रक्षय हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवती प्राणेश्वरी प्रत्यक्ष सिंह वाहिनी महिषासुर मर्दिनी, उष्ण ज्वर पित्त ज्वर वात ज्वर श्लेष ज्वर, कफ ज्वर आजाल ज्वर, सन्निपात ज्वर माहेन्द्र ज्वर सत्योदि ज्वर एकांनविक ज्वर, द्वयाम विक ज्वर संवत स्वर ज्वर सर्वांग ज्वर नाशय नाशय, हर हर हन हन दह दह पच पच तालय तालय आकर्षय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तंभय मोहय मोहय उच्चाटय उच्चाटय हुं फट्।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरी महाचिन्तामणि सकल सिद्धेश्वरी सकल जन मनोहारिणी काल रात्रि अनले अजिते अभये महाघोर प्रतीतय विश्वरूपिणी मधुसूदनी महा विष्णु स्वरूपिणी, नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल वक्षशूल पाण्डुरोगादि नाशय नाशय, वैष्णवी ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्र शूलेण यमदण्डेन वरुण वज्रेण वाशववज्रेण सर्वानुअरिम् भंजय भंजय, यक्ष ग्रह राक्षस ग्रह स्कन्द ग्रह विनायक ग्रह बाल ग्रह चौर्य ग्रह कुष्माण्ड ग्रहादीन निग्रह्य निग्रह्य राज्य क्षमा क्षयरोग ताप ज्वर निवारिणि मम सर्व शत्रून् नाशय नाशय, सर्व ग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट्।
महालक्ष्मीम् महादेविम् सर्व रोग निवारिणि। सर्वपाप हरो देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

ऐसा कहकर हाथ जोड़ें और भगवती महालक्ष्मी की आरती करें। इस प्रकार से यह इन्द्राक्षी स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और नित्य इसका पाठ करना सौभाग्यदायक माना गया है ।

पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग :

यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग है और जिसने भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया है, उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त होती है। इसमें **सम्पूर्ण लक्ष्मी यंत्र** की आवश्यकता होती है। जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो और फिर उसे गुरुवार के दिन पीतल की तश्तरी में स्थापित करें और पूर्व की ओर मुख करके बैठें तथा हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि "मैं पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति के लिये यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं" हाथ में लाल या पीला पुष्प , अक्षत लेकर उस यंत्र पर चढ़ायें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें ---
मुक्ता व्रिद्रुम हेम नीर धवल , श्रीयैर्मुखेस्तोषणी, युक्तां इन्दु निबद्ध रत्न मुकुटां, तत्वार्थ वर्णात्मिकाम्। लक्ष्मी मम वरदाभ्याम्, कुश कदाम् शुभ्रं कपालं गुणम्, शंख चक्रमधार विन्द युगले हसतेवहन्ति भजे।
इसके बाद उस यंत्र की संक्षेप पूजा करें और फिर हाथ में जल लेकर उच्चारण करें --

ॐ दुर्गत्व मम समस्त ऋण विमोचनं दुख दारिद्र कष्ट पीड़ा निवारणार्थ मूल मंत्र जपे विनियोग,

ऐसा कहकर के हाथ में लिया जल छोड़ दें, फिर निम्न मंत्र बोलें

" ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै दुख विमोचनी दारिद्र हरत्र्यै सर्व कष्ट निवारिणी सर्व सुख प्रदान्यै सर्व सौभाग्य दायत्वै देहि देहि लक्ष्मीं मम गृह आगच्छ आगच्छ मम सर्व कार्य सिद्धयर्थ सुख सौभाग्य धन - धान्य यश प्रतिष्ठा ऐश्वर्य प्राप्तिं महालक्ष्मीं नमः "

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न करें।

सिद्धाश्रम की "दिव्य आत्माएं" *"सिद्धाश्रम साधक परिवार"* के शिष्यों को संदेश भेजती हैं

सिद्धाश्रम ऐसा महान आश्रम है जो आध्यात्मिक पुनीत स्थली है, प्रत्येक साधक वहां पहुंचने का सपना अपने मन में संजोये रहता है, क्योंकि सिद्धाश्रम दिव्यता व पूर्णता का परम स्थल है और जब साधक अपनी साधनाओं में **अमृत सिद्धि** प्राप्त कर सशरीर अथवा देह त्याग के पश्चात् वहां पहुंच जाता है, तो वह स्वयं दिव्य होकर अपनी आने वाली पीढ़ियों का हर प्रकार से भला कर सकता है, **लेकिन क्या हर कोई सिद्धाश्रम जा सकता है?**

मानसरोवर और कैलाश पर्वत से उत्तर दिशा की ओर स्थित लम्बा-चौड़ा अद्वितीय, प्रकृति के गोद में स्थित दिव्य आश्रम जिसकी ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं विश्वकर्मा ने अपने हाथों से रचना की, श्री विष्णु ने इसकी भूमि, प्रकृति और वायुमण्डल को सजीव सप्राण , सचेतना युक्त बनाया और भगवान शंकर की कृपा से यह अजर - अमर है। यहां रहने वाले किसी भी योगी, सन्यासी को दुर्बलता, वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती, यह तो अमृत का दिव्य - धाम है।

सिद्धाश्रम की सिद्धयोगा झील, सिद्धाश्रम के सिद्धयोगी, ऊंचे - ऊंचे वृक्ष , सुगंधित पुष्प लताएं , छोटे - छोटे मनोहर आश्रम, सात्विक वातावरण की एक झलक ही है, इसका पूर्ण विवरण तो हजारों पृष्ठों में भी नहीं लिखा जा सकता।

सिद्धाश्रम के अपने नियम हैं, **यहां प्रवेश पाने का वही अधिकारी है, जिसने स्वयं 'दिव्य दीक्षा' प्राप्त कर दिव्य कोटि की साधना सम्पन्न की हो,**

क्या आप 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' जैसी दिव्य संस्था से जुड़े हैं?
क्या आप 'पूज्यपाद गुरुदेव' द्वारा 'चैतन्य दीक्षा' प्राप्त शिष्य हैं?
तो फिर आपको प्रतिक्षण प्राप्त होती ही रहती है
ऐसी दिव्य आत्माओं से सुरक्षा और निर्देश . . .
उन्हीं दिव्य आत्माओं के सूक्ष्म संकेतों
को समझने की अलौकिक
साधना . . .

उसे ऐसे गुरु से साधना प्राप्त हुई हो **जो स्वयं सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सका हो, जिन्हें योग - माया, मंत्र-तंत्र का सम्पूर्ण ज्ञान हो,** क्योंकि सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने के पश्चात् उसमें अपने आप में ऐसी क्षमता आ जाती है कि वह सशरीर जहां भी जाना चाहे जा सकता है, संसार में कहीं भी विचरण कर सकता है, सशरीर वापिस गृहस्थ में आ सकता है और जब चाहे सदेह या सूक्ष्म शरीर से इस आश्रम में आ जा सकता है।

सिद्धाश्रम की दिव्य आत्माएं -

सिद्धाश्रम में तन्मयता है, आनन्द है, सिद्धाश्रम में भावना ही लोक - कल्याण की भावना है, सिद्धाश्रम में योगी अपने बारे में नहीं सोचते, उनका केवल एक ही चिन्तन है कि किस प्रकार जन - जन में साधना - तत्व जागृत किया जाय, किस प्रकार उनकी पीड़ाओं को दूर किया जाय, किस प्रकार साधकों के जीवन में आनन्द का उद्वेग उत्पन्न किया जाय, किस प्रकार मंत्रमय, तंत्रमय वातावरण की रचना की जाय, किस प्रकार मन की ही नहीं साधकों के तन की बाधाएं भी दूर की जाएं, जिससे साधक सदैव स्वस्थ और निरोगी रह कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें, श्रेष्ठ साधक का लक्ष्य सिद्धाश्रम में प्रवेश पाना तो है ही, लेकिन उसके पहले वह अपने इस लौकिक जगत की मूल - भूत सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर लेना चाहता है, जिससे वह स्वयं कामनाओं से रहित होकर आगे बढ़ सके।

अधूरी इच्छाएं अतृप्त आत्माओं को जन्म देती हैं, ये आत्माएं भटकती रहती हैं, क्योंकि इनके जीवन में कुछ ऐसी कमियां रह जाती हैं, जो उन्हें हर समय कचोटती रहती हैं, उनकी सन्तानों को दुख और पीड़ा रहती है, ऐसी अतृप्त आत्माएं सिद्धाश्रम में प्रवेश योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं की।

क्या आप साधक है?

साधक जंगल में धूनी जमाने वाला व्यक्ति नहीं है, साधक हिमालय पर्वत के बीच, घर से भाग कर तपस्या करने वाला व्यक्ति भी नहीं है, श्मशान की राख रगड़ने वाला व्यक्ति भी साधक नहीं है, सच्चा साधक तो अपने जीवन में अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए, गुरु कृपा से युक्त, गुरु से दीक्षा प्राप्त कर साधना करने वाला व्यक्ति है, जिसका लक्ष्य है गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर आगे बढ़ते हुए कुण्डलिनी जागरण करना, मूलाधार से प्रारम्भ कर, समस्त चक्रों का भेदन कर, सहस्रार दर्शन करना, ऐसे साधक को केवल गुरु आशीर्वाद ही नहीं, सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि गुरु कृपा ही तो सिद्धाश्रम का द्वार है।

> **ब्रह्माण्ड का तेज पुंज . . . जहां आज भी वेदव्यास, विश्वामित्र, श्रीकृष्ण, विशुद्धानन्द, शंकराचार्य जैसे युग - पुरुष सामाथिरत देखे जा सकते हैं . . .**

सिद्धाश्रम की दिव्य आत्माओं से संदेश -

साधक यदि अपने निर्मल हृदय से कोई साधना करता है, अपनी विकट घड़ी में आह्वान करता है, संकट के समय पुकारता है, किसी कार्य के लिए उसे विशेष आत्मबल की आवश्यकता होती है, आने वाले किसी बड़े खतरे का उसे ज्ञान नहीं होता है, तो क्या उसे संदेश प्राप्त हो सकता है?

जहां भावना ही कल्याण की है तो संदेश क्यों नहीं प्राप्त होगा, अवश्य प्राप्त होगा, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि साधक निरन्तर अपने साधना तत्व को प्रबल बनाये रखे, वह लोगों के बहकावे में आकर अपने मार्ग को न छोड़े और सबसे बड़ी बात उसे यह प्रबल विश्वास हर समय होना चाहिए कि मुझे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त है, जिससे मेरे संकट अपने - आप दूर होंगे, भावी खतरों के बारे में चाहे वह उसके कार्य से संबंधित हो, परिवार से संबंधित हो, बीमारी से संबंधित हो अथवा किसी दुर्घटना से, यदि वह अपने आपको ऐसी शक्ति के भरोसे छोड़ कर अपनी साधना, अपने कर्त्तव्य पूरे करता रहता है, तो उसे हर स्थिति में संदेश अवश्य प्राप्त होता है।

संदेश का माध्यम सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माओं के लिए सूक्ष्म रूप से विचरण करना, किसी भी प्रकार का स्वरूप ग्रहण करना संभव है, इसलिए यह संदेश साधक को सोते अथवा जागते, कार्य करते अथवा यात्रा करते दिन अथवा रात को कभी भी प्राप्त हो सकते हैं, इसके लिए माध्यम उसका स्वप्न भी हो सकता है, इसके लिए माध्यम कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता है, उसके सामने उसकी पूजा में साधना करते हुए भी संदेश अकस्मात प्राप्त हो सकता है ,

यह विभिन्न रूपों में प्राप्त हो सकता है, इसे प्राप्त कर समझने की आवश्यकता अवश्य है।

सिद्धाश्रम की आत्माओं का आह्वान -

साधक साधना के द्वारा आत्मा का आह्वान कर उससे प्रश्न कर अपनी समस्याओं के संबंध में पूछ सकता है, इस

आह्वान जिसे **" सिद्ध आत्म आह्वान "** कहा जाता है का प्रयोग पूर्ण विधि - विधान से सम्पन्न करना चाहिए, जब भी आप इन आत्माओं को बुलाएं, तो उन्हें सम्मान दें, नम्रता से शिष्ट भाषा का प्रयोग कर प्रश्न पूछें और तब ये सिद्ध आत्माएं आप द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पूर्ण प्रसन्नता के साथ देती है, लेकिन कभी भी प्रयोग के तौर पर, हंसी के रूप में अथवा दूसरों के सामने अपने चातुर्य को बताने के लिए अथवा परखने के उद्देश्य से अथवा गलत प्रश्नों को पूछने के लिए, किसी गलत कार्य की पूर्ति करने की इच्छा रखते हुए, सिद्ध आत्मा का आह्वान उचित नहीं है, इससे उस समय सिद्धाश्रम से आत्माएं आती तो अवश्य हैं लेकिन साधक को ऐसे श्राप मिल सकते हैं जिससे आगे का जीवन नरकमय हो सकता है, जब भी यह कार्य करें, पूर्ण सात्विक भाव से सम्पन्न करें।

सिद्धाश्रम आत्म - आह्वान कैसे करें ?

रविवार का दिन ब्रह्माण्ड के तेजस्वी देव 'सूर्य देव' का दिन है, और इस दिन सूर्योदय के पश्चात् यह प्रयोग करना सर्वथा उचित है। इस दिन साधक स्नान कर , स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठे, पूजा स्थान में बार - बार किसी प्रकार का व्यवधान पड़ने की आशंका हो तो एकान्त कमरे में प्रयोग सम्पन्न करें एवं दरवाजा भिड़ा कर थोड़ा सा खुला रखें।

अपने सामने **"बड़ा गुरु चित्र"** तथा **" सिद्धाश्रम संस्पर्शित गुरु यंत्र"** स्थापित करें, तांत्रोक्त विधि द्वारा इस विशिष्ट **"गुरु यंत्र "** का पूजन कर **सिद्धाश्रम चैतन्य रहस्य माला** द्वारा गुरु मंत्र का जप सम्पन्न करें इस प्रकार इस माला से पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें, कमरे में धूप और अगरबत्ती अवश्य ही जलती रहे।

अब साधक कांसे की कटोरी में **" आत्म यंत्र"** स्थापित करें तथा उस पर केवल चंदन तथा केसर चढ़ाएं क्योंकि सिद्धाश्रम की विशिष्ट आत्माओं का पूजन सात्विक रूप से चंदन और केसर द्वारा ही किया जाता है, अब अपने सामने एक कागज पर पहले से लिख कर रखे हुए **सिद्धात्मा बीज मंत्र** का जप प्रारम्भ करें।

सिद्धात्मा बीज मंत्र -

ह्रीं सिद्धात्मा भं सं मं पं सं क्षं दृष्ट्वा इति ।।

अब इस मंत्र को **"सिद्धाश्रम चैतन्य रहस्य माला"** द्वारा ही उत्तर दिशा की ओर मुंह कर जोर - जोर से जप करना प्रारम्भ करें, एक माला मंत्र जप होते ही पुनः पांच बार गुरु मन्त्र का जप करें और दूसरी माला बीज मंत्र का जप करें।

> **संभव ही नहीं कि आप पूर्ण सम्मान और गंभीरता से इन आत्माओं का आह्वान करें और वे आपके जीवन की समस्याएं सुलझा न जाएं . . .**

साधक को तीन माला जप करते - करते एक रहस्यमय वातावरण का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि कोई आपके ऊपर आशीर्वाद मुद्रा में हाथ किए खड़े हैं , शरीर के रोम - रोम खड़े हो जाते हैं **, इस स्थिति में साधक माला को रख कर, दोनों हाथ जोड़ कर गुरु मंत्र बोले और किसी प्रश्न विशेष को जिसका उत्तर वह जानना चाहता है पूछे**, यह प्रश्न किसी भी प्रकार का हो सकता है, आत्मा से प्रश्न पूछते समय संकोच नहीं करना चाहिए।

उसी समय जैसे कि कोई बिजली कौंधी हो, साधक को कटोरी हिलती हुई प्रतीत होती है और उसे उस प्रश्न विशेष का उत्तर प्राप्त होता है, अपने कार्यों के संबंध में संदेश प्राप्त होता है, इस संदेश को पूर्ण रूप से समझ कर उसकी व्याख्या करनी चाहिए और जब वह कान्तिमान स्थिति शान्त हो, तो साधक को गुरु आरती सम्पन्न करनी चाहिए।

इस प्रकार एक बार पूर्ण विधि-विधान सहित प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् *साधक कभी भी किसी भी कार्य के संबंध में निर्देश प्राप्त करने हेतु सिद्धात्मा बीज मंत्र का २१ बार जप करने से स्पष्ट दिशा - निर्देश प्राप्त होता है।*

सिद्धात्मा प्रवेश यदि आपके घर में हो जाता है तो आप यह निश्चित जानिए कि हर कार्य के संबंध में आपको दिशा - निर्देश प्राप्त होंगे, यदि कोई आपको धोखा देने का प्रयास करेगा तो सिद्धात्मा से संदेश प्राप्त होगा कि अमुक व्यक्ति के कार्य न करें, यदि कोई दुर्घटना होने वाली है, तो तत्काल संदेश प्राप्त होगा कि अमुक यात्रा न करें, अथवा अमुक स्थान पर न जाएं।

इन संदेशों को समझते हुए इनके अनुसार कार्य करने की पूर्ण आवश्यकता है तथा आगे निरन्तर संदेश प्राप्त होते रहते हैं, साथ ही अपनी साधना निरन्तर करते रहें, साधना के पथ से विचलित हुए साधक के लिए कोई भी मार्ग खुला नहीं रहता है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में कई शिष्य, जो कि साधना में एक विशेष स्तर प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें इस प्रकार की दिव्य आत्माओं के संदेश अपने जीवन में निरंतर प्राप्त होते रहते हैं। ◎

इस कलियुग में भी संभव है भगवती जगदम्बा का प्रत्यक्ष दर्शन

यदि कोई सामान्य साधक या साधना के क्षेत्र में नया कदम रखने वाला व्यक्ति शास्त्रों का अध्ययन करके मां भगवती जगदम्बा के विषय में कुछ धारणा बनाना चाहे तो वह भ्रमित हो जायेगा, जब वह देवी के सैकड़ों स्वरूपों का वर्णन पढ़ेगा और उसे समझ पाना कठिन होगा कि वह देवी के किस स्वरूप के दर्शन की कामना मन में रखे, उनका कौन सा स्वरूप फलदायी होगा और फलदायी होना तो आगे की स्थिति है, प्राथमिक प्रश्न तो यह आ जाता है कि देवी का प्रामाणिक स्वरूप क्या है? क्योंकि प्रत्येक स्वरूप का वर्णन करते समय उन्हें ही सबसे प्रामाणिक और सर्वाधिक फलदायक घोषित किया गया है। जहां उनके उग्र स्वरूप का वर्णन किया गया, तो फिर उग्र स्वरूप को ही इतनी प्रमुखता दे दी गई, कि वही स्वरूप सर्वश्रेष्ठ भाषित होने लगता है, और वही स्वरूप मन मस्तिष्क में बस जाता है, जब मातु- मातु कहकर उपासना की गई तो भावुकता और अतिरंजना की ऐसी प्रबलता कर दी गई, फिर वही प्रश्न घूमकर सामने आ जाता है कि वास्तविकता क्या है? जगदम्बा का स्वरूप क्या है? उनका प्रामाणिक दर्शन क्या है? और इन सभी प्रश्नों का एक मात्र उत्तर है - **साधना**। साधना ही एक ऐसा मार्ग है जो व्यक्ति के अन्तर्मन को सन्तुष्ट कर सकता है। केवल साधना के द्वारा ही व्यक्ति के मानस को बुद्धि के स्तर पर भी उत्तर मिल सकते हैं। यह बात अटपटी लग सकती है, क्योंकि जहां भक्ति, श्रद्धा और समर्पण की बात कही जा रही हो, वहां बुद्धि की बात कहना असम्बद्ध लगता है, लेकिन वास्तविकता यही है कि जब तक व्यक्ति को बुद्धि के स्तर पर अपने भावनात्मक प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल जाते, तब तक वह सन्तुष्ट नहीं होता। इसी को ज्ञान योग कहा गया है और भगवान श्री कृष्ण ने गीता में, ज्ञानी भक्त को ही, अपनी आत्मा कहा है।
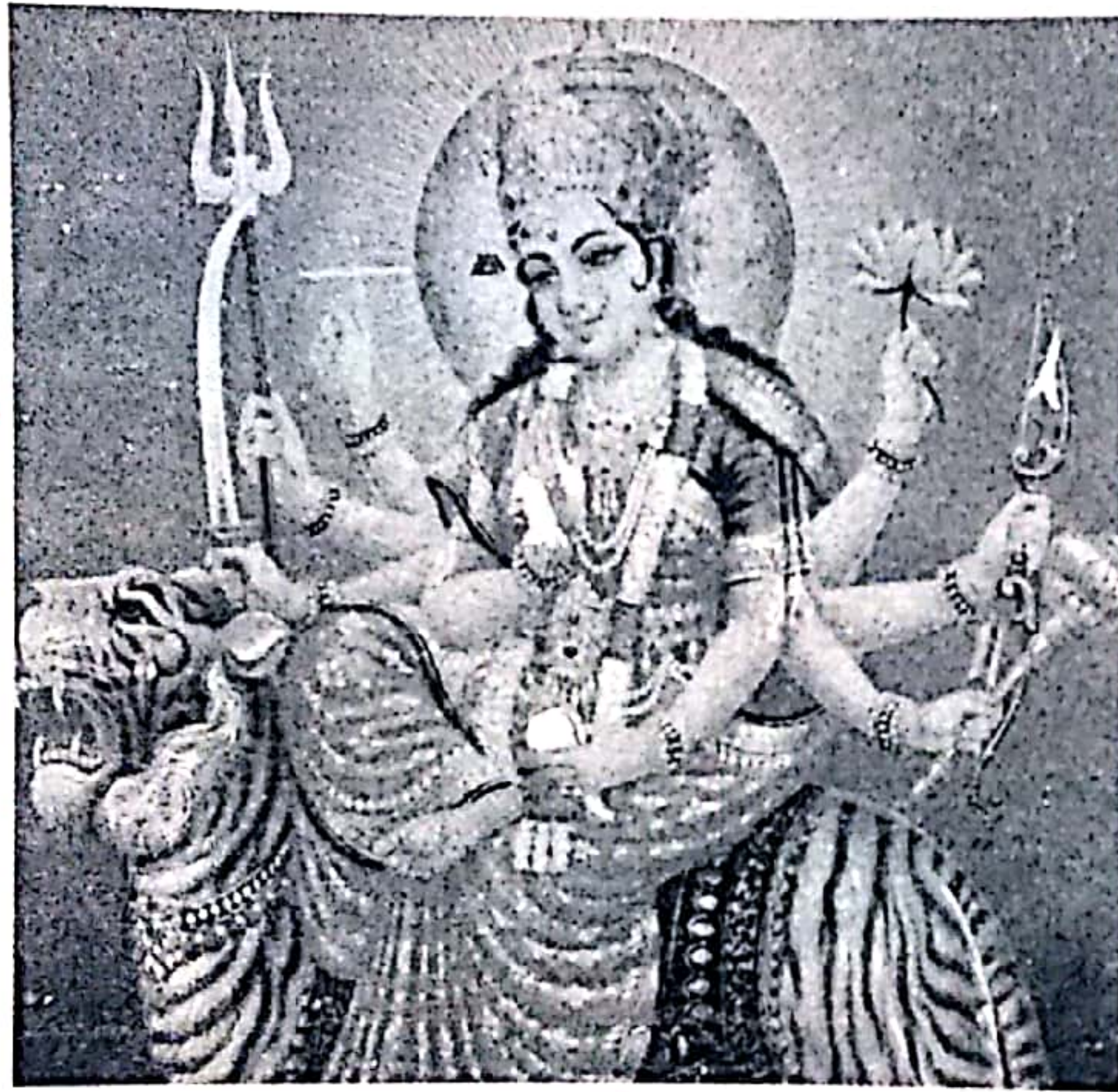
‘ जब भक्ति, श्रद्धा, भावना, विश्वास का समन्वय प्रकट होता है, निर्मल भाव से मां भगवती के श्री चरणों में, तभी प्रत्यक्ष आशीर्वाद मिलता है मां का अपने भक्त को . . . ’

‘भक्ति’ जहां केवल भावना के स्तर पर किसी साधनात्मक प्रश्न का उत्तर सुझाती है, वहीं ‘साधना’ बुद्धि के स्तर पर जाकर सम्पूर्ण हल बताती है इसी से साधना का मार्ग लम्बा व कष्टकर होते हुए भी प्रामाणिक है, क्योंकि इससे जो कुछ

उपलब्धि होती है, वह ठोस होती है, और साधक के पास एक दृढ़ आधार होता है। भावनायें तो एक रपटीली सतह है, जिन पर साधक का पांव फिसल सकता है, लेकिन चेतना के द्वारा ऐसा नहीं होता और व्यक्ति पुनः - पुनः उहापोह और शंका के वातावरण में घिर - घिर नहीं जाता। बार - बार उसके ऊपर अविश्वास और अश्रद्धा के काले बादल आकर नहीं छा जाते, क्योंकि साधना के द्वारा व्यक्ति को अपनी समस्त समस्याओं का हल यथार्थतः मिल जाता है और वहीं उसके मानस में उस देवी या देवता का स्पष्ट बिम्ब भी बन जाता है, जिसकी वह साधना कर रहा हो।

किसी देवी अथवा देवता का सर्वाधिक प्रामाणिक दर्शन वही होता है जो व्यक्ति के मानस में स्पष्ट होता है। भ्रम हमसे यह हो जाता है कि हम कैलेन्डर में बने स्वरूप को ही प्रामाणिक दर्शन मान बैठते हैं और अपेक्षा रखते हैं कि वह देवी या देवता उसी स्वरूप में प्रकट होगा, बाद में कल्पना के अनुसरण किये जाते रहे। क्या प्रमाण है कि हम जिस स्वरूप में मां भगवती जगदम्बा के दर्शन की अपेक्षा करते हैं वे उसी स्वरूप में हों? कोई भी तो प्रमाण नहीं है, लेकिन चित्रों के माध्यम से बनी धारणा हमें ऐसा ही चिन्तन रखने को बाध्य कर देती है।

साधना द्वारा किसी विभ्रमित दशा का निराकरण होता है, जबकि हमारे मानस में उनका स्पष्ट और प्रामाणिक बिम्ब बनने लगता है। देवी या देवता तो मंत्र स्वरूप होते हैं और इन चर्म चक्षुओं से उनके स्वरूप को निहार पाना संभव नहीं होता, मंत्रों के निरन्तर उच्चारण से उनका एक सघनित रूप केवल व्यक्ति के मानस में छवि बनकर स्पष्ट होता है और साधक जिस जाज्वल्यमान दर्शन की अपेक्षा रखता है, वह तो बहुत आगे की स्थिति होती है, ठीक यही बात मां भगवती जगदम्बा के साथ भी है।

सम्पूर्ण विश्व ही नहीं, सम्पूर्ण चराचर की नियंता, उस पराशक्ति का दर्शन इन साधारण चक्षुओं और इस मलिन देह से सम्भव हो भी कैसे? साधना केवल किसी देवी या देवता को बाध्य कर देने की प्रक्रिया नहीं होती, साधना अपने आप में, अपनी इसी स्थूल देह और रक्त मज्जा जैसे घृणित पदार्थों के परे, सूक्ष्म देह घटित कर देने की क्रिया होती है, क्योंकि शास्त्रों में स्पष्ट विधान है कि देवता की छवि का दर्शन या

देवी - देवता तो मंत्र स्वरूप होते हैं और वास्तविक शरीर बनती है केवल मंत्रों के सघन उच्चारण से. . .

देवता की आराधना उसके सातुल्य बन कर ही की जा सकती है, और निरंतर साधना व चिन्तन के द्वारा व्यक्ति स्वयं को देवतुल्य बनाने के प्रयास में गतिशील रहता है, भले ही वह अहंमन्यता वश यह मान बैठे कि मैं अमुक देवी या देवता को साध रहा हूं।

मां! भगवती जगदम्बा के साक्षात दर्शन इस कलियुग में संभव हैं ही, यह अवश्य हुआ है कि युग की प्रवृत्तियों के अनुसार वातावरण में दूषित प्रवाह पहले की अपेक्षा बढ़ गया है, और जहां साधक को एक ओर अपने - आप का निर्माण करना पड़ता है वहीं उसे वातावरण में व्याप्त कलुष से भी लड़ना पड़ता है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इस युग में देवी या देवता के दर्शन असंभव हो गये हैं।

जो भी साधक धैर्यपूर्वक और अविचलित क्रम से कुछ माह या वर्ष, साधना में तल्लीन रहा हो, उसने मां भगवती जगदम्बा के दर्शन प्राप्त किये ही हैं। मां भगवती जगदम्बा के दर्शन करने के तो कई उपाय हैं, साधक साधना के द्वारा भी उनके दर्शन प्राप्त कर सकता है, शिशुवत बनकर भी, दोनों ही स्थितियां श्रेष्ठ हैं। व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों के बल से, अपनी सहजता और निर्मलता से उनके मातृ स्वरूप के दर्शन प्राप्त कर सकता है और साधक बन कर उनके जाज्वल्यमान विराट स्वरूप के दर्शन भी प्राप्त कर सकता है, सच तो यह है कि मां भगवती जगदम्बा का दर्शन व्यक्ति को प्रतिक्षण प्राप्त है ही, केवल उसे जाग्रत होकर निहारने की आवश्यकता है।

यह निहारने की प्रक्रिया व्यक्ति की आंखों के सामने आ गये कुछ एक आवरणों को हटा देने से सम्भव हो जाती है, तब साधक पाता है कि मां भगवती जगदम्बा के हाथ में न खड्ग है, न भाला, न शूल, न पाश, न अंकुश, वस्तुतः वे तो दो हाथों के साथ ही प्रगट होती हैं, किंतु उनकी विराटता परिलक्षित होती है-- उनके अन्दर छिपी विराट करुणा से, और उनके ऐसे असीम क्षमा - भाव और मातृत्व से जो कि केवल एक मां ही नहीं साक्षात जगदम्बा ही धारण कर सकती हैं, ऐसी मां जिसके सभी पुत्र हैं, एक शिशु जो जन्म लेता है और जिसे कोई भी आभास नहीं होता, लेकिन वह एक चेहरा अपने आसपास हर क्षण पाता है, जो उसकी देखभाल करता है, उसका पोषण करता है और धीरे - धीरे वह शिशु उसी चेहरे से सहज आत्मीय हो जाता है, वह उसके चेहरे को देखकर तेजी से दौड़ पड़ता है। उसे इस बात का भय नहीं होता है कि अभी तो उसने चलना भी नहीं सीखा क्योंकि यह वह जान चुका होता है कि मैं गिर भी गया तो यह मुझे उठा लेगी, जो उसकी मां है।

साधक का संसार भी बस इतना ही होता है, वह स्तुतियां गाता है या नहीं

गाता, वह जगदम्बे- जगदम्बे रटना जानता है या नहीं, यह सब कोई महत्व नहीं रखता, महत्व तो यह रखता है कि क्या उसके मन में मां की कोई छवि है जिससे वह अपना तादात्म्य स्थापित कर सका है, क्या सचमुच वह जिसको पुकार रहा है उसको वह मां कहकर पुकार रहा है, यह तथ्य अधिक महत्व रखते हैं, और बचपन की यह सारी दशा जो तीस - पैंतीस वर्ष का हो जाने पर विभिन्न कलुषों से ढक जाती है, उसे फिर से सहज निर्मल करने का एकमात्र उपाय होता है **"साधना"।**

साधना जो कि अपने निर्मल शुद्ध शिशुत्व और देवत्व को पुनः जाग्रत करने की क्रिया है, और **ऐसा होते ही व्यक्ति के मन में सहज ही वह बिम्ब , वह छवि स्पष्ट होने लगती है, जो मां भगवती जगदम्बा की यथार्थ छवि है और साधक यह देखकर अभिभूत हो जाता है कि वे शास्त्रों में वर्णित किसी भी स्वरूप की अपेक्षा सहज ममतामयी हैं,** जिनके ममत्व और जिनकी करुणा से ममता और करुणा परिभाषित की जा सकती है, जो स्नेह और दया की आधार हैं और जो उसके जीवन में प्रतिक्षण उसके साथ थीं ही, जो उससे कभी भी विलग हुई ही नहीं थी, केवल साधकों ने ही उनको विस्मृत कर दिया था। युग ,काल, समय इसमें कहीं भी कोई बाधा नहीं बनते। निश्चित रूप से इस कलियुग में भी मां भगवती जगदम्बा का पूर्ण प्रामाणिक और प्रत्यक्ष दर्शन सुलभ है, केवल दर्शन मात्र ही नहीं उनका स्नेह और उनकी ममता भी। ♦

दुर्गा सिद्ध सम्पुट मंत्र

दुर्गा सप्तशती तांत्रिक, मांत्रिक ग्रंथों में अत्यंत श्रेष्ठ प्रभाव पूर्ण पाठ है। जो साधक जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि - विधान के साथ सप्तशती का पाठ करता है, उसे उसी भावनानुसार निश्चय ही फल प्राप्ति होती है क्योंकि दुर्गा सप्तशती अर्थ,धर्म, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है। इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव अनगिनत साधकों को प्राप्त हो चुका है।

यदि नवरात्रि में इन मंत्रों की साधना सम्पन्न की जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। यहां कुछ चुने हुए मंत्रों का उल्लेख किया जा रहा है जो विविध कामनाओं से युक्त हैं। इनका प्रयोग दो प्रकार से करते हैं । प्रथम दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के साथ सम्पुट लगा कर तथा द्वितीय सीधे ही सम्बन्धित मंत्र की पांच मालाएं मंत्र जप करके --

१. विपत्ति नाश के लिए :-

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

२. बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि प्राप्ति के लिए :

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।

३. भय नाश के लिये :

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोऽस्तु ते ।।

४. सर्वविध अभ्युदय के लिए :

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।

५. स्वप्न में सिद्धि - असिद्धि जानने के लिए :

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय:। ♦

मंत्र साधना में सफलता के उपाय

साधनात्मक शिविर हमारे सिद्धाश्रम साधक परिवार की परंपरा का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इन्हीं शिविरों की आठ वर्ष पुरानी श्रृंखला का सर्वेक्षण हमारी पत्रिका टीम ने किया और लगभग तीन हजार साधकों से निकट सम्पर्क स्थापित करने के पश्चात उन कमियों को ढूंढ निकाला जो साधकों की असफलता का कारण बनी।

स्पष्ट है कि यदि आप इन न्यूनताओं को दूर कर साधना में प्रविष्ट हों तो निश्चय ही सफलता आपके कदम चूमेगी। साथ ही साथ हमारी टीम ने सफल साधकों से भी साक्षात्कार किया, उनकी साधना पद्धति देखी, उनकी उपलब्धियों को अनुभव किया, और अपने अध्ययन के परिणामों को सार रूप में प्रस्तुत करते हुए निम्न लिखित आठ सूत्रों का प्रतिपादन किया,जो प्रत्येक साधक की सफलता के मूलभूत बिन्दु हैं --

आजकल इस अत्यधिक व्यस्तता के युग में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम समय में ही सफलता प्राप्त करने का इच्छुक है। हर व्यक्ति चाहता है कि प्रथम प्रयास में ही उसकी साधना सफल हो जाए और इसके लिए वह उन्हीं साधनाओं को अपनाता भी है जो कलियुग में भी शीघ्र सिद्धिप्रद हैं।

पर क्या कारण है कि साधक बारम्बार प्रयत्न करने पर भी साधनाओं में सफलता नहीं प्राप्त कर पाता . . .

१. दृढ़ संकल्प शक्ति -

प्रारम्भ से ही साधकों को साधना के प्रति पूर्ण आस्था थी। उनके मन में किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट या विचलन नहीं था। दिल्ली के श्री अरुण श्रीवास्तव का कहना है -- ***'जब पत्रिका में साधना प्रकाशित हुई है तो अधूरी या गलत हो ही नहीं सकती।'*** अधिकांश साधकों ने स्वीकार किया कि हमारे पूर्वजों द्वारा वर्णित साधनाएं किसी भी दृष्टि से अपूर्ण हो ही नहीं सकती।

इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि जो प्रारम्भ से ही संशय ग्रस्त होते हैं या आधे मन से साधना प्रारम्भ करते हैं वे ही असफलता के शिकार होते हैं। जिनको पूरा आस्था और विश्वास होता है, उन्हें साधना में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

२. गुरु के प्रति पूर्ण आस्था -

गुरु ही समस्त साधनाओं और सिद्धियों के आधार हैं, परन्तु एक सशक्त और प्राणवान व्यक्तित्व ही सही अर्थों में गुरु हो सकता है और अपने गुरु में अगाध विश्वास सफलता का मूल है।

जो हानि - लाभ के आधार पर गुरु को तौलते हैं, जिनका गुरु के प्रति अन्तरंग सम्बन्ध नहीं होता, जो गुरु के साथ एकाकार नहीं हो पाते उनकी साधना में न्यूनता रह जाना स्वाभाविक है, पर जो किन्हीं भी परिस्थितियों में गुरु के प्रतिपूर्ण रूप से समर्पित होते हैं, उन्हें असफलता मिल ही नहीं सकती। एक सफल साधक ने बताया कि **मेरी कुण्डलिनी जागरण का आधार ही गुरु के प्रति अनन्यता रही है, उनसे अलग रहकर तो मैं जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता।**

टीम ने यह निष्कर्ष निकाला कि

जो शिष्य विपरित परिस्थितियों और आलोचना - प्रत्यालोचना के दौर में भी गुरु के प्रति अडिग आस्थावान रहे हैं, उन्हें साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

३. साधना उपकरण -

साधना उपकरण साधक और इष्ट के मध्य एक सेतु का कार्य करता है, और सिर्फ मंत्र सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठायुक्त उपकरण ही साधना में सफलता दे सकते हैं। सैकड़ों साधकों से मिलने के बाद टीम ने यह अनुभव किया, कि जिन लोगों ने महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्थान से सामग्री प्राप्त की वे ज्यादा सफल हुए, क्योंकि ऐसी सामग्री निर्दोष और खरी होती है, साथ ही इससे मन में निश्चिन्तता बनी रहती है।

४. साधना शिविर -

साधना तो एक क्रियात्मक पद्धति है, जिसे देखकर ही समझा जा सकता है। हमारी टीम ने इस बात को भी अनुभव किया कि सफल साधकों में ६१ प्रतिशत वे साधक थे, जिन्होंने साधना शिविरों में भाग लिया था, और साधना से संबंधित क्रिया-पद्धति पूर्ण रूप से सीखी थी। समय - समय पर पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में इन साधना शिविरों का आयोजन होता है, जिनमें भाग लेने से साधना में परिपक्वता आती है और मन का संशय मिट जाता है। साधकों की सफलता में इन शिविरों का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी कमियां दूर की और उन गोपनीय रहस्यों को प्राप्त किया जो सफलता के लिए अनिवार्य है।

५. नवीनतम ज्ञान से निकट परिचय -

साधनाओं में भी नित्य नवीन परीक्षण और प्रयोग होते रहते हैं, किसी भी साधना का अन्य साधनाओं से संबंध रहता ही है। इससे संबंधित पुस्तकों, लेखों और पत्रिकाओं से जो नवीनतम उपलब्धियां प्राप्त करता रहता है वह ज्यादा सफल हो पाता है।

साक्षात्कार के दौरान लगभग ६० प्रतिशत साधकों ने स्वीकार किया कि **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका ने उनकी सफलता में विशेष योगदान दिया जिसके अध्ययन से वे नवीनतम ज्ञान के सम्पर्क में रहे और साधनात्मक जगत में प्रवेश पा सके।

६. मान्यताओं का पालन -

जिन साधकों ने साधना की मान्यता पर आस्था बनाए रखी और असफलता प्राप्त होने पर भी विचलित नहीं हुए, वे दूसरे या तीसरे प्रयास में अवश्य ही सफल हुए। गुजरात के एक साधक का कहना है कि असफलताओं ने मुझमें दुगना जोश पैदा किया और दूसरी बार में मैं सफल हो गया। एक दूसरे सफल साधक ने कहा - कि जब मैंने निश्चय कर लिया है कि जब साधना सिद्ध करनी ही है, तो फिर मुझे कोई डिगा ही नहीं सका और मैं तीसरे प्रयास में सफल हुआ।

क्या यह आज के युग में भी सत्य है कि वर्षों में नहीं वरन कुछ ही दिनों में साधनाएं सिद्ध की जा सकें . . . निश्चय ही . . . तभी तो कहा गया है . . . 'सहज मिलै अविनासी ' . . .

टीम ने यह निष्कर्ष निकाला कि यद्यपि एक बार असफल होने पर चारों ओर से आलोचना की बौछार होने लगती है, पर जो अपनी मान्यताओं पर दृढ़ होते हैं, वे अवश्य ही सफल होते हैं।

७. स्वार्थ - परता से दूरी -

जिन साधकों ने अपने मित्रों व स्वजनों को पत्रिका परिवार से जोड़कर साधना के समर्थक बनाए, उनमें उतनी ही दृढ़ता पैदा हुई, उतने ही आलोचक कम हो गए और उन लोगों का समर्थन अनुकूल रुख और मधुर वातावरण ने भी साधना की सफलता में सहयोग प्रदान किया।

टीम ने इस तथ्य को अनुभव किया जो अलग - थलग बने रहे, उन्हें सफलता कम मिल सकी, इसके विपरीत जिन्होंने आगे बढ़कर पत्रिका परिवार में विस्तार कर अपने घर - परिवार में, आस - पास और समाज में साधनात्मक वातावरण की सृष्टि की, वे विशेष सफलता प्राप्त कर सके।

८. गुरु से लगातार सम्पर्क -

साधक के लिए अपने गुरु की निकटता और उनका बार - बार दर्शन भी बहुत महत्व रखता है। वे साधक अधिक सफल हुए हैं जो निःस्वार्थ भाव से समय - समय पर गुरुदेव से मिलते रहे हैं, यद्यपि इस मिलन में कई बार कोई व्यक्तिगत कार्य नहीं होता पर उनका कहना है कि मिलते रहने से उन्हें कुछ ऐसा प्राप्त होता रहा, जो अपने- आप मे अद्वितीय होता था। एक नवीन बल, शक्ति और स्फूर्ति उन्हें प्राप्त होती रही, जिसके वजह से साधना में सफलता मिलती गयी।

निष्कर्षतः इन साधकों से मिलने पर यह स्पष्ट हुआ कि साधना की सफलता से इनमें आत्मविश्वास जगा है। इन्होंने अपने - अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है, लोगों का दुख - दर्द दूर किया है और ऐसा करके समाज में गौरव - पूर्ण स्थान प्राप्त कर सकने में समर्थ हुए हैं।

आप भी यदि इन आठ उपायों पर अमल कर साधना में प्रविष्ट हों तो निश्चय ही पहली बार में ही आप पूर्ण सफलता प्राप्त कर, अपनी मनोवांछित कामना की पूर्ति कर सकते हैं।

जब पूज्य गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी

दीक्षा साधक के जीवन की महत्वपूर्ण घटना है। प्रारम्भिक अवस्था में साधक यह समझ ही नहीं पाता कि दीक्षा क्या है? 'दीक्षा' शिष्य को गुरु की ओर से मिला पावनतम प्रसाद है। दीक्षा का आशय है गुरु की कृपा एवं शिष्य की श्रद्धा का सम्मिलित स्वरूप । गुरु का आत्मदान है और शिष्य का आत्मसमर्पण। **गुरु के ज्ञान, शक्ति एवं तेज के द्वारा शिष्य का अज्ञान तथा पाप आदि का क्षय ही दीक्षा है। बिना गुरु की दीक्षा के शिष्य को आत्म लाभ या साधना में सफलता मिल ही नहीं सकती,** दीक्षा के द्वारा ही शिष्य के भीतर साधनात्मक चेतना जाग्रत होती है, जिसे हम कुण्डलिनी शक्ति कह सकते हैं, त्वरित उर्ध्वगमन करती है। दीक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा गुरु, शिष्य को अपने संरक्षण में लेकर, समस्त अन्य बाधाओं से शिष्य को सुरक्षित करके, साधना पथ पर अग्रसर करता है। *यह दीक्षा-क्रम एक ही जन्म की घटना नहीं है गत जन्मों से इसका गहरा संबंध होता है। इस संबंध को गुरु ही जान सकता है कि शिष्य ने पिछले जन्म में किस स्तर पर पहुंच कर शरीर छोड़ा था,* वर्तमान जीवन में कहां से इसे आगे बढ़ाना है, उसी क्रमानुसार गुरु उसे दीक्षा प्रदान करते हैं। साधक सांसारिक वातावरण में रहकर पूर्णरूप से संस्कारित एवं परिशुद्ध नहीं रह पाता, उसे शुद्ध करने के लिए उसके मन पर चढ़े हुए पापों के परत को हटाना पड़ता है। उसके उन दोषों को दूर करने के लिए 'गुरु' दीक्षा का ही सहारा लेते हैं। इस जन्म के काम, क्रोध, मोह, लोभ , भय आदि भी साधक के लिए विघ्न होते हैं। गुरु को इसके लिए भी प्रयास करना पड़ता है, कि शिष्य कहीं इनके घेरे में ना आ जाय जिस प्रकार वर्षों से बन्द पड़े हुए मकान को सफाई करने के लिए प्रथम बार काफी प्रयास करना पड़ता है, तदन्तर वह रहने लायक होता है। उसी प्रकार साधक का अशुद्ध चित्त उस रहस्य को ग्रहण नहीं कर सकता, उसके लिए 'गुरु' शिष्य को दीक्षा द्वारा ही पावन बनाता है।

मेरे जीवन का वह स्वर्णिम दिन था, जब पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे दीक्षा से

. . . मेरी चेतना खुली तो मैं उसी आसन पर स्थिर बैठा था। मेरे मन का सारा भ्रम, सन्देह, समस्याएं उसी क्षण जाती रहीं, जो जीवन का परम सुख और परमानंद है।

मैं आज प्रयत्न करके भी उस आनंद को अपनी लेखनी में बांध ही नहीं पा रहा हूं. . .

पावन किया। वह प्रभात मकर संक्रान्ति का इस जीवन का अवर्णनीय प्रभात था। उस दिन ज्यों ही गुरुदेव ने अपना जोधपुर का ऑफिस खोला मैं उठकर उनकी चरणों से लिपटा ही था, उसी समय मुझे आदेश हुआ कि तुम्हें दीक्षा दी जाएगी। मैं हर्ष से विह्वल हो गया, मेरे अन्तर्मन में बहुत दिनों से यही विचार बार - बार उठ रहे थे कि पूज्य गुरुदेव ऐसी दीक्षा मुझे दें, जिससे मैं साधना पथ में आगे बढ़ूं क्योंकि इन विशेष दीक्षाओं के बारे में मुझे सही ज्ञान नहीं था। इतना मैं जरूर जानता था कि दीक्षा के बाद साधक के अन्दर नई चेतना अवश्य आती है। उनके आज्ञानुसार मैं दीक्षा के लिए विशेष कमरे में ले जाया गया, वहां मुझे यज्ञोपवीत पहनाया गया, भस्म , तिलक आदि लगाया गया इसके बाद मैं पद्मासन पर शान्तचित्त बैठकर गुरु ध्यान करने लगा। गुरुदेव साक्षात् मेरे सामने थे, नेत्र बन्द करने पर भी उन्हीं की छवि बार - वार सामने आनेलगी, पद्मासन लगा था, आंखें अधखुली थीं, उन्होंने सर्वप्रथम भूत सिद्धि एवं गणेश स्तुति करने के बाद ज्यों हीअपना दाहिना हाथ मेरे आज्ञा चक्र पर लगाया, तो मानो **मेरा सारा शरीर किसी विद्युत तार से टकरा गया हो, दूसरे ही क्षण शरीर झनझना उठा और धीरे- धीरे मन कहीं डूब गया। सभी संकल्प - विकल्प समाप्त हो गया और हृदय में विशेष प्रकार का आनन्द उदय होने लगा।** मन में स्थित सारा अन्धकार समाप्त हो गया, कुछ क्षणों बाद हृदय के अन्दर एक अत्यन्त रमणीय तेजपुंज प्रकट हुआ। यद्यपि यह तेजपुंज अवर्णनीय था, अपार था। मेरा मन इस तेज पुंज के साथ निर्विषय हो कर लीन हो गया। एक क्षण के लिए इस लय के कारण बृहद् आकाश में, इस पूरे ब्रह्माण्ड को मैं देख रहा था। उसी में आकाश पृथ्वी , सूर्यलोक, चन्द्रलोक आदि घूमते हुए दिखायी दे रहे थे।

यह बोध करते ही कुछ जड़ समाधि जैसा अनुभव हुआ, परन्तु मेरा मन इस जड़ता और स्थिरता दोनों ही अवस्थाओं को पार करके एक ही क्षण में उस स्थिति से मुक्त हो गया। यह आनन्दमयता ही समाधि है। इसमें मेरा ध्यान भृकुटि में स्थिर हो गया और मन में अपार शान्ति का सागर लहराने लगा। एक ऐसा सागर जिसमें किसी प्रकार का भेद - प्रभेद नहीं था। केवल चैतन्य मात्र, आनन्द मात्र और आदि - अनादि भेद शून्य था , तथा वहां पर उस अनन्त लय में अपने- आप को लीन कर दिया। मेरा स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं रहा है। जब मेरी चेतना खुली तो मैं उसी आसन पर स्थिर बैठा था, मेरे मन का सारा भ्रम, सन्देह, सारी समस्याएं , सारा दुख समाप्त हो गया था, जो कि जीवन का परम सुख और परमानन्द है। भावातिरेक में आंखों से आंसू बहने लगे, यह मेरे जीवन का सौभाग्यशाली क्षण था तथा जीवन का सर्वोच्च अनुभव था। मैं उठकर पूज्य गुरुदेव के चरणों में साष्टांग लेट गया, मेरे पीठ और सिर पर उनका शीतल हाथ घूम रहा था और मैं आत्म विभोर था कि इस जीवन में ही उस परम सत्ता के दर्शन कर सका। मैं आज प्रयत्न करके भी उस आनन्द को अपनी लेखनी से व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं, वस्तुतः वह आनन्द इस जीवन का सर्वोच्च आनन्द था। **इस संसार में रहकर जितना आनन्द और शान्ति का अनुभव कर रहा हूं यह सब पूज्य गुरुदेव की ही कृपा का प्रतिफल है।** उसके बाद ही यह समझ पाया कि दीक्षा का महत्व शिष्य के जीवन में कितना आवश्यक है और गुरु ही शिष्य के, मन के रोग को समझ सकता है, उसके लिए क्या उपचार हो सकता है। शिष्य के चित्त में रहने वाली जडता एवं अज्ञानता का निराकरण, मात्र दीक्षा से ही धीरे- धीरे स्तर के अनुसार गुरु करता जाता है। यह सब कुछ शिष्य की श्रद्धा के अनुसार होता जाता है क्योंकि शिष्य जितना ज्यादा श्रद्धालू, जिज्ञासु, लगनशील एवं सेवा परायण होगा, गुरु की कृपा दीक्षा के रूप में उसे स्वतः ही प्राप्त होती जाएगी, उसके लिए शिष्य को जो कि श्रद्धानत है, कुछ और प्रयास नहीं करना पड़ेगा। शिष्य के जीवन का यह सौभाग्य होता है कि उसे चैतन्य और अद्वितीय गुरु, जीवन्त गुरु प्राप्त हो जो सभी प्रकार की दीक्षा विधाओं को अपने कंठ में संजोये हों। **आज वर्तमान में पूज्य गुरुदेव इन दीक्षा रहस्यों को जितनी सक्षमता और समर्थता से जानते हैं उतना और कोई ज्ञाता नहीं है। यदि कोई १०८ दीक्षा - क्रमों को जानता भी हो तो उसे प्रामाणिक रूप से शिष्यों के अन्दर क्षमता के साथ स्थापित रखते हुए दिखायी नहीं देते ।** वर्तमान का यह क्षण अतीव सौभाग्य - शाली है कि हमारे बीच पूज्य गुरुदेव इसके जीते जागते दीक्षा समूह के रूप में उपस्थित हैं और जितना हो सके हमें, समाज को, विश्व को और समस्त राष्ट्र को उनसे लाभ उठाना चाहिए। ◎

शरीर का कंपित होना, पसीने की बूंदें छलछला आना, तो किसी को कोई गुफा या वन प्रांत दिखाई पड़ना . . .

ऐसे ही कई लक्षण हैं कुण्डलिनी के तीव्रता से जगकर ऊपर उठने के, रोमांचित कर देने वाले विविध अनुभव . . .

(पृष्ठ ७ का शेष भाग)

ज्योतिषी रहे ही नहीं, जो भी हुए अब वे विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी ही रह गए।

मुझे श्रीमाली जी के बारे में बराबर जानकारी मिलती रहती थी, कभी टेलीफोन के द्वारा, कभी लोगों के द्वारा, और **मेरे मन में प्रबल इच्छा बनी रही कि मैं कुछ समय उनके सानिध्य में व्यतीत करूं। कुछ ज्योतिष ज्ञान सीखूं। उनके जीवन में फलित ज्योतिष का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। उनका अनुभव विशाल है और यदि मैं फलित ज्योतिष के कुछ सूत्र उनसे प्राप्त कर पुस्तक के माध्यम से इस देश के सामने रखूं, तो एक बहुत बड़ा देश के प्रति कार्य होगा।** मगर चाहते हुए भी वे समय निकाल नहीं पाए और दो- चार बार उनसे भेंट हुई भी तो उन्हें मैंने साधना कार्यों में पत्रिका में और विशेष शिविरों में व्यस्त होते हुए अनुभव किया। ज्योतिष के साथ उन्होंने भारत की प्राचीन विधा को पुनर्जीवित करने के लिए एक नई पगडंडी बना ली। उन्होंने कहा भी कि - "भारत वर्ष तो पूरे विश्व की पूंजी है यह अध्यात्म, ये मंत्र, ये योग, यह सब भी भारत वर्ष की थाती है जिसे सुरक्षित रखना आवश्यक है। और जीवन का प्रत्येक क्षण मैं इस कार्य में लगा सका तो मुझे एक संतोष सा अनुभव होगा" --कहते- कहते उनके चेहरे पर आत्म विश्वास की गरिमा अनुभव करने लगा।

इसके बाद तीन - चार साल तक उनसे कोई सम्पर्क नहीं रह पाया। मैं भी साल -डेढ साल के लिए यूरोप चला गया था, और वे भी शायद अपने इस लक्ष्य के लिए अत्यधिक व्यस्त हो गए थे। मगर मेरे मन में यह कसक अवश्य थी कि उनके साथ कुछ समय व्यतीत करूं, जब भी समय मिले जैसे भी हो।

पिछले दिनों कुछ समय पहले दिल्ली में उनके निवास स्थान पर मुझे भेंट करने का अवसर मिला, तो मैंने देखा कि पहले की अपेक्षा वे काफी कमजोर से हो गए हैं, पर फिर भी उनके चेहरे पर एक उत्साह, ओज एवं गरिमा थी। एक दर्प का मैंने अनुभव किया एक आत्मविश्वास का बोध सा मुझे हुआ। उस समय विश्व के मानचित्र पर कुछ भी नए समाचार नहीं थे।

एक दिन शाम के समय मैं श्रीमाली जी के साथ बाल्कनी में बैठा हुआ था। वे कोई पत्रिका पढ़ते- पढ़ते अचानक गम्भीर हो गए। पत्रिका एक ओर रख दी और शून्य में ताकते हुए वे काफी व्यथित, काफी चिंतित, काफी उदास से अनुभव हुए।

मैंने पूछा श्रीमाली जी क्या बात है आप आकाश की ओर ताकते हुए गम्भीर हो गए आकाश कितना स्वच्छ है। शाम की लालिमा कितनी सुन्दरता के साथ फैली हुई है।

अचानक उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया यह आकाश की लालिमा सुन्दर नही, यह रक्त रंजित खून से भरी हुई, मैं देख रहा हूं, चारों तरफ खून से भरी हुई, मैं देख रहा हूं नर संहार, एक ऐसा नर संहार जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती निकट भविष्य में आने वाले दिनों में।

मैं हक्का-बक्का रह गया। मैंने कहा- 'श्रीमाली जी , ऐसा तो कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा है, कहीं कोई युद्ध की स्थितियां रही ही नहीं, इस समय तो विश्व पहले की अपेक्षा ज्यादा खामोश, ज्यादा शांत है।

श्रीमाली जी बोले नहीं मगर वे धीरे - धीरे बुदबुदाए जो देख रहा हूं वह अपने आप में सही है। मैं इस आकाश की लालिमा में हजारों लोगों का खून बहता अनुभव कर रहा हूं। युद्ध के द्वारा, दर्प और घमण्ड की वजह से अपने आप को प्रसिद्ध करने के घमण्ड की वजह से।

मैं चुप रह गया और कुछ दिनों में या उसके पांच - सात दिनों के बाद जब मैंने अमेरिका द्वारा ईराक पर आक्रमण के समाचार पढे तो तुरंत ही मेरे दिमाग में श्रीमाली जी की पंक्तियां तैर गयी। अभी चार - पांच दिन पहले ही तो उन्होंने कहा था, अभी चार - दिन पहले तो उनकी बाल्कनी पर जो मुझे सांध्य कालीन लालिमा सुन्दर दिखाई दे रही थी उन लालिमाओं में खून से सनी हुई अनुभव हो रही थी और आज इस युद्ध में जो नर संहार हो रहा है जिस प्रकार से आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग हो रहा है उससे तो पूरा विश्व खून से रंगने जा रहा है। **कितनी अचूक और अद्वितीय भविष्य वाणियां है श्रीमाली जी की। किस प्रकार से वे पहले से ही आकाश के भाल पर लिखी हुई इबारतें पढ़ लेते हैं। और यही नहीं इस प्रकार का नर संहार, इस प्रकार का युद्ध अनुभव कर वे कितने व्यथित हो उठते हैं। उनके आंखों में कितनी गहराई कितनी खामोशी, कितनी उदासी तैर जाती है -- मैंने उसी दिन अनुभव किया।**

युद्ध के दिनों में ही मैं जानबूझ कर दिल्ली पहुंचा श्रीमाली जी से मिला, वे अपने कार्यालय में उदास से बैठे थे। कुछ

लिखने की इच्छा नहीं हो रही थी मैंने कहा आपने जो कुछ कहा वह सत्य हो रहा है। जिस प्रकार का यह युद्ध हो रहा है वह विनाश कारी युद्ध अनुभव किया जा रहा है। पूरा विश्व चिंतित है कि क्या हो रहा है, और इससे बड़ी बात यह है कि जो शक्ति संतुलन है, वह डगमगा रहा है। ईरान तबाह हो रहा है और रूस सामने खड़ा ही नहीं हुआ। यदि रूस कमर कस कर सामने खड़ा हो गया होता तो अमेरिका की इतनी हिम्मत नहीं होती कि वह दुर्धर्षता के साथ आक्रमण कर बैठता।

श्रीमाली जी ने मेरी आंखों में ताका मैंने देखा कि उनकी आंखों में एक खामोशी एक घना वीराना पन है। **उन्होंने कहा - यह रूस की मजबूरी है, रूस कमर कस कर खड़ा होने की स्थिति में ही नहीं है क्योंकि मैं तो स्वयं रूस को ही टुकड़े - टुकड़े होते देख रहा हूं, निकट भविष्य में।**

यह चौकाने वाली वात थी मैं एक दम से सकपका गया। हैरान रह गया कि ऐसा कैसे संभव हो सकता है, रूस जैसी दुर्जेय शक्ति टुकड़े - टुकड़े हो जाए यह संभव हो ही नहीं सकता। कोई विश्वास कैसे करेगा कि रूस खंडित हो सकता है। ऐसे कोई आसार ही नहीं है।

मैंने अपनी आशंका प्रकट की आप क्या कह रहे हैं रूस टुकड़े - टुकड़े हो जाएगा। एक महाशक्ति, एक अद्वितीय शक्ति जिसने अपनी ताकत से पूरे विश्व को यह एहसास करा दिया है कि वह संसार की किसी भी शक्ति से टक्कर लेने में समर्थ है यह रूस की वजह से ही तो विश्व शक्ति संतुलन चल रहा है।

श्रीमाली जी ने उस समय जो कुछ कहा वह मेरी डायरी में अंकित है। रूस चाहे ऊपर से अभेद्य कवच की तरह दिखाई दे रहा है मगर अंदर से बिल्कुल खोखला है और वह विनाश के कगार पर है रूस छोटे- छोटे राज्यों में बंट जाएगा आने वाले कुछ ही समय में, और यह शक्ति संतुलन तो समाप्त हो ही जाएगा। आने वाले दिनों में सम्पूर्ण विश्व पर अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिका का दवाव बढ़ जाएगा।

चीन. . .जिसने हमारी भूमि हड़प ली, हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान पर चोट पहुंचायी. . .

वही बनेगा हमारा सबसे घनिष्ट सहयोगी!

मुझे पूर्ण विश्वास है श्रीमाली जी की इस भविष्यवाणी परभी . . .

मैं उस समय कुछ बोला नहीं पर मेरी आत्मा, मेरा मन इस बात को गवारा नहीं कर रहा था कि किस प्रकार ऐसा हो सकता है यह एक ऐसी भविष्य वाणी थी जिस पर विश्वास किया ही नहीं जा सकता था और फिर उस समय श्रीमाली जो को टोकना अच्छा नहीं लगा, और मैं चुप रह गया और पांच - सात मिनट की बातचीत के बाद मैं बाहर निकल गया।

परन्तु इतिहास साक्षी है इस भविष्यवक्ता की एक - एक पक्तिं सत्य सिद्ध हुई। रूस जैसी महाशक्ति भी खंडित हुई, रूस छोटे - छोटे राज्यों में बंट गया और अमेरिका अपने आप में पूर्ण शक्तिशाली बनकर विश्व पर पूर्ण रूप से एकाधिकार स्थापित करने के लिए अग्रसर हो गया। **वास्तव में ही मैं अनुभव करता हूं कि श्रीमाली जी को एक अलौकिक शक्ति प्राप्त है, ज्योतिष का उन्होंने गहराई के साथ मंथन किया है। वे आने वाले दिनों को , समय को, वर्षो को भांप लेते हैं। उनकी प्रत्येक भविष्य वाणी अपने आप में सत्य सिद्ध होती है।**

पिछले दिनों जब चीन ने पाकिस्तान को मिसाइलें दी और ऐसा लगने लगा जैसे चीन और पाकिस्तान की 'दांत कटी' मित्रता है, मैंने श्रीमाली जी को जोधपुर टेलीफोन किया। मैंने कहा - हम तो एक तरफ पाकिस्तान एक तरफ चीन से घिरे हुए बैठे हैं और अमेरिका का शिकंजा हम पर बराबर कसता जा रहा है।

टेलीफोन पर ही श्रीमाली जी ने जवाब दिया - विश्व में *आने वाले दिनों में चीन हमारा सर्वाधिक घनिष्ठ मित्र साबित होगा बराबरी का सहयोगी, और एक नया शक्ति संतुलन बनने जा रहा है भारत- चीन और एक अन्य देश से मिलकर।*

सुनकर अटपटा लगा। जिस चीन ने हमारी धरती हड़प ली, जिस चीन ने हमारे आत्म सम्मान को चोंट पहुंचायी, वह चीन हमारा सर्वाधिक श्रेष्ठ मित्र बन जाएगा। सुनकर विश्वास नहीं हुआ, परन्तु मुझे श्रीमाली जी की ज्योतिष पर अगाध आस्था है। पिछले तीस वर्ष इसके साक्षी है और मैं निश्चिंत हूं कि वास्तव में आने वाले दिनों में यह भविष्यवाणी भी सत्य सिद्ध होगी।

श्रीमाली जी वास्तव में ही इस शताब्दी के अद्वितीय भविष्यवक्ता, मंत्रज्ञ एवं सिद्ध पुरुष हैं, यह हमारा सौभाग्य है कि हम उस शताब्दी में सांस ले रहे हैं जिस शताब्दी में नारायणदत्त श्रीमाली जैसा व्यक्तित्व विद्यमान है, मेरा उन्हें शत् शत् नमन।

साधक साक्षी है

मेरा पुत्र अरविन्द राठौर जो अभी सवा दो वर्ष का है , जब यह मात्र एक महीने का था, हर्निया रोग से पीड़ित हो गया। हमने तुरन्त डॉक्टरों को दिखाया। डॉक्टरों ने सलाह दी कि ऑपरेशन होगा। मैंने गुरुदेव को फोन किया। गुरुदेव ने ऑपरेशन के लिए मना कर दिया। हम दोनों पति - पत्नी बच्चे को लेकर जोधपुर गये मगर गुरुदेव प्रभु टालते रहे। इसी बीच गुरुदेव एक बार जयपुर कुछ घंटों के लिए आए हुए थे। मैंने प्रार्थना की तो उत्तर मिला, " आज कल सब रोगों का इलाज संभव है, डॉक्टर से ऑपरेशन करवा लो।" मैंने गुरुदेव से करबद्ध प्रार्थना की कि, " आप डॉक्टरों के डॉक्टर हैं, मैं ऑपरेशन नहीं करवाऊंगा।" लगभग पांचवी बारी में हम गुरुदेव के पैरों में गिरकर रोने लगे हमने कहा, " इसका यह दुख हमसे ही नहीं दूसरों से भी नहीं देखा जाता। अब कृपा करके आज ही इसका इलाज करें।" थोड़ी देर बाद गुरुदेव ने कुंकुम और चावल मंगवाकर उसका लेप बना कर पेडू पर हमसे लगवाया और स्वयं आंख बंद कर, अरविन्द के सिर पर हाथ रखकर मंत्रोच्चार किया। उस समय मेरा पुत्र डेढ़ वर्ष का था और उसके तुरंत बाद से ही उसका हार्निया रोग जाता रहा। प्रभु ने बच्चे पर अपार कृपा की है।
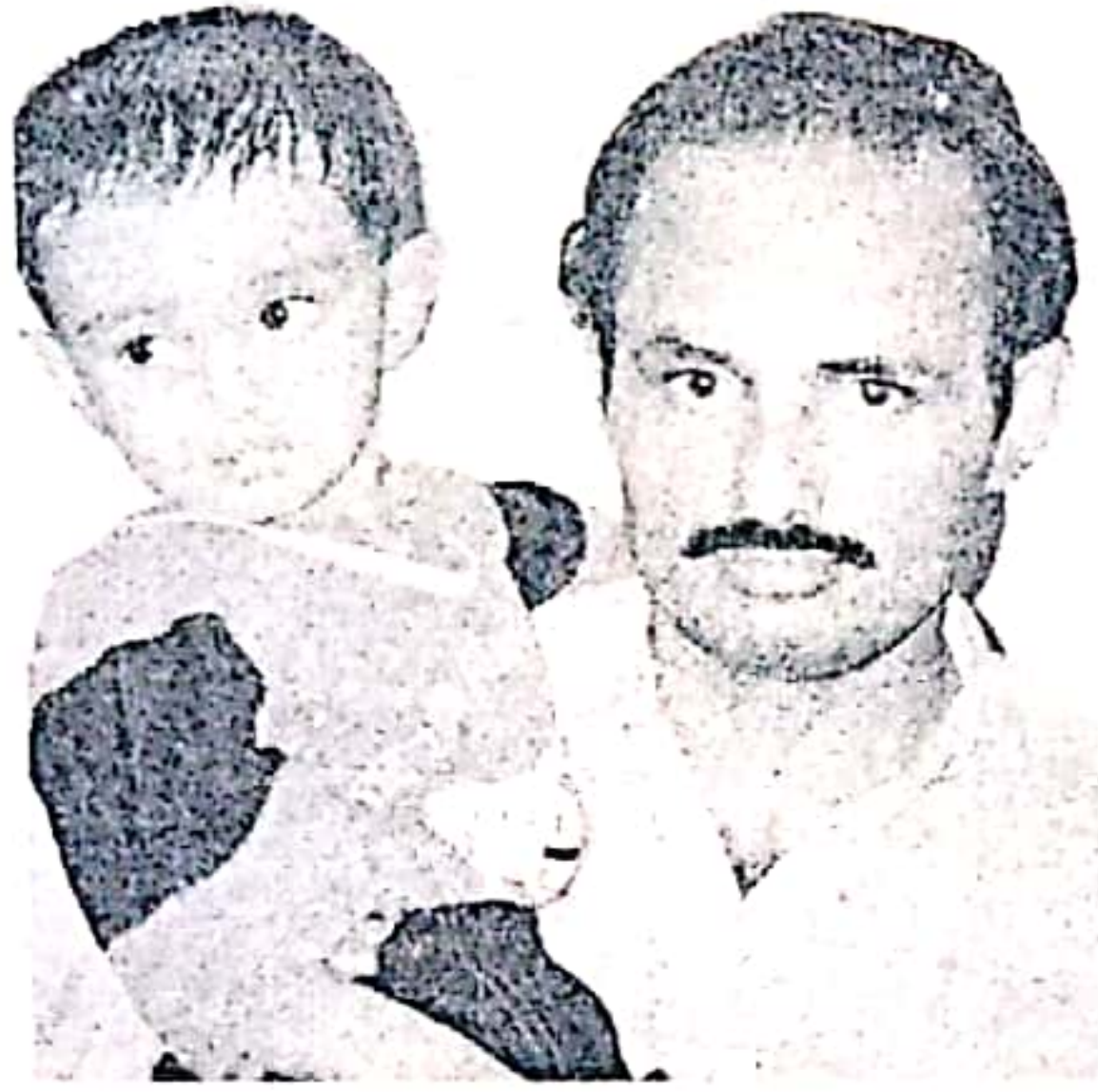
दिग्विजय सिंह राठौड़,
सी.आई. डी. ऑफिस के पीछे,
श्री जी की मोरी
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

जब मैं पिछले वर्ष १९९१ में पूज्य गुरुदेव के पास आया तो मेरा रोम -रोम कर्ज में जकड़ा हुआ था, पूज्य गुरुदेव ने **पारद श्रीयंत्र** और **पारद लक्ष्मी** मुझे दी और घर पर ले जाकर स्थापित करने को कहा। लक्ष्मी और श्रीयंत्र स्थापित करने के बीस दिन बाद ही मुझे काम मिल गया मेरी आमदनी मुश्किल से मात्र १०००/- थी जो बढ़कर एकदम से चार - पांच हजार रुपये तक हो गयी। घर का सारा कर्ज उतर गया है। अब मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी है और दिन प्रतिदिन मैं अधिक सम्पन्न होता जा रहा हूं।

सुखदेव सिंह,
पूरन नगर,पठानकोट

बाबा बैद्यनाथ धाम में इसी अगस्त माह में परम श्रद्धेय एवं प्रातः वन्दनीया माता जी का शुभागमन हुआ - **" शिव शक्ति साधना शिविर"** में। शिविर प्रारम्भ होने से पूर्व ही गुरुदेव के साथ हम सभी परिवार के सदस्य एवं शिविर में भाग लेने हेतु आए समस्त साधकों ने बाबा बैद्यनाथ मंदिर में जाकर रुद्राभिषेक सम्पन्न किया। पूज्य गुरुदेव ने संकल्प में कहा कि "मैं अपने समस्त शिष्यों की मनोकामना की पूर्ति के लिए ही यह अभिषेक सम्पन्न कर रहा हूं।" मैं गुरुदेव के एक - एक शब्द को ध्यान से सुन रही थी और गुरुदेव तथा बाबा बैद्यनाथ का एक साथ दर्शन कर अपने जीवन को सफल बना रही थी।

गुरुदेव के जय घोषों से गुंजरित हो रहा था मंदिर का विशाल प्रांगण। मेरी आंखें शिवलिंग के ऊपर टिकी हुई थी कि तभी मैंने देखा -- **शिवलिंग में से प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा है, और उस प्रकाश के मध्य उभर रही है एक आकृति, जो क्रमशः बड़ी होती जा रही थी। अरे! यह तो पूज्य गुरुदेव का ही निखिलेश्वरानंद स्वरूप है, धीरे - धीरे वह आकृति पूज्य गुरुदेव में ही समाहित हो गयी। उसी क्षण मेरे सामने स्पष्ट हो गया कि गुरुदेव ही भगवान शिव हैं, परम ब्रह्म हैं।**

श्रीमती प्रतिभा झा, द्वारा श्री बेदानंद झा
वरीय पुलिस अभियोजक
आशा राम किसन रोड, कैस्टल टॉउन
बैद्यनाथ धाम , देवघर, बिहार

मेरा पुत्र जो काफी दिनों से गायब हो गया था, मेरे अथक प्रयास के बावजूद भी उसकी कोई सूचना मुझे नहीं मिली। तभी मैंने अपने एक परिचित से परम पूज्य गुरुदेव के विषय में सुना और उनके पास जाकर अपनी समस्या को बताया। परम पूज्य गुरुदेव ने मेरी समस्या के समाधान के लिए एक अनुष्ठान करवाया। अनुष्ठान सम्पन्न करने के कुछ ही दिनों बाद मेरा बेटा सकुशल घर लौट आया। घर आकर उसने बताया कि वह जिन्दगी की समस्याओं से तंग कर आत्म - हत्या के विचार से ट्रेन की पटरियों पर बढ़ता चला जा रहा था, तभी न मालूम कहां से एक तेजस्वी सन्यासी, जिनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभाव शाली था, ने आकर आदेशात्मक स्वर में मुझे वापस घर जाने की आज्ञा दी मैंने विरोध किया तो वह मुझे अपनी छड़ी से पीटने के लिए मेरी ओर दौड़े और मैं किसी अदृश्य शक्ति से बाध्य होकर वापस घर तक पहुंच गया।

भूदत्त ,फरीदाबाद

राशिफल

मेष -

पिछले कुछ समय से चली आ रही स्थितियों में सुधार होगा। मनोमालिन्य दूर होंगे। किसी से लम्बे समय से चला आ रहा विवाद समाप्त होगा। राज्य पक्ष की ओर से यद्यपि चुनौतियां समाप्त तो नहीं होंगी, किंतु उनकी प्रबलता में अवश्य ही कमी आयेगी। लघु उद्योगों में संलग्न एवं इंजीनियरिंग से जुड़े व्यवसाय के व्यक्तियों को लाभ पहुंचेगा। १२ तारीख के बाद से समय अच्छा है, जो कि २८ तारीख तक विशेष रूप से अनुकूल है। माह के तृतीय सप्ताह में नये अवसरों की प्राप्ति के लिए सचेष्ट रहें। यात्राएं सम फलदायक होंगी

अनुकूल तिथियां - ७, १३, २२, २८ ।

अनुकूल दिवस - रविवार।

वृषभ -

रुका हुआ धन मिलेगा तथा थोड़ी सी सक्रियता से कहीं ऋण में फंसा धन भी वापस प्राप्त कर सकते हैं। इस माह आपको सामान्य से अधिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होगी। प्रायः उलझाव के अवसर उत्पन्न होंगे, किंतु उनका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। स्वास्थ्य में उतार - चढ़ाव होगा किंतु किसी प्रकार गंभीरता की स्थिति नहीं उत्पन्न होगी। इस माह की ८ तारीख आपके लिए किसी नये समझौते को करने, कोई नवीन कार्य आरम्भ करने अथवा मांगलिक कार्य के लिए सर्वाधिक शुभ दिवस है। शत्रु पक्ष पूरे माह उलझाव की स्थितियां उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे किंतु मनोबल बनाए रखें, वे परास्त होंगे। जीवन साथी से संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। स्त्री वर्ग के लिए यह माह कुछ मानसिक खिन्नता का रहेगा।

अनुकूल तिथियां - ५, ७, १३, २८ ।

अनुकूल दिवस - रविवार।

मिथुन -

जीवन साथी की ओर से चिंता रहेगी। स्वयं का भी स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहेगा। कार्यों में बार - बार रुकावटें आएंगी। वृथा निंदा से मन खिन्न रहेगा। वाहन के क्रय की स्थितियां बनेगी। कोई उपयोगी अथवा मनोरंजक घरेलू उपकरण भी खरीदने के अवसर उपलब्ध होंगे। जमा - पूंजी में भी वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष से समझौते के अवसर आएंगे, किंतु आपको ऐसे अवसरों के लिए सर्तक रहना होगा, जिससे कोई भूल चूक न हो । व्यापारी वर्ग हताश रहेगा। खरीददारी में घाटा आयेगा। नये समझौते यदि संभव हो, तो इस माह में ही करें।

अनुकूल तिथियां- १५, २७, २८

अनुकूल दिवस - सोमवार ।

कर्क -

स्त्री वर्ग से विशेष सहयोग मिलेगा। प्रेम प्रसंग में प्रगाढ़ता आयेगी। धनागम सामान्य रहेगा। यात्रा के अवसर उपलब्ध होंगे और यात्राएं सफलतादायक रहेंगी। मन में भावनाओं का अतिरेक रहेगा। व्यवहारिकता में कमी आयेगी । परिवार की ओर से विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। सम्पूर्ण माह सामान्य रूप से अच्छा रहेगा। शत्रु पक्ष की ओर से कोई बाधा नहीं मिलेगी। एक प्रकार से इस माह आप सभी से कट कर व्यक्तिगत जीवन में ही व्यस्त रहेंगे। व्यापारिक वर्ग के लिए श्रेष्ठ समय। शेयर में धन लगायें। नये सौदों के प्रति सावधान रहें, क्योंकि आपकी चूक से उनके निकल जाने के आसार भी प्रबल हैं।

अनुकूल तिथियां - २, ५, ८, १७, २३

अनुकूल दिवस - बुधवार।

सिंह -

ऋण के लेन - देन से बचें। आवश्यकता से अधिक विश्वास से बचें। बड़े व्यापारिक सौदे करने से पूर्व किसी मध्यस्थ को अवश्य ही साथ रखें। अपनी साख के प्रति सतर्क रहें। नौकरी पेशा वर्ग को भी सामान्य से भी अधिक सतर्कता रखने की आवश्यकता है। गृहस्थ जीवन में उथल - पुथल रहेगी। बिना किसी कारण के विवाद उत्पन्न होंगे। शांति बनाये रखने के प्रयास असफल सिद्ध होंगे। धार्मिक कार्यों से मन उचाट रहेगा। क्रोध का अतिरेक रहेगा। कार्यों में अरुचि रहेगी। धन संबंधी प्रयास सफल रहेंगे।

अनुकूल तिथियां - ६, १०, १८, २५।

अनुकूल दिवस - शनि।

कन्या -

पूरे माह भर आय संबंधी चिन्ताएं व्याप्त रहेंगी। व्यय के लिए पूर्वानुमान पर चलना ही बुद्धिमत्ता होगी। किसी दूरस्थ प्रियजन से भेंट होगी। मित्र वर्ग आशा के अनुकूल सहयोगी रहेगा। कार्य की अधिकता से बचें। धन संबंधी विवादों में ढील न दें। चौर्य भय संभावित, यात्राएं लाभदायक। स्वाभाव में बैचेनी रहेगी। व्यापारी वर्ग चिन्तातुर रहेगा, यद्यपि व्यापार पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। अधिकारी वर्ग को अधिनस्थों से सहयोग मिलेगा। प्रेम प्रसंग में सावधानी अपेक्षित। दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा। गुप्त चिंताओं की समाप्ति होगी। चोट चपेट से बचें।

अनुकूल तिथियां - ५, ८, ६, २७ ।

अनुकूल दिवस - बृहस्पति।

तुला -

कार्यों की अधिकता से थकान रहेगी। किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। मनोमालिन्य दूर होंगे। स्वास्थ की चिंता स्वाभाविक है। स्थितियों में ८ तारीख के बाद सुधार प्रारम्भ होंगे। मन में शांति रहेगी। धार्मिकता का उदय होगा। पारिवारिक जीवन सामान्य। प्रेम प्रसंगों में सावधान रहें। यह माह नये अवसरों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। व्यापारिक बन्धुओं के लिए आवश्यक है कि वे योजना बद्ध रूप से कार्य करें। उनकी हित की दृष्टि से १३ तारीख के बाद समय अनुकूल प्रारम्भ होगा, जो १८ तारीख तक विशेष प्रभावदायक रहेगा। आय की स्थितियों में सामान्य सा सुधार रहेगा, किन्तु व्यय पर नियंत्रण बना रहेगा। यात्रा में सावधान रहें।

अनुकूल तिथियां - २, ५, ८, ६, ।

अनुकूल दिवस - सोमवार।

वृश्चिक -

मन में किसी के अशोभनीय व्यवहार से कटुता न आने दें। भूमि संबंधी एवं भवन निर्माण संबंधी कार्यों को तीव्रता से पूरा करने के लिए अनुकूल माह। आय - व्यय चक्र संतुलित रहेगा। आय में वृद्धि की स्थितियां तो बनेंगी, किंतु आकस्मिक खर्चों से जमा पूंजी में वृद्धि संभावित नहीं होगी। इस माह की १० तारीख से लेकर १४ तारीख के मध्य विशेष सतर्क रहें। व्यापारी वर्ग व उद्यमियों के लिए अधिक अनुकूल माह नहीं। बड़े सौदों को अगले माह तक के लिए टाल दें। दाम्पत्य जीवन में आपके पक्ष से मधुरता अपेक्षित। बाह्य कारणों से आपसी तालमेल न भंग होने दें।

अनुकूल तिथियां ६, १७, २३, २६ ।

अनुकूल दिवस - सोमवार।

धनु -

मन में उत्साह की दशाएं रहेंगी और भावानाओं की प्रबलता के कारण दृढ़ता पूर्वक निर्णय लेने की प्रवृत्ति का आभाव रहेगा। कल्पना की दुनिया में विचरण करने की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी होगी तथा एकांत प्रियता भी बढ़ेगी। कार्यालय में सहयोग का अभाव रहेगा। मित्र वर्ग सहयोगी रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुख - पूर्वक व्यतीत होगा। धन का लेन - देन न करें। व्यापारी वर्ग के लिए सामान्य। छात्र वर्ग को कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। स्त्रियों के स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। अधिक भागदौड़ एवं यात्रा की दशाओं का त्याग करें। शत्रु- पक्ष शांत रहेगा। धन का संचय नहीं हो सकेगा।

अनुकूल तिथियां - ८, २१, २६, ३० ।

अनुकूल दिवस - सोमवार।

मकर -

मनोकामना पूर्ण होगी। शीर्ष स्थान पर पहुंचने की स्थितियां निर्मित होती दिखेंगी, किंतु अभी उनको मूर्त रूप लेने में थोड़ा समय है । परिश्रम की अधिकता रहेगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। दाम्पत्य जीवन में नूतनता आयेगी। धन की स्थिति सुखद रहेगी। १७, १८ को विशेष सावधानी रखें। कोई लेन- देन अथवा व्यापारिक समझौता न करें। शत्रु पक्ष पीठ पीछे चालें चलता रहेगा। कोई संबंधी विशेष सहयोगी सिद्ध होगा। मित्र वर्ग द्वारा की जाने वाली उपेक्षा से मन में क्षोभ होगा। यात्राएं मध्यम फल दायक होंगी। कार्यालय में सहयोग का अभाव रहेगा तथा अनायास मतभेद।

अनुकूल तिथियां १७, २३, २६, ३०।

अनुकूल दिवस - शनिवार।

कुंभ -

धार्मिक अभिरुचियों में वृद्धि होगी। मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ माह। विवाह आदि में आ रही अड़चने दूर होगी। प्रेम - प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी। दाम्पत्य जीवन में भी अनुकूलता। संचय की प्रवृत्तियों का विकास होगा आय की दिशा में अभी उल्लेखनीय वृद्धि नहीं। किसी आकस्मिक खर्चे के लिए भी मानसिक रूप से तैयार रहें। स्त्री वर्ग के साथ शारीरिक कष्ट की स्थिति संभावित, धैर्य अपेक्षित। स्वाभाविक रूप से सक्रियता व प्रशंसा में वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग उत्साह का अनुभव करेगा। शेयर आदि में धन नियोजित करने के लिए श्रेष्ठ माह। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। सम्पूर्ण रूप से अनुकूल माह।

अनुकूल तिथियां - ४, ५, ८, १७, २१।

अनुकूल दिवस - शनिवार।

मीन -

चुनौती पूर्ण समय होगा। चित्त में स्थिरता आएगी। धन का आगम न होगा तथा आय के स्रोत उत्पन्न होंगे। स्त्री वर्ग से सम्पर्क बढ़ेगा। सामाजिक रूप से मेल - मिलाप के अवसर उपलब्ध होंगे। नये उद्यम को आरम्भ करने के लिए अनुकूल समय। व्यापारी वर्ग के लिए श्रेष्ठ माह, जमा- पूंजी में वृद्धि होगी। माह में प्रारम्भ के दिन आपके अनुकूल अधिक हैं। शत्रु पक्ष हताश होगा। स्वास्थ्य पर कार्य की अधिकता से प्रतिकूल प्रभाव होगा। हल्के स्तर के व्यक्तियों के सम्पर्क से बचें। आगामी वर्ष के लिए आधार माह क्योंकि इसी माह निर्धारित की गई योजनाएं आगामी वर्ष में सफलता का आधार बनेंगी।

अनुकूल तिथियां ४, ८, १७, २३ ।

अनुकूल दिवस - बुधवार ।

कहीं आप पर किसी ने तंत्र प्रयोग तो नहीं करवा दिया
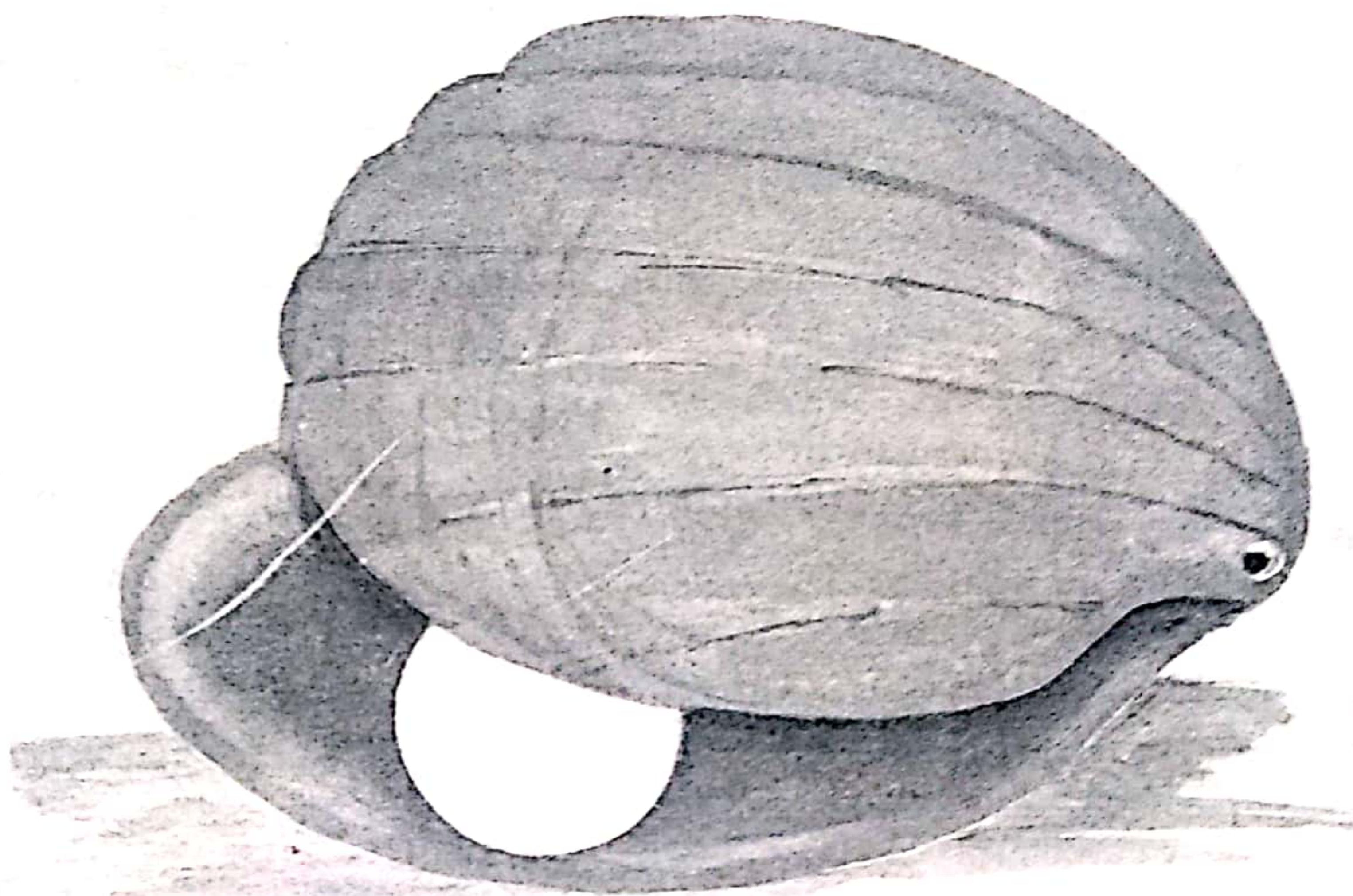
कवच के रूप में उपलब्ध है

विशेष तंत्र रक्षा कवच

दैनिक जीवन में आने वाली हर कठिनाई को सामान्य सा समझ कर मत टाल दीजिए, इन्हीं छोटी - छोटी बाधाओं के पीछे छिपा होता है रहस्य - द्वेष वश कराए गए किसी तांत्रिक प्रयोग का . . .

जिसका निराकरण सामान्य उपचारों से संभव ही नहीं-- विवाह में बाधा, रोग का बना रहना, ऋण से मुक्ति न मिलना इत्यादि - इत्यादि। इन सभी का उपाय है तो केवल **'विशेष तंत्र रक्षा कवच'** . . .

. . . और तंत्र की सैकड़ों- सैकड़ों विधाओं में से कौन सी आपके लिए अनुकूल होगी, उसका निर्धारण कर निर्मित किए जाते हैं ये विशेष तंत्र रक्षा कवच, गुरुदेव की तपस्यात्मक ऊर्जा का स्पर्श पाकर, संस्थान के योग्यतम विद्वानों, कर्मकाण्ड के श्रेष्ठतम ज्ञाताओं से सम्पर्क कर . . . लोकहितार्थ, समाज में निरन्तर बढ़ती जा रही तांत्रिक प्रयोगों की प्रबलता के नाश के लिए . . .

न्यौछावर- ११०००/-

<u>सम्पर्क</u>

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४,
फोन - ७१८२२४८
फैक्स- ०११-७१८६७००

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१,
फोन - ०२९१-३२२०६

मनोवांछित गर्भ चयन दीक्षा

भविष्य जन्म दीक्षा की संज्ञा दें या मनोवांछित गर्भ चयन दीक्षा कहें - दोनों एक ही सिक्के के

क्या रह जाता है मृत्यु के बाद अपने पास . . . यह स्थूल देह भी तो नहीं और हवा में तिरते उस सूक्ष्म शरीर से आशा भी कैसी . . .

पहलू हैं। दोनों का ही अर्थ है इस जीवन के उपरान्त भावी जीवन में प्रवेश लेने के अधिकार को अपने हाथों में ले लेना। प्रकृति से एक अधिकार या अधिकार से भी अधिक उपहार प्राप्त कर लेना है। जीवन का एक क्षण आता है जब व्यक्ति चाहे या न चाहे, उसे यह जीवन और चिर परिचित परिवेश त्यागना ही पड़ता है। ज्यों पेड़ पर फूल से फल बनने और उस फल के बिखर जाने पर बीजों को हवा के झकोरों के साथ दूर - दूर तक फैलना ही होता है, उसी तरह से इस जीवन में भी परिवार, देह, मोह - ममता सभी से एक क्षण विशेष आने पर विलगाव होता ही है। यही शाश्वत सत्य है, और यह जीवन रूपी बीज जो इस वर्तमान जन्म रूपी वृक्ष से अलग होगा, अगले जीवन की यात्रा में अगली बार छायादार और फलदार वृक्ष बनने के साथ - साथ वह किसी सुरम्य वातावरण में पनपे, जहां उसकी सार्थकता हो, छांव की उपादेयता हो यही इस दीक्षा का अर्थ है, और इसमें ही इस जन्म की सार्थकता भी। वह वृक्ष फिर उस अनुकूल वातावरण में खिलकर गुनगुना सकेगा, इठला सकेगा और झूम सकेगा।

भविष्य के जन्म के विषय में निर्णय करना इतना सहज नहीं है और न यह व्यक्ति के अपने हाथ की बात है। मृत्यु के उपरान्त अरबों - खरबों आत्माओं की भीड़ में भटकते हुए, इधर से उधर धक्के खाते हुए और अपने स्वरूप में जो कुछ समय पहले तक पंचभूतात्मक था, में हुए परिवर्तन को लेकर हैरान होती हुई आत्मा से क्या आशा की जा सकती है कि वह अपनी इच्छा के अनुरूप किसी गर्भ का, उचित या मनोवांछित गर्भ का चयन कर सकेगी? न कोई बोध, न ज्ञान, न चेतना और न सामर्थ्य।

यह इसी जन्म की घटना होती है। यह इसी जन्म में घटने वाली स्थिति होती है। जब इसी जन्म में, इन्हीं क्षणों में कोई ऐसी दीक्षा से युक्त हो सके, जब उसके भावी गर्भ का, उसकी भावी माता - पिता का निर्धारण, योग्य गुरु अपनी प्रज्ञा अपनी चेतना से कर दें। एक प्रकार से वे अपने शिव स्वरूप में स्थापित होकर तृतीय नेत्र से काल के उन भावी क्षणों का ज्ञान, सुयोग्य माता - पिता का चयन कर, भविष्य के उन क्षणों को बांध देते हैं, जिन क्षणों में उनके द्वारा दीक्षित उनका कोई शिष्य या साधक, उस उचित गर्भ में जन्म ले सकेगा।

साथ ही साथ लिख देते हैं उसके सौभाग्य की पंक्तियां, उसके जीवन में श्रेयता, उच्चता और दिव्यता के क्षण। फिर उसे बाध्यता नहीं होती मृत्यु के उपरान्त दर - दर भटकने की, किसी अवांछित योनि में ग्रस्त होने की और न इस जन्म के उपरान्त किसी कलुषित या अभाव ग्रस्त परिवार में जन्म लेकर जिम्मेदारियों के तले सिसक - सिसक कर दायित्वों का कटु निर्वाह करने की, और न मलिन व स्वार्थी परिवार के मध्य घुटकर रहने की, भले ही जीवन के इस तथ्य को कोई खुलकर स्वीकार करे या न करे। यह विवशताओं में आ पड़ा कर्जों का बोझ, रोगों के उलझाव से घिसटती जिन्दगी, मानसिक तनावों से मुरझा गया मन, पत्नी के उलाहनों- तानों से बोझिल हो गया जीवन, संतानों की उद्दण्डता से एक ओर धरे रह गये सारे जीवन मूल्य, समाज में नित प्रति मिलते विष से तिक्त हो गई आत्मा, विषमताओं से पथरा गया जीवन -- क्या इनकी जड़ें केवल इसी जन्म में है, और अब तो इन्हीं

क्या समय ने भी किसी की प्रतीक्षा की है . . . यदि आज ही अभी नहीं सवांरा यह जीवन तो फिर कब . . . कैसे?

सब तानों बानों के बीच में चुन लेना है नितांत अपने लिये, अपने आप को संवारने के लिए कोई मार्ग। यदि इन क्षणों की महत्ता समझ कर भावी जीवन के लिए कोई बुनियाद नहीं डाल दी गई, एक चैतन्यता नहीं धारण की गई, तो क्या काल ने रुक कर कभी किसी की प्रतीक्षा की है?

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

सिद्धाश्रम

गोल्डन कार्ड योजना

('मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' पत्रिका के अन्तर्गत)

जोधपुर

सिद्धाश्रम संस्था एवं 'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' पत्रिका

की उन्नति एवं सहयोग के फलस्वरूप

श्री ____________________

वर्ष ________ के

''सिद्धाश्रम अलंकार'' से

सम्मानित किया गया

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"
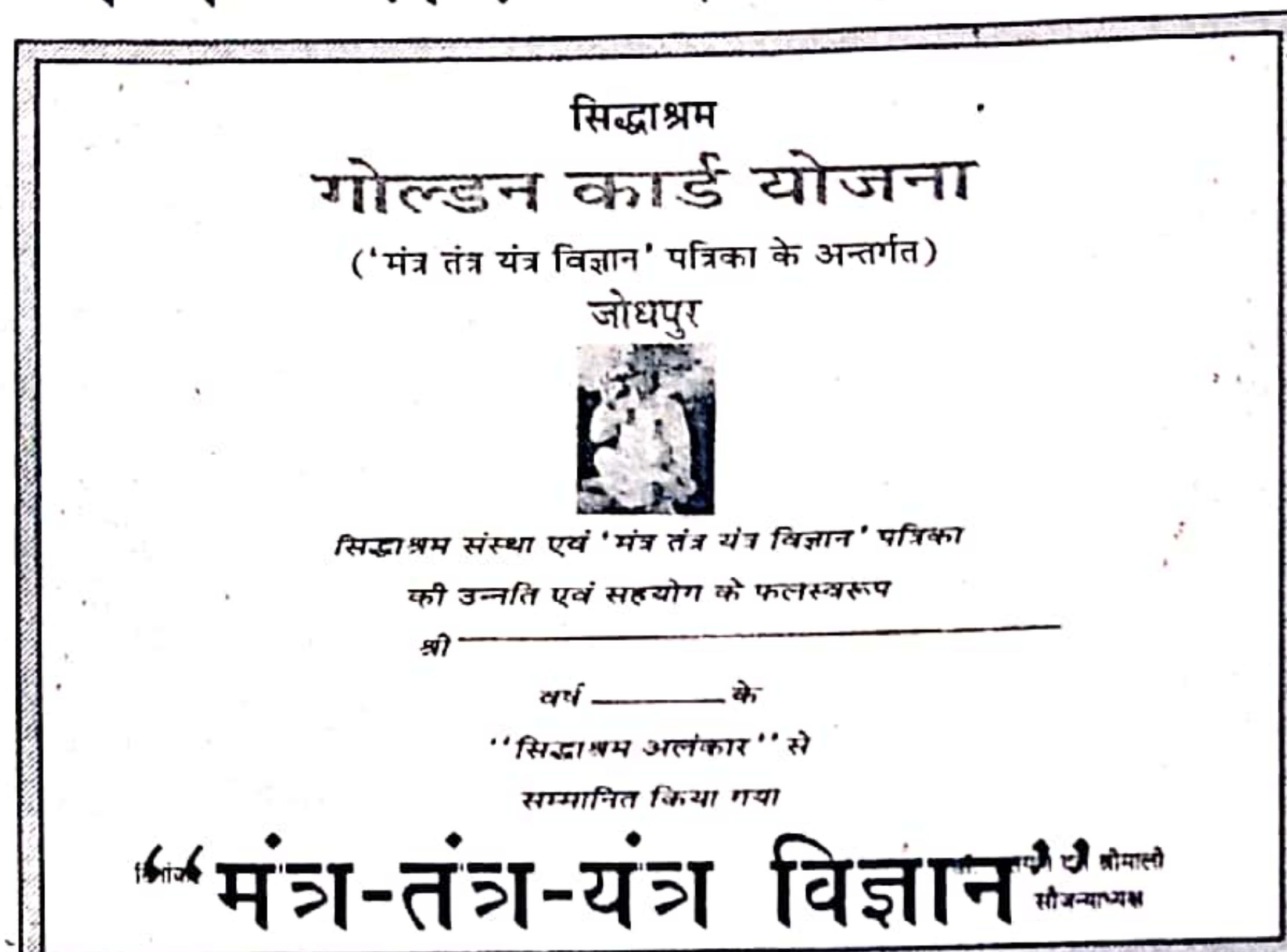
हिन्दी मासिक पत्रिका की ओर से अद्वितीय अवसर

मात्र एक बार इक्यावन हजार रुपये जमा करा देने पर . . .

जीवन भर पत्रिका मुफ्त में प्राप्त होती रहेगी।

भारत वर्ष में कहीं पर भी शिविर होगा,उसमें आप निःशुल्क भाग ले सकेंगे।

प्रत्येक शिविर में कुछ विशेष सामग्री "फ्री " मिलेगी।

प्रत्येक पत्रिका में प्रकाशित साधनाओं में से किसी एक साधना की सामग्री (जो सम्पादक चाहेंगे) निःशुल्क प्राप्त होगी।

गोल्डन कार्ड मेंबर को शिविर किट फ्री मिलेगा।

तंत्र रक्षा कवच, जिसकी न्यौछावर ग्यारह हजार रुपये है।

एक बड़ा मंत्र सिद्ध दक्षिणावर्ती शंख - जिसकी न्यौछावर पांच हजार रुपये है, निःशुल्क दिया जायेगा।

एक मधुरूपेण मंत्र सिद्ध एक मुखी रूद्राक्ष - जिसकी न्यौछावर पंद्रह हजार है, निःशुल्क दिया जायेगा।

एक बड़ा ३० X ४० साइज का गुरु चित्र प्रदान किया जायेगा।

प्रथम सामान्य दीक्षा से शांभवी दीक्षा तक निःशुल्क प्राप्त होगी।

(आप उपरोक्त धनराशि को दो या तीन किश्तों में भी जमा करा सकते हैं)

और फिर

यह धरोहर धनराशि है, जव साधक **"गोल्डन कार्ड मेंबर"** न रहना चाहे तो लिखित में रजिस्टर्ड डाक से ऐसा पत्र लिख दें, पत्र मिलने के दस वर्ष बाद आपकी धरोहर धनराशि लौटा दी जायेगी, जिस पर ब्याज नहीं मिलेगा।

सम्पर्क

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली -३४ , फोनः ७१८२२४८

अथवा

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी , जोधपुर - ३४२००१, (राजस्थान)टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

सम्मोहन विज्ञान का ही उन्नत स्वरूप है यह चिन्त्य साधना . . .

किसी के भी जाग्रत मन की अपेक्षा उसके अन्तर्मन को पकड़ लेने की सहज क्रिया, जिससे फिर बल या भावना के माध्यम से उसे वशीभूत न करना पड़े . . .

चिन्त्य साधना

इसके द्वारा तो किसी के भी **'मन'** को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है

''मन'' एक ऐसा शब्द है जिससे छोटे से छोटा बच्चा, अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बड़ा वैज्ञानिक, दार्शनिक सभी अच्छी तरह परिचित हैं। अक्सर यह कहते हुए सुना जाता है कि '' मन'' नहीं था इसलिए नहीं किया। मन कह रहा है कि आज जरूर मेरी प्रेमिका मुझसे मिलेगी। इत्यादि अनके ऐसी बाते हैं। स्पष्ट है कि आज का मनुष्य मन के द्वारा नियंत्रित है।

कभी कभी यह जानने की इच्छा होती है कि यह ''मन'' आखिर है क्या? क्या हम इस को नियंत्रित कर सकते हैं?

''मन'' हमारी आत्मा अथवा सूक्ष्म शरीर का एक अभिन्न अंग है। यह पूर्णतया चेतन है। यह दो प्रकार का होता है - १. जाग्रत मन २. अन्तर्मन या अवचेतन मन

जाग्रत मन :

यह हमारी इन्द्रियों द्वारा सम्पादित होने वाले कार्यों से सम्पर्कित है। इन्द्रियों द्वारा किए गए किसी भी कार्य की सीधी अनुभूति जाग्रत मन को ही होती है। उदाहरणार्थ-- यदि कांटा चुभ जाए या मिर्च खा लें तो इन दोनों से होने वाला अहसास जाग्रत मन के द्वारा ही होता है। नींद का आना इस बात का प्रतीक है कि इस समय जाग्रत मन आराम करना चाहता है।

अन्तर्मन :

जाग्रत मन की अपेक्षा अन्तर्मन कई गुना शक्तिशाली होता है तथा अधिक सक्रिय होता है। जब मानव नींद लेता है उस समय भी उसका अन्तर्मन चैतन्य व सक्रिय बना रहता है। स्वप्नों में देखे गए दृश्य या घटनाएं अन्तर्मन की ही क्रिया है। मानव शरीर पंचगुणात्मक है और यह सृष्टि त्रिगुणात्मक है। **सृष्टि का निर्माण सत, रज, तम इन तीनों गुणों से होता है और ये ही तीनों गुण अन्तर्मन का निर्माण करते हैं।** यदि मनुष्य में **सतोगुण प्रधान** होगा तो वह व्यक्ति उदारवृत्ति, दयालू व धार्मिक होगा। **रजोगुण प्रधान** व्यक्ति संघर्ष करने वाला व शासन करने वाले गुणों से युक्त होगा। **तमोगुण प्रधान** व्यक्ति दुराचारी, निकृष्ट व दूसरों के लिए दुख का कारण होगा। इस प्रकार व्यक्ति का व्यवहार बहुत कुछ अन्तर्मन पर निर्भर करता है।

मनुष्य के मन की शक्ति की कोई सीमा नहीं होती, मन की शक्ति के द्वारा किसी भी पदार्थ, जड़ या चेतन को नियंत्रित किया जा सकता है क्योंकि मन में असाध्य व अत्यन्त साहसिक कार्य करने की क्षमता होती है। एक प्रकार से देखा जाए तो यह मन सम्पूर्ण शरीर पर आधिपत्य जमाये रखता है। यदि मन को नियंत्रित कर लिया जाए तो ऐसे कार्य छोटे बच्चे भी कर सकते हैं, जिनको करने में एक बडा व्यक्ति भी असमर्थ हो। यह शक्तिशाली मन का ही प्रभाव है कि जिससे सबल मन का व्यक्ति सामने वाले के मन को आज्ञा देकर अपनी इच्छानुसार कार्य करवा सकता है।

आप भी मन की एकाग्रता और शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं और अपने प्रतिकूल स्वभाव वाले व्यक्ति के मन को अपने अनुकूल बना सकते हैं , ऐसा करने के लिए अनेक विधान स्पष्ट किये गये हैं लेकिन जो **सबसे सरल और सहज उपाय है, वह है 'चिन्त्य साधना'** । चिन्त्य साधना मांत्रोक्त साधना है और मांत्रोक्त होने के कारण इसमें कोई कठिनाई या जटिलता नहीं है केवल उपयुक्त यंत्र के द्वारा ही इस साधना को सहजता के साथ साधा जा सकता है।

साधना विधि

इस साधना को किसी भी सोमवार से प्रारंभ कर सकते हैं किंतु यह साधना ब्रह्म मुहूर्त अर्थात चार से साढ़े चार के मध्य प्रातः काल में ही प्रारम्भ की जानी चाहिए। आसन , वस्त्र एवं सामने बिछाया जाने वाला वस्त्र भी श्वेत रंग का होना चाहिए। अपने सामने प्राण - प्रतिष्ठित गुरु यंत्र, चित्र रखें । संक्षिप्त गुरु पूजन करें पांच माला गुरु मंत्र का जाप करें तथा यथा संभव चेतना मंत्र की भी कुछ मालाएं मंत्र जाप करें। अपने सामने तांबे के पात्र में **चिन्त्य साधना यंत्र** स्थापित करें और **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र का जाप करें।

असीम शक्ति समायी है इस अन्तर्मन में, इसे ही नियंत्रित कर लिया तो फिर संसार में क्या असंभव और गोपनीय रह जाएगा . . .?

मंत्र -

ॐ नमो ह्रींकार 'अमुकस्य' मनः वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मंत्र में जहां अमुकस्य आया है वहां आप उसका नाम ले सकते हैं जिसके मन को आप अपने अनुकूल बनाने के इच्छुक हैं। यह तीन दिन की साधना है । साधना के पश्चात यंत्र को गले में धारण कर लें तथा **स्फटिक माला** का प्रयोग भविष्य में केवल वशीकरण, सम्मोहन एवं काल ज्ञान से संबंधित साधना में ही करें, अन्य साधनाओं में प्रयुक्त न करें।

तीन दिन के पश्चात साधना की पूर्णता पर यंत्र को निरंतर धारण किये रहने से आप स्वयं भी इस साधना के प्रभाव को देखकर चकित रह जाएंगे।

व्रत पर्व और त्योहार

०८.११.९३	कार्तिक कृष्ण अष्टमी	काल - अष्टमी
१०.११.९३	कार्तिक कृष्ण एकादशी	रमा एकादशी
११.११.९३	कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी	धन त्रयोदशी
१२.११.९३	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी	हनुमान जयन्ती
१३.११.९३	कार्तिक अमावस्या	दीपावली
१४.११.९३	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा	कमला जयन्ती
१५.११.९३	कार्तिक शुक्ल द्वितीया	यम द्वितीया
१८.११.९३	कार्तिक शुक्ल पंचमी	सौभाग्य पंचमी
१९.११.९३	कार्तिक शुक्ल षष्ठी	सूर्य सिद्धि दिवस
२२.११.९३	कार्तिक शुक्ल नवमी	महाविद्या सिद्धि दिवस
२५.११.९३	कार्तिक शुक्ल द्वादशी	संकल्प सिद्धि दिवस
२८.११.९३	कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी	छिन्नमस्ता जयन्ती

पूज्यपाद गुरुदेव

श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी के आशीर्वाद तले, तीन महत्वपूर्ण आयोजन बम्बई में

२८ नवम्बर — दईसर
२६ दिसम्बर — वसई
२६ जनवरी — मलाड

सम्पर्क सूत्रः- श्री गणेशवट्टाणी, फोनः०२२-८०५-७११०

जब मैंने बगलामुखी को अपने शरीर में धारण किया

निरन्तर तनाव, उहापोह, भटकाव, क्लेश और अपमानजनक स्थितियों के जीवन में बने रहने के पश्चात भी जब उनसे छुटकारे का कोई उपाय नहीं मिला, तब मैंने उनका सांसारिक रूप से उपाय प्राप्त करने की अपेक्षा किसी दैवी बल का आश्रय लेना अधिक उचित समझा। प्रारम्भ में तो मैं कहां - कहां नहीं भटका, किन - किन ज्योतिषियों, पंडितों, तंत्र-मंत्र के ज्ञाताओं और भगवे वस्त्र- धारियों के चक्कर में नहीं पड़ा, लेकिन उनसे कोई उपाय मिलना तो दूर, वह तो मेरी समस्याओं को ही न समझ सके। मेरी खिन्नता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और मैं पहले से अधिक उदास रहने लगा। इन्हीं सब उलझनों में फंसकर **मैं अपने व्यवसाय की गिरती स्थितियों को भी न संभाल सका, जिसका परिणाम यह रहा कि पहले मुझे जो कुछ आय हो भी जाती थी, वह भी समाप्त हो चली** और धीरे- धीरे ऋण का बोझ मेरे ऊपर बढ़ने लगा। हालत यहां तक गिर गई कि मुझे दिन में भी मुंह छुपाने को बाध्य होना पड़ा। मेरे व्यवसाय के प्रतिद्वन्दी और मुझसे ईर्ष्या रखने वाले पड़ोसी मेरी दुर्दशा देखकर मन ही मन बेहद प्रसन्न थे। मैं अपने जीवन में एकाएक आयी इस विपत्ति का कारण समझने में असमर्थ था। कभी - कभी मुझे आभास होता था कि हो न हो उसके पीछे कोई तांत्रिक प्रयोग अथवा षडयंत्र है, लेकिन सही बात न जानने के कारण मैं कुछ भी कह सकने और कर सकने में असमर्थ था। इन्हीं तनावों और पता नहीं किन अज्ञात प्रभावों से मेरा सारा शरीर सूख गया था। मैं खिन्न, उदास, चिड़चिड़ा और हतोत्साहित हो चला था। मेरा पारिवारिक जीवन अर्थाभाव और स्वभाव की कटुता के कारण निरन्तर तनाव युक्त रहने लग गया था।

मैं अपने उन्नति के भरसक उपाय ढूंढता ही रहता था। छोटे- मोटे प्रयोग, टोने- टोटके या जिस पीर, औलिया, फकीर ने जो उपाय बता दिया, उसे आजमाता ही रहता था, तरह - तरह के गण्डों और ताबीजों से मेरी सारी बांह, गला और घर का पूजा स्थान भर गया। द्वार पर आये प्रत्येक साधु - संत का स्वागत-सत्कार कर उसके सामने मैं अपनी परेशानियां बताता- बताता रो पड़ता, लेकिन 'ढाक के तीन पात' वाली ही स्थिति बनी रही। इस बीच में मेरे ममेरे भाई दैव - योग से मेरे घर आये, जो कि झांसी के रहने वाले थे, उन्होंने मेरी घरेलू स्थितियों को देखकर मुझे आग्रह -पूर्वक अपने साथ चलकर एक बार दतिया स्थित पीताम्बरा पीठ के दर्शन करने को कहा। मैं तो पता नहीं किन- किन देवी - देवताओं के मंदिर में माथा रगड़ - रगड़ कर एक तरह से टूट चुका था, लेकिन उनके आग्रह के आगे विवश हो गया और दतिया जाकर पीताम्बरा पीठ के दर्शन किये। लौटते समय मैं वहां उपलब्ध साहित्य भी अपने साथ लेता आया था, किंतु लौटने के पश्चात् मेरी स्थितियों में और अधिक बिगाड़ हो गया। स्थिति यहां तक आ गई। कि मुझे अपना व्यवसाय बंद कर एक ऐसे व्यक्ति के यहां नौकरी करने को विवश होना पड़ा जिसने कभी मेरे व्यवसाय की उन्नति के दिनों में मेरे साथ रहकर कार्य सीखा था। यह मेरे लिये घोरतम अपमान की स्थिति थी, लेकिन परिवार की जिम्मेदारियों के बोझ का ध्यान करके मैं जीवन को समाप्त भी तो नहीं कर सकता था।

अपने ममेरे भाई के पास से लौटने के बाद यह लाभ मुझे अवश्य हुआ कि जो साधना साहित्य मैं अपने साथ लाया था, उसे पढ़कर मन में यह बात जम गई थी कि यदि मेरी समस्याओं का जड़ से निदान हो सकता है तो केवल इन्हीं बगलामुखी देवी की साधना द्वारा, किंतु उन पुस्तकों में वर्णित ढंग से साधना की जटिलता और विस्तार से घबरा कर मैंने उनमें सलंग्न होने की कल्पना भी नहीं की। **यह बात तो मैं मान चुका था कि जिस साधना को प्राचीन काल से ही अनेक विद्वानों, मांत्रिकों एवं तांत्रिकों ने एक स्वर**

से दारिद्र्यहंता और अनिष्ट को स्तम्भित कर देने वाली कहा है, तो वह मिथ्या नहीं हो सकती । तभी मेरे ममेरे भाई उन्हीं दिनों पुनः किसी कार्य वश मेरे नगर आये और मुझसे भेंट होने पर मैंने उनसे यही बात कही। मेरे ममेरे भाई मुझसे इस विषय में उस समय तो कुछ नहीं बोले किंतु उन्होंने मुझसे दूसरे ही दिन जोधपुर चलने के लिए, तैयार हो जाने के लिये कहा । मैं दूसरे ही दिन उनके साथ जोधपुर के लिये प्रस्थान कर गया। आयु में बड़े होने के कारण मैं उनसे कुछ स्पष्ट पूछ नहीं पा रहा था कि वे मुझे जोधपुर क्यों ले जा रहे हैं? रास्ते में जब ट्रेन में भीड़- भाड़ कुछ कम हुई तो उन्होंने खुद ही बताया कि वह मुझे जोधपुर में **डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी** के पास मिलाने ले जा रहे हैं क्योंकि वे एक प्रख्यात ज्योतिषी के साथ - साथ तंत्र- मंत्र, आयुर्वेद, हस्तरेखा जैसी कई विधाओं के ज्ञाता हैं और जिन विकट स्थितियों में उन्होंने मुझे घर में जूंझते देखा, उससे उन्होंने एक क्षण में निश्चय कर लिया था कि अब मेरा उद्धार केवल गुरु - कृपा से ही संभव है।

जोधपुर पहुंचने पर जब हम पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी से मिले तो उन्होंने मेरी कठिनाइयां सुन सर्वप्रथम मुझे गुरु दीक्षा देकर गुरु मंत्र जपने की आज्ञा दी, और कहा कि वे मुझे आगामी नवरात्रि के अवसर पर विशिष्ट ढंग से बगलामुखी साधना संपन्न कराएंगे जिसकी विशेषता यह होगी, कि उसमें एक लाख अथवा पांच लाख बगलामुखी देवी के मंत्र नहीं जपने होंगे वरन पूज्य गुरुदेव को ही आधार बना कर एक रविवार अथवा अधिक से अधिक पांच रविवार की साधना करने पर वह साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जायगी, और केवल सिद्ध ही नहीं होगी, शरीर में बगलामुखी देवी का ऐसा समाहितीकरण भी हो जायेगा कि फिर बगलामुखी देवी स्वयं ही पग -पग पर रक्षा करती हुई चलेंगी। समस्त दुख दारिद्र्य, अपमानजनक स्थितियां, पीड़ा , क्लेश , तिरस्कार, भय और षडयंत्रों का समूल विनाश तो कर ही देगी। नवरात्रि आने में लगभग २० दिन शेष रह गये थे, जिससे मैंने वापस घर न जाकर वहीं रहते हुये गुरु साधना आरम्भ कर दी। पूज्यपाद गुरुदेव ने कृपा पूर्वक अपने सामीप्य में ही रहने का आदेश दे दिया था। नित्य प्रति गुरु मंत्र जप, गुरु - साधना एवं पूज्यपाद गुरुदेव के साक्षात् दर्शन होते रहने से मेरे मन के कलुष और कल्मष धुलने लग गये और धीरे - धीरे मेरा चित्त बगलामुखी देवी का ध्यान छोड़ गुरु चरणों में ही रम गया। **अपने घोर व्यस्ततम क्षणों में भी अवकाश मिलने पर पूज्यपाद गुरुदेव मुझे बुला कर साधनाओं से संबंधित अनेक सूत्र और ज्ञान संबंधी विवेचन स्पष्ट करते रहते, जिनकी गहनता और पवित्रता में मैं निरन्तर डूबता हुआ, स्वयं का साक्षात गंगा में ही अवगाहन करने का सुख पाता रहता था।**

फिर वह शुभ नवरात्रि भी आ गई जिसमें उन्होंने मुझे पूज्यपाद गुरुदेव की बताई विधि से गुरु चरणों को ही आधार बना कर विशिष्ट ढंग से बगलामुखी साधना सिद्ध करने की आज्ञा व अनुमति दी थी। वास्तव में तो मेरी साधना उनकी अनुमति और आशीर्वाद के पश्चात तत्क्षण सिद्ध हो ही गई थी, अब तो शेष रह गई किसी औपचारिकता व विधि- विधान का पालन करना ही लग रहा था। उस वर्ष संयोग से नवरात्रि के प्रारम्भिक दिनों में ही रविवार था। *मैंने रविवार की प्रातः आम प्रचलित पद्धति, जिसमें पीत रंग को प्रमुखता दी जाती है, से अलग हट कर शुभ्र श्वेत वस्त्र धारण किये और साधना भवन में श्वेत आसन पर बैठा, क्योंकि इस साधना के आधार थे पूज्य पाद गुरुदेव जो अपने समस्त स्वरूप में शुभ्र - श्वेत हैं।* तीन क्रमों की यह साधना जो प्रातः, मध्याह्न एवं सायं को सम्पन्न की जाती है, को मैंने संकल्प पूर्वक करना आरम्भ किया। मेरे सामने पूज्यपाद गुरुदेव की चरण पादुका स्थापित थी। मैंने सभी यंत्र - चित्र आदि का सामान्य पूजन कर पूज्य गुरुदेव की बताई विधि से साधना आरम्भ की।

साधना प्रारम्भ किए कुछ ही क्षण बीते होंगे कि साधना भवन का दरवाजा खुला और एक विशाल किंतु सौम्य मुख मुद्रा का देव पुरुष जैसा आभासित होता व्यक्ति साधना भवन में प्रविष्ट हुआ और चुपचाप एक ओर बैठ गया। कभी साधनाओं की विवेचना के क्रम में पूज्यपाद गुरुदेव ने एक गोपनीय सूत्र दिया था कि किसी भी महाविद्या साधना में यदि कभी ऐसा हो कि कोई विशाल भयानक आकृति प्रकट हो अथवा उसका बिम्ब आंखों के सामने उपस्थित हो जाए, तो विचलित नहीं होना, क्योंकि यह साधना में सफलता के संकेत हैं। प्रत्येक महाविद्या से संबंधित एक विशिष्ट भैरव होते हैं जिनकी उपस्थिति साधना में सफलता का पूर्व संकेत होती है। मैंने मन ही मन उस देव - आकृति को प्रणाम किया और अपनी साधना में तल्लीन रहा। बीच में ध्यान किंचित भंग होने पर मैंने पाया कि वह भी ठीक इसी भांति साधना क्रम में तल्लीन हैं, जिस प्रकार मैं। वह मेरे ही क्रमों का अनुसरण कर रहे थे। प्रातः कालीन क्रम समाप्त होने के पश्चात मैंने कुछ देर विश्राम किया और द्वितीय क्रम के लिये अपने को सचेत किया। दूसरा क्रम भी मेरा निर्विघ्न एवं आह्लाद पूर्वक संपन्न हुआ। अब तीसरे क्रम की बारी थी। बाहर का पूरा वातावरण शांत हो चुका था और सायं का वातावरण था, साधना कक्ष में धीरे - धीरे हल्का अंधेरा उतर आया जिसमें निस्तब्ध मैं और वह बैठे रहे। मेरे मन में रोमांच और कौतूहल था, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह भी बताया था कि इसी क्रम के अंतिम चरण में मां भगवती बगलामुखी साधक के शरीर में समाहित होती ही हैं। मैंने पूर्व में कभी कोई महाविद्या

शेषांश पृष्ठ ७६ पर

जीवन का सार छुपा है महा विद्या साधनाओं में

दस महाविद्याएं ही ब्रह्मांड में सृजन ,नियंत्रण, आकर्षण - विकर्षण तथा परिवर्तन की क्रियाएं सम्पन्न करती हैं। यही प्राणियों के शरीर को दस कलाओं के रूप में धारण किये रहती हैं। इनमें से तीन महाविद्या साधनाएं सर्वथा प्रामाणिक और संक्षिप्त साधना विधि के साथ . .

देवी का स्वरूप अपने आप में इतना अधिक विस्तृत है कि उनका एक ही स्वरूप में पूजन करने के स्थान पर, उनके विविध स्वरूप परिकल्पित किए गए। पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार जब सती को यज्ञ में उनके पति शिव द्वारा जाने से रोका गया, तब उन्होंने उग्र रूप धारण कर लिया जिसे देखकर शिव विचलित हो गए और वहां से हटने लगे। जिन्हें रोकने के लिए देवी ने दसों दिशाओं में अपनी ही अंगीभूत दस शक्तियों को प्रकट किया और यही दस महाविद्यायें - **काली, तारा, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, कमला, त्रिपुर भैरवी, भुवनेश्वरी, त्रिपुर सुन्दरी , मातंगी** हैं। कथात्मक वर्णन के अतिरिक्त जो तथ्य प्रतीत होता है वह यह कि देवी की विविध शक्तियों को समझ कर, उनकी उपासना के दस विशिष्ट ढंग निर्धारित किए गए, जिनमें उग्र स्वरूप भी हैं और सौम्य स्वरूप भी। जीवन की प्रत्येक कटु व मधुर स्थितियों की धारणा सुस्पष्ट रख कर पूरे जीवन को सवांरने का एक प्रयास किया गया। अपनी - अपनी योग्यता और पूर्व जन्म से चले आ रहे संस्कारों के अनुरूप, देवी के किसी एक स्वरूप से व्यक्ति स्वयं को जोड़कर साधना में सफलता प्राप्त करता है। व्यक्ति किस परंपरा से आ रहा है और कौन सी साधना उसके अनुकूल है इसका सही - सही निर्धारण तो केवल श्री सद्गुरु देव ही कर सकते हैं, किन्तु भौतिक आवश्यकताओं और मानसिक अभिरुचियों के अनुकूल व्यक्ति स्वयं भी किसी महाविद्या साधना में प्रवृत्त हो ही सकता है।

महाविद्या साधना को लेकर भयभीत होने की अथवा यह समझ लेने की कि ये केवल उच्च कोटि के साधकों के जीवन का विषय है ,यह उचित नहीं है और प्रायः साधक महाविद्या साधना के सरलतम स्वरूप द्वारा शक्ति प्राप्त कर अपने जीवन को सवांरने से वंचित रह जाता है। इसी बात की आवश्यकता को अनुभव करके यहां तीन महाविद्या साधनाएं -- **भुवनेश्वरी, बगलामुखी, षोडशी** अपने संक्षिप्त विवरण और सरलतम साधना विधि सहित प्रस्तुत की जा रही हैं जिससे साधक अपने जीवन की आवश्यकता और प्राथमिकता के अनुकूल स्वयं साधना का चयन करके लाभ उठा सके। प्रत्येक साधना के साथ किया जाने वाला 'ध्यान' महत्व - पूर्ण होता है और साधक के लिए आवयश्क है कि वह जिस साधना को करे, उसके ध्यान का नित्य प्रति एक बार उच्चारण अवश्य करे। यदि वह सभी महाविद्याओं के ध्यान का उच्चारण मात्र नित्य प्रति कर सके तो यह और अधिक फलदायक सिद्ध होता है।

भुवनेश्वरी साधना

भुवनेश्वरी देवी, देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से भगवती महा सरस्वती का ही स्वरूप है, और अपने प्रभाव में महालक्ष्मी का प्रभाव समाहित किये हैं। आकस्मिक धन प्रदान करने की भगवती भुवनेश्वरी से अधिक शक्ति किसी भी देवी या देवता में नहीं है। यह गृहस्थ सुख की पूर्णता से प्रदान करने में समर्थ है तथा वर्षों से चली आ रही गृह कलह और वैमनस्य की स्थितियों को केवल भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। जिस स्त्री अथवा पुरुष की आयु का एक बड़ा भाग निकल जाने पर भी विवाह न हुआ हो उसके लिये यही साधना प्रभावकारी है। एक प्रकार से यह पूरे जीवन को संवारने की साधना है जो बाल, वृद्ध ,युवा सभी को उसकी आयु और आवश्यकता के अनुसार समुचित फल प्रदान करती है।

ध्यान :

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखींवरदांकुशपाशांभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।

साधना विधि :

सम्पूर्ण विश्व का भरण - पोषण करने वाली त्रिभुवन की नियंता भुवनेश्वरी की साधना से अभाव रह ही क्या सकता है? रक्त वर्ण के वस्त्रों को धारण करने वाली इन भगवती को सर्वाधिक प्रिय है 'श्वेत रंग' और इसी अनुरूप इस साधना में श्वेत रंग का ही प्रयोग किया जाता है, चाहे वह श्वेत वस्त्र हो या आसन अथवा अर्पित किये जाने वाले पुष्प। किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को प्रातः सात बजे से पहले ही पहले, स्वच्छ शुद्ध हो, यथोचित वस्त्र, आसन ग्रहण कर सामने ताम्र पात्र में **भुवनेश्वरी महायंत्र** स्थापित कर उसका पूजन कुंकुंम , श्वेत पुष्प एवं अक्षत से कर शुभ्र श्वेत **स्फटिक मणि माला** से ही निम्न भुवनेश्वरी महा मंत्र की ११ माला अथवा २१ माला मंत्र का जप करें। भुवनेश्वरी का मूल मंत्र तो " **ह्रीं** " ही है किन्तु गृहस्थ जीवन में सभी दृष्टियों से सफल रहने के लिए अथवा विद्या के क्षेत्र मे सर्वोच्च रहने के लिए यदि इसमें वाग्भव बीज " **ऐं** " एवं लक्ष्मी बीज "**श्रीं**" का संयुक्तिकरण कर दिया जाता है तो इस प्रकार इन दो बीजों से सम्पुटित "**ह्रीं**" मंत्र का सौन्दर्य त्रिगुणित हो जाता है इस प्रकार यह मंत्र है --

मंत्र :

" ऐं ह्रीं श्रीं "

यंत्र को तो साधना स्थान में स्थापित रखें और माला को गले में धारण कर सकते हैं। केवल एक भुवनेश्वरी साधना से ही जीवन की प्रत्येक स्थिति का निराकरण संभव है, जिसका विस्तृत प्रयोग पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे।

बगलामुखी साधना

शत्रु- हन्ता इन देवी के विषय में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि साधना जगत से थोड़ा बहुत परिचय रखने वाला साधक बगलामुखी के नाम से परिचित होता ही है। कैसा भी विकट शत्रु जो आकर सामने खड़ा हो गया हो, बगलामुखी साधना के माध्यम से वह यों समाप्त हो जाता है, ज्यों घने काले बादलों को फाड़कर सूर्य अपनी तेजस्विता दिखा ही देता है।

ध्यान : **जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं, वामेन शत्रून परिपीडयन्तीम्।**
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

साधना विधि : बगला उपासना में पीत वस्त्र, पीत आसन, पीत पुष्प का ही विधान है। यद्यपि माला भी पीत अर्थात हल्दी की होनी चाहिए किन्तु **पीले हकीक की माला** भी समान उपयोगी सिद्ध होती है। **बगला मुखी यंत्र** स्थापित कर ऐसी माला से प्रतिदिन एक माला मंत्र जप प्रातः काल करना पूर्ण फलदायक होता है। यह नित्य प्रति की साधना है और जो इसमें पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक हों उनके लिए आवश्यक है वे विधिवत गुरुदीक्षा लेकर गुरु सामीप्य में रहकर इस विद्या के गूढ़ रहस्यों को समझ कर साधना में प्रवृत्त हों।

मंत्र : **" ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं फट् "**

षोडशी साधना

जीवन में यदि विजय यात्रा प्रारम्भ करनी है, यदि सैकड़ों हजारों के दिल पर छा जाना है, राजनीति के क्षेत्र में शिखर को चूम लेना है या आकर्षण सम्मोहन की जगमगाहट से अपने आप को भर लेना है । यदि पति सुख में न्यूनता है और पति का हृदय जीत लेना है अथवा पूर्ण पौरुष प्राप्त कर जीवन में आनन्द का उपभोग करना है तो भी षोडशी साधना की उपादेयता निर्विवाद रूप से सिद्ध है।

ध्यान : **बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।**
पाशांकुशवरांचापं धारयन्तीं शिवां भजे।।

साधना विधि : शुक्रवार की रात्रि में पीले रंग के आसन पर पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुंह करके बैठें, पीले रंग की रेशमी धोती धारण करें और सोलह चावल की ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर एक - एक शुद्ध घी का दीपक स्थापित करें। बाजोट पर पीले रंग का रेशमी वस्त्र बिछाकर सम्मान पूर्वक तांबे के पात्र में **षोडशी महायंत्र** स्थापित करें, उस पर पुष्प की पंखुड़ियां, कुंकुम, अक्षत चढ़ाएं और दूध का बना प्रसाद अर्पित करें, इसी प्रकार सभी सोलह ढेरियों का संक्षिप्त पूजन करें, तथा **राज राजेश्वरी माला** से निम्न मंत्र की १६ माला मंत्र जप करें--

मंत्र : **" ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं "**

मंत्र जप के उपरान्त प्रसाद स्वयं ग्रहण कर लें, इसे बांटे नहीं और जब भी अवसर मिले उपरोक्त मंत्र का एक माला मंत्र जप अवश्य करें। ♦

और ये गृहस्थ साधक. . .

परम पिता श्री गुरु के चरणों में बार - बार प्रणाम,

पूज्यवर आपके पावन चरणों में जो अनन्त वात्सल्य की अनुभूति मुझे प्राप्त होती है, मैं प्रकट नहीं कर पाता, जब आप इस अपराधी जड़ जीवन पर कभी आप सरलता से दो शब्द भी कह देते हैं, तो उस दिन खुशी का नशा छा जाता है। एकान्त वातावरण में कहीं आंसू छलकने लगते हैं, गला रुंध जाता है, फिर आपकी ही दया का झोंका यों आकर मेरे मन को छू जाता है, जैसे मां ने आंसू पोंछकर चुप होने को कहा हो ऐसा लगता है। जो वात्सल्य है वह पिता के रूप में आपकी गम्भीरता के भीतर ही छुपा हुआ है। मेरी इन्द्रियातीत चेतना का विकास तो अभी नहीं हुआ। मैं आपको अभी विशाल रूप में क्या समझूंगा? आपका आकर्षण, वात्सल्य, सम्मोहन यह सब क्या है। किसमें होते हैं ऐसे गुण, निश्चय ही आप पिता नहीं क्योंकि मां होती है ऐसी, देवी होती है ऐसी, इसलिए तो मैं इन चरणों में अनन्त प्रणाम करने को आतुर हूं . . . आश्विन त्रयोदशी को गुरु दिवस है और उसके पहले ही मैं महाकाल संहिता का पूजन विधान समझ लूं और गुरु चैतन्य साधना कर आपसे चैतन्य दीक्षा ले लूं।

यही मेरी आगे की कामना है।

आपका शिष्य

प्राण नाथ धवन
प्राईवेट सेक्रेटरी लोकसभा
अध्यक्ष पार्लियामेंट हाउस
नई दिल्ली

पूज्य गुरुदेव ,

चरण स्पर्श,

वर्षों से पुत्र की कामना के साथ
पास आता रहा। एक बार पुत्रेष्टि मंत्र की साधना आप
द्वारा एवं पत्नी के द्वारा करवायी। यह साधना सि त
९१ में आपने बताया था। हम लोगों ने निय
पूर्वक साधना सम्पन्न की। ५ - ६ माह में कुछ बात
न होते देख हम दोनों ने सोचा कि ५०-५५ की उम्र ह
के कारण अब संभव ही नहीं है। सन् ९३ जनवरी में ही
का हो चुका था। ११ जुलाई १९९३ को मेरी पत्नी ने एव
करने के एक वर्ष के भीतर ही गर्भ का ठहरना एवं उ
आपके आशीर्वाद का ही फल था। गर्भावस्था के बीच
को दीक्षा प्रदान कर चैतन्य भी आपने किया। एक दिन ज
कुण्डलिनी के जाग्रत होने की बात की तो हम दंग रह गए
स्थिति में है, और उन्हें गर्भस्थ शिशु के ऊपर किए गए प्र

मंत्र - तंत्र आज भी पूर्ण रूप से प्रभावी है, अ
की --

आपकी कृपा स्नेह से हम सिंचित होते रहें .

बी.

पूज्य गुरुदेव नारायणदत्त श्रीमाली ज्यू,

सादर प्रणाम,

मैं आपका एक परम शिष्य हूं, पहली बार मैंने फोटो के माध्यम से सामान्य दीक्षा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प्राप्त किया। नौरात्र में आने का उपाय कर रहा था, लेकिन बाधाओं से नहीं आ पाया, फिर आपको पत्र लिखा और मेरी सारी बाधा अड़चन हट गया और मैंने ६ सितम्बर को आपका दर्शन किया। मैं हर्ष विभोर हो गया, क्योंकि आपके पास मैंने ज्ञान दीक्षा, शाम्भवी दीक्षा, विद्या दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, शिष्याभिषेक दीक्षा और शक्तिपात दीक्षा प्राप्त की। जब मैंने शक्तिपात और कुण्डलिनी जागरण दीक्षा प्राप्त किया तो उतने क्षणों के लिए मेरा सोच - विचार रुक गया और मन में जो उथल - पुथल लेकर आया था, वह सब मिट गया! मैं मन में जैसी सिद्धि और शांति लेने के लिए आया था। वह मुझे एक मिनट में मिल गया। मेरा दृढ़ निश्चय था और उससे भी बड़ा गुरुदेव का आशीर्वाद। मुझे ऐसे लगा जैसे मेरे शरीर में एक रास्ता बन गया और उसमें प्रकाश ही प्रकाश उतर आया। मेरा शरीर एकदम से शीतल हो गया और मन में खुशी दौड़ गया। मैं गुरुजी का सेवक ऐसे गुरु को बार - बार प्रणाम करता हूं। नेपाल जाने से पहले मैं अपना भावना इन टूटे फूटे शब्दों में व्यक्त कर रहा हूं। मुझे हिन्दी लिखना, बोलना ठीक से नहीं आता, नहीं तो मैं अपना अनुभव पूरा बताकर जाता।

आपका प्रिय

कृष्णमणि अधिकारी,
काठमांडू

मैंने दो वर्ष पहले पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली थी, मैं उस समय पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं से घिरा पड़ा था। मैंने फोन द्वारा और पत्र द्वारा जोधपुर से सम्पर्क किया और वहां से मुझे निरंतर गुरु मंत्र जप करने का आदेश प्राप्त हुआ, और साथ ही साथ मेरी त्राटक करने की रूचि भी जग गयी। गुरुमंत्र जप से और त्राटक से मेरी समस्याएं धीरे - धीरे सुलझने लगी और फिर मेरी अपने आप इच्छा जगी कि क्यों न मैं गुरु जी के चरणों में बैठकर आगे का जीवन सुधार लूं। उमर बढ़ने पर तो सभी लोग धरम - करम की ओर बढ़ते हैं, लेकिन तब तो शरीर ढल गया होता है। यही अवस्था होती है जब हम ऐसे गुरु के चरणों में बैठकर दीक्षा लें, और साधना करें, अपने दोनों जीवन सवांर लें। मैं यही सोचकर गुरुजी के पास आया और उनसे प्रार्थना की कि -- " आप ही मेरा भला बुरा सोचकर, मेरी दोनों जिन्दगी संवार दो" गुरुजी ने मुझे ज्ञान दीक्षा और सम्मोहन दीक्षा देने की बात सोची और मुझसे तैयार होने के लिए कहा और अभी ७ सितम्बर ९३ को गुरुजी ने मुझे एक साथ ही दोनों दीक्षाएं दे दी। पहली दीक्षा मेरे घर बार की जिन्दगी और रोजगार के लिए, वहीं दूसरी दीक्षा 'ज्ञान दीक्षा' मेरे रूहानी तरक्की के लिए। लौटकर मैं अपनी दवा की दुकान को और भी ज्यादा चलता पा रहा हूं। इतना ज्यादा कि मुझे खुद चमत्कार लगने लगा है। लोगों से मेरा हेलमेल बढ़ गया है, यह सब गुरुजी की ही कृपा है।

देवेन्द्र सिंह
रेणु मेडिकल स्टोर
जी.टी. रोड, टडारी
लुधियाना, पंजाब

साथ आपके
आपने मेरे
सितम्बर
नियम
बात घटित
उम्र हो जाने
में ही पत्नी ने गर्भ की सूचना दी, जो कुछ माह
ने एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया। साधना
एवं उसका पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना यह तो
बीच भी आपने निगरानी रखी। गर्भस्थ बालक
दिन जब हमारे परिचित सज्जन ने इस बालक के
रह गए, आध्यात्मिक रूप से वे सज्जन अच्छी
गए प्रयोग का आभास तक नहीं था।
है, आवश्यकता है सद्गुरु की, एवं उनकी कृपा

रहें . . . यही हमारी प्रार्थना है।

आपका मानस पुत्र
अरुण श्रीवास्तव
बी.- १६७, दूसरा माल, ईस्ट ऑफ कैलाश
नई दिल्ली-६५, फोन : ६८४७७००

मैं अपनी शारीरिक कठिनाइयों से बहुत अधिक दुखी हो गया था और रोगों के चलते हृदय से भी बहुत दुखी था। गुरु दीक्षा तो मैंने ले ली थी। लेकिन चाहकर भी साधना में बैठ नहीं पा रहा था जबकि मेरी रुचि साधना करने में बहुत ज्यादा थी। मैंने गुरुजी से फोन पर बात करी और अपना कष्ट बताया गुरुजी ने मुझको बिना समय गवाये दिल्ली आने की आज्ञा दी और मैं भी अपनी पत्नी के साथ सीधा दिल्ली आ गया। मैं कुछ सोच कर नहीं आया था, लेकिन दिल्ली पहुंचकर मैंने यही सोचा कि जब आज मेरे सामने ऐसे शिष्ट गुरु उपस्थित हैं तो रोज - रोज की उलझनों में उलझने से क्या लाभ? और मैंने एक क्षण में ही दीक्षाएं- समय दीक्षा, शिष्याभिषेक दीक्षा, आचार्याभिषेक दीक्षा लेने का निर्णय कर गुरुदेव से प्रार्थना की और गुरुदेव को भला अपने शिष्य को देने में आपत्ति भी क्या हो सकती है। गुरुजी ने मुझे अभी पिछले महीने ही यह दीक्षा दी उस समय तो मैं अस्वस्थ होने के कारण कोई विशेष अनुभूति नहीं कर सका बस इतना ही लगा कि मेरे ऊपर से कोई दबाव हट गया है, लेकिन लौटने के बाद से फिर मुझे दवाइयां लेने की जरूरत नहीं रह गई और मेरे स्वास्थ्य में धीरे - धीरे सुधार आने के साथ - साथ कई और घरेलू समस्याएं भी सुधरती चली गई। हम दोनों पति- पत्नी गुरुजी के चरणों में नतमस्तक हैं, जल्दी ही मैं आगे की दीक्षाएं लेने के लिए और पत्नी को भी उचित दीक्षाएं दिलवाने का विचार बना चुका हूं।

बनवारी लाल शर्मा
कादरगंज दादरी,
गाजियाबाद

छिन्नमस्ता साधना

शत्रु पर प्रबल प्रहार किया जा सकता है

सुबह -सुबह मैं अपने घर में बैठा पूजा कर रहा था कि तभी मुझे रोने की आवाज सुनायी दी। जरा ध्यान से सुना तो पता चला कि यह तो मेरी छोटी बहन सौम्या है। मैंने जल्दी- जल्दी पूजा सम्पन्न की और पूजा कक्ष से बाहर निकल कर जैसे ही आया, सौम्या दौड़ती हुयी आयी और मेरे सीने से लग फूट -फूट कर रोने लगी, "भइया! मुझे बचा लो। वह जरूर मेरा घर बर्बाद कर के रहेगी।" मैंने उसे थोड़ा ढांढस दिलाया और कहा कि पहले तू शान्त हो जा फिर बाकी बातें करेंगे। मैंने अपनी पत्नी से कहा इसे ले जा और इसका हाथ मुंह धुलाकर चाय पिला। थोड़ी देर बाद जब सौम्या अपने- आप को नियंत्रित कर चुकी तब मैंने उससे पूछा, " क्या बात है? अब बता। " सौम्या मेरे पास आकर बैठ गयी, जब मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा तो पाया वह कितना कुम्हला गया है। अभी पिछले साल ही तो नितेश से इसकी शादी की थी। अच्छे खानदान का लड़का है और डिग्री कॉलेज में लेक्चरार के पद पर नियुक्त है। नितेश अत्यंत व्यवहार कुशल और विनम्र व्यवहार का युवक है। कितनी खुश थी सौम्या, जब ससुराल से पहली बार मायके आयी थी, और आज इस तरह चले आने का कारण मैं समझ नहीं पाया? सौम्या ने कहना प्रारम्भ किया - " नितेश बहुत अच्छे इन्सान हैं, मेरी प्रत्येक इच्छा और भावनाओं का ध्यान रखते थे, लेकिन इधर एक महीने से मुझसे बात तक नहीं करते। मैंने कई बार कारण जानना चाहा तो टाल जाते हैं। मैं पहले से भी अधिक उनका ध्यान रखने लगी, लेकिन नितेश का व्यवहार मेरे प्रति परिवर्तित नहीं हुआ, तभी मुझे पता चला कि नितेश अपने पड़ोस में रहने वाली लड़की के तरफ आकर्षित हो रहा है। वह लड़की भी अक्सर मेरे घर आ जाती है। जबरदस्ती नितेश को अपने साथ लेकर चली जाती है, नितेश भी उसके पीछे इस चले जाते हैं जैसे उनका अपना और कोई है ही नहीं।

> **दस महाविद्याओं की तीव्रतम साधना, जिसे ऊंचे से ऊंचा साधक भी सम्पन्न करता है अपनी साधना के पूर्णता के क्रम में. . .**
>
> **ऐसी ही तीव्र साधना है प्रबल वशीकरण निवारक प्रयोग, साधना जगत का एक नया आयाम . . .**

मैंने सौम्या से कहा-- उस लड़की के बारे में और क्या जानती हो, पता करके बताओ। कुछ दिन बाद सौम्या वापस आयी और बताने लगी -- उसकी उम्र पैंतीस वर्ष है। शादी नहीं हुई है मां दुर्गा की अनन्य साधिका है। दुर्गा की साधना करती है और पूरी नवरात्रि भर बिना पानी पिये व्रत रखती है, पूरा का पूरा समय साधना कक्ष में व्यतीत करती है। इतना

सुनकर मैं समझ गया कि उसने अवश्य कोई तीव्र वशीकरण प्रयोग नितेश के ऊपर कर दिया है। मैंने सौम्या से नितेश की एक फोटो ली और समय निकाल कर लगभग एक हफ्ते बाद पूज्य गुरुदेव से जोधपुर में जाकर भेंट की। पूज्य **गुरुदेव के सामने चित्र जाते ही उन्होंने सब कुछ बताना प्रारम्भ कर दिया जैसे सामने पर्दे पर कोई घटना देखते जा रहे हों।** उन्होंने स्पष्ट बताया कि इसके ऊपर ऐसा तीव्र वशीकरण प्रयोग किया गया है कि यह उस स्त्री के चक्कर में तो पड़ा ही रहेगा, साथ ही तुम्हारी बहन से भी तलाक ले लेगा। मेरे लिए ऐसा सुनना वज्राघात सा था, क्योंकि सौम्या पर मैं अत्यधिक स्नेह रखता था। मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की -- जैसे भी हो, जो भी उपाय हो, लेकिन आप ऐसा न होने दीजिए। पूज्य गुरुदेव ने मुझसे कहा -- तुमने भी तो अनेक साधनाएं कर रखी हैं क्यों नहीं उनका प्रयोग करते? मैंने प्रार्थना की -- मैं तो कुछ नहीं समझ पा रहा, मेरी बुद्धि कुछ काम नहीं कर रही है। आप ही कुछ उपाय बताएं और, *पूज्य गुरुदेव ने मुझे दस महाविद्या में से सर्वाधिक तीव्र छिन्नमस्ता देवी का प्रयोग करने की आज्ञा दी।* छिन्नमस्ता साधना तो मैंने पहले भी पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में की थी, लेकिन इस बार उन्होंने उस पर आधारित ऐसा प्रयोग मुझको समझाया जो तीव्र वशीकरण को समाप्त करने में लाभकारी है।

घर आकर मैंने उसी विधि से प्रयोग करना आरम्भ कर दिया, अभी प्रयोग शुरु किये तीन दिन ही हुए थे कि सौम्या आकर बोली, "भैया वह मेरे घर आयी थी, मुझे धमकी देकर गयी है कि अपने भाई को जाकर मना कर दे, नहीं तो तेरे भाई का और तेरा बहुत ही बुरा हाल होगा। भैया अब मेरा क्या होगा?"

मैंने सौम्या से कहा, "घबराती क्यों है पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद मेरे साथ है, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।" सौम्या को मैंने सुरक्षा की दृष्टि से अपने साथ अनुष्ठान में बैठा लिया और पूर्णाहुति के दिन तक उसे भी अपने साथ बैठाए रखा। जिस दिन पूर्णाहुति प्रयोग सम्पन्न हुआ, उसी दिन शाम को नितेश मेरे घर आया और एकदम निढाल होकर बिस्तर पर गिर पड़ा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और ऐसा लग रहा था कि जैसे उसका सारा खून निचोड़ दिया गया हो। मैंने भी सौम्या को उससे कुछ बोलने को मना कर दिया और नितेश को चुपचाप आराम करने दिया। दो दिन बाद वह पूर्ण रूप से मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ दिखाई दे रहा था। सौम्या से भी वह पहले की तरह बात कर रहा था। ऐसा स्पष्ट लग रहा था कि उसके ऊपर से कोई दबाव हट गया है और वह सहज रूप से पहले जैसा ही हो गया है। कुछ दिन तक वे दोनों मेरे घर रहे और फिर वापस अपने घर चले गये। आज उनका सुखी पारिवारिक जीवन है तथा एक पुत्र भी है। दोनों के जीवन में फिर कोई ऐसी अलग करने वाली स्थिति आयी ही नहीं।

. . . भइऽ ऽ ऽ या ! मुझे बचा लो . . . उस दुर्धर्ष साधिका पर नियंत्रण छिन्नमस्ता साधना के अतिरिक्त किसी अन्य विधि से संभव ही नहीं था क्योंकि उसे अपनी शक्ति पर . . .

बाद में जब मैं गुरुदेव से मिला तो उन्होंने बताया कि **छिन्नमस्ता के वशीकरण निवारण प्रयोग के कारण उस साधिका की सारी शक्तियां समाप्त हो गयी** और ऐसा वातावरण बन गया कि भविष्य में भी कोई वशीकरण प्रयोग सफल नहीं रहे, क्योंकि उस साधिका के ऊपर छिन्नमस्ता साधना के अतिरिक्त किसी अन्य साधना द्वारा नियंत्रण किया ही नहीं जा सकता था। उसने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया था अतः उस शक्ति का नष्ट होना आवश्यक हो गया था।

मैं जिस विधि से लाभान्वित हुआ और **जिसके प्रयोग से मेरी बहन का जीवन सुधरा उसको प्रस्तुत करना मेरा कर्त्तव्य बन जाता है ,** जिससे

सोलह बीज मंत्रों से निर्मित देवी छिन्नमस्ता का मंत्र. . . किसी भी अन्य साधना की अपेक्षा तीव्र गति से प्रभाव देने में समर्थ। माया बीज, काम बीज, इन्द्र बीज . . . सभी कुछ तो समाहित है इसमें . . .

आज समाज में किये जा रहे वशीकरण प्रयोगों के विरुद्ध एक निवारक प्रयोग का ज्ञान भी समाज में रहे। जिससे कोई उनका अनुचित लाभ या उनके द्वारा कोई बलात् गलत ढंग से कार्य न ले सके।

छिन्नमस्ता साधना विधान --

छिन्नमस्ता साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और यह ध्यान रहे कि रात्रि के प्रथम प्रहर के पश्चात अर्थात १० बजे के बाद ही साधना प्रारम्भ करें, क्योंकि अर्द्ध रात्रि का समय इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है।

छिन्नमस्ता साधना किसी भी माह के कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से अष्टमी तक, किसी भी तिथी को प्रारम्भ की जा सकती है। साधक रात्रि को १० बजे स्नान कर काली धोती धारण कर काले ऊनी आसन पर बैठे, साधना कक्ष का दरवाजा बंद कर दे तथा ध्यान रखे कि साधना के बीच में कोई विघ्न न उपस्थित हो। इस साधना में विशेष रूप से आवश्यक यंत्र **छिन्नमस्ता यंत्र** प्राणप्रतिष्ठा युक्त होने के साथ ही साथ **"ह्रीं"** बीज मंत्र से सम्पुटित होना चाहिए तथा सामने छिन्नमस्ता देवी का चित्र भी स्थापित होना आवश्यक है। यह मंत्र जप केवल छिन्नमस्ता देवी के मंत्रों से सिद्ध **'काली हकीक माला'** द्वारा ही किया जा सकता है क्योंकि इस विषय में शास्त्र कथन है कि --

अप्रतिष्ठित मालाभिर्मन्त्रं जपति यो नरः।
सर्व वद्विफलं वियात् क्रुद्धा भवति देवता।।

अर्थात् जो व्यक्ति असंस्कारित माला का उपयोग करता है, वह सभी प्रकार से हानि उठाता है तथा देवता उसके विरुद्ध कुपित हो जाते हैं। छिन्नमस्ता साधना में प्रयुक्त माला का किसी भी अन्य साधना में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

अपने सामने यंत्र, चित्र स्थापित कर कुंकुंग, पुष्प, अक्षत तथा काजल से पूजन करें। जो नैवेद्य अर्पित करें, उसे साधना के पश्चात केवल स्वयं ही ग्रहण करें। पूरे मंत्र जप के समय घी का दीपक एवं धूप अवश्य जलती रहे। इसके पश्चात आगे दिये गये विधान के अनुसार विनियोग करें, ध्यान रखें कि पूरे साधना काल में यंत्र एवं चित्र को अपने स्थान से विस्थापित नहीं करना है।

विनियोग -

ॐ अस्य शिरश्छन्ना मंत्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट छन्दः, छिन्नमस्ता देवता ह्रीं ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास -

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसे।
सम्राट छन्दसे नमः मुखे।
छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदये।
ह्रीं ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तयेनमः पादयोः विनियोगाया नमः सर्वांगे।

कर न्यास -

ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठये।
ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्यै।
ॐ वज्राय स्वाहा मध्यमयोः।
ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः।
ॐ ओं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठिकयोः।
ॐ अः सुरक्षा रक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतल कर पृष्ठयोः।

अंग न्यास -

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा।
ॐ ई सुखड्गाय वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा।
ॐ ऐं पाशाय कवचाय हूं स्वाहा।
ॐ ओं अंकुशाय नेत्र त्राय वौषट् स्वाहा।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा।

इस प्रकार न्यास सम्पन्न करने के बाद हाथ जोड़ कर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करें--

भावस्वन्मण्डल मध्यगांचित,
शिरश्छिन्नं विकीर्णालकम्।
स्फारास्यं प्रपिदगलत्स्व -
रूधिरंवामं करे विभ्रतीम।
याभासक्त रति स्मरोपरि
गतांसख्यो निजे डाकिनी
वर्णिनयो परि-दृश्य मोद कलितां
श्री छिन्नमस्तां भजे।।

मंत्र -

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वै रो च नी ये हूं हूं फट् स्वाहा।।

उपरोक्त १६ अक्षरों का छिन्नमस्ता मंत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसमें प्रत्येक बीज अक्षर चैतन्य है। यह ७ दिनों का प्रयोग है, प्रतिदिन ५१ माला मंत्र जाप करना आवश्यक है।

छिन्नमस्ता साधना में गुरु आशीर्वाद से एवं गुरु कृपा से साधक शीघ्र सफलता प्राप्त कर जीवन में विशेष सिद्धियों का स्वामी अवश्य ही बन जाता है। इस साधना में साधक को धैर्य और विश्वास से पूरा अनुष्ठान सम्पन्न करने की आवश्यकता है।

इस विशिष्ट निवारक प्रयोग की पूर्णाहुति के अवसर पर एक माला मंत्र जप करते हुए काली मिर्च के दानों की आहुति प्रत्येक मंत्र के साथ देने से कैसा भी तीव्र वशीकरण प्रयोग अथवा तंत्र प्रयोग किया गया हो, उसके प्रभाव में न्यूनता आती ही है एवं विशेष दशाओं में व्यक्ति पूर्ण रूप से दुष्प्रभावों से मुक्ति पाते भी देखे गये हैं।

प्रथम उद्घाटित

' दुर्गा के इस विशिष्ट कमला स्वरूप की साधना जीवन में सम्पन्न होने एवं दरिद्रता को नष्ट करने की साधना है और यही दुर्गा का सर्व सौभाग्य स्वरूप भी है जहां कमला है वहां विष्णु है वहीं गृहस्थ जीवन का आनन्द है . . . '

भगवती

ऋद्धि - वृद्धिकारि प्रियताम

धनवर्षिणि दुर्गा कमला स्वरूप

शक्ति तंत्र, शक्ति मत का जनसामान्य में जो अर्थ प्रचलित है, वह मारण, मोहन, उच्चाटन जैसी अभिचारिक क्रियाओं को लेकर ही है अथवा पंचमकारों से ही समझा जाता है, इसी से समाज में **शाक्त मत** के प्रति या तो दबी छुपी घृणा है या भय मिश्रित कौतूहल, समाज के सदस्य इसे अपने उपयोग की वस्तु न मानकर केवल किन्ही फक्कड़ों या तांत्रिकों के उपयोग की ही वस्तु मानते हैं, लेकिन यह धारणा गलत है। तंत्र तो एक पद्धति है जिसके अंतर्गत शक्ति का विधिवत उपयोग है और जिससे निश्चित रूप से कुछ प्राप्त किया जा सकता है ,चाहे वह आध्यात्मिक जगत की विषय वस्तु हो, अथवा लौकिक जगत की, चाहे साधना सिद्धियों का क्षेत्र हो अथवा दैनिक जीवन की कामनाओं के पूर्ति की बात। यह तो एक ऊर्जा के उपयोग की बात है इसका उपयोग करना हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम उसे किस प्रकार से उपयोग में लाते हैं। शक्ति तंत्र में साधना और सिद्धि पर विशेष जोर रहा, इसी से इस तंत्र के जो प्रयोग लौकिक पक्ष से संबंधित थे, उनका समुचित प्रकाशन केवल जन सामान्य के समक्ष ही नहीं शिष्य, साधकों और टीकाकारों के समक्ष भी अप्रकट नहीं रहा। तंत्र शब्द तनु -' विस्तारे' धातु एवं ' ष्ट्रन' प्रत्यय से बना है, जिसका तात्पर्य कई विषयों को विस्तृत करना, और इसी अनुरूप तंत्र का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा। **जीवन का कोई भी पक्ष तंत्र से अछूता नहीं है,** तंत्र का विस्तार केवल 'शक्ति' से संबंधित न रहकर अन्य तंत्रों के रूप में भी विकसित हुआ है। गाणपत्य तंत्र, वैष्णव तंत्र इत्यादि इसके उदाहरण हैं, फिर भी जिस रूप में तंत्र का सर्वाधिक विकास और प्रचार हुआ, वह

शक्ति तंत्र ही है। देवी के दस महाविद्या स्वरूपों में मां भगवती जगदम्बा का प्रत्येक स्वरूप पूर्णता से जीवन के किसी एक पक्ष विशेष से संबंधित है, चाहे वह जीवन में धन की बात हो, रोग नाश की बात हो, शत्रु संहार की बात हो, गृहस्थ सुख का विषय हो अथवा विद्या - विलास से संबंधित पक्ष हो। जीवन विविध स्वरूपों से पूर्ण बनता है और इसी कारण प्रत्येक पक्ष पर विशिष्टतया ध्यान देने के लिए विशिष्ट स्वरूप एवं विशिष्ट साधना पद्धति की रचना की गई।

जीवन का सर्वाधिक आवश्यक तथ्य

जब जीवन की चर्चा होती है तो प्रत्येक दशा में धन की बात ही सबसे पहले होती है। भले ही व्यक्ति के साथ कई प्रकार की समस्याएं चल रही हों, किन्तु उसे धन की बाधा व्याप्त हो तो वह अपने शरीर और मन के कष्टों को भी दूर रख कर सबसे पहले धन की बात करना, धन प्राप्ति का उपाय जानना ही पसंद करता है। जीवन की प्रत्येक समस्या तो नहीं, फिर भी अधिकांश समस्याएं धन के द्वारा ही दूर होती हैं। यह ठीक है कि जीवन में धन सब कुछ नहीं होता, लेकिन धन बहुत कुछ होता है। व्यक्ति का सारा चितंन, उसकी मानसिक श्रेष्ठता, उसके भावनाओं की ऊंचाई सभी कुछ उसकी आर्थिक स्थितियों पर ही आश्रित होती है, और जब धन की बात आती है, स्थायी सम्पत्ति और प्रचुरता की बात आती है तो मां भगवती जगदम्बे की विशिष्ट स्वरूप **'कमला महाविद्या'** की चर्चा करना नितांत आवश्यक हो जाता है। धन की प्राप्ति के तो अनेक उपाय हैं, अनेक प्रकार की साधनाएं हैं, लेकिन यही बात, यही उपाय मां भगवती जगदम्बे के शक्तिमय स्वरूप से जुड़ा हो और न केवल जुड़ा हो वरन उन्हीं का एक विशिष्ट स्वरूप हो तब असफलता कैसे आ सकती है?

मां जगदम्बा का विशिष्टतम स्वरूप

कमला महाविद्या की साधना वास्तव में महालक्ष्मी की ही साधना है, क्योंकि मां भगवती जगदम्बे के त्रिगुणात्मक स्वरूप का विस्तार उनकी दस महाविद्याओं में ही हुआ और उसमें से ही कमला महाविद्या उन्हीं के महालक्ष्मी स्वरूप की साधना है। जहां सामान्य रूप से महालक्ष्मी पूजन एवं साधना से सफलता प्राप्ति संदिग्ध हो, वहीं कमला महाविद्या की साधना से असंभव कि व्यक्ति दरिद्री अथवा हीन रह जाय। जिस प्रकार पद्मगंध छुपाये नहीं छुपती और आसपास का समस्त

कर्म शक्ति और भगवती दुर्गा की कमला शक्ति का समन्वय होता है तो उदय होता है आनन्द सूर्य . . .

वातावरण अपनी मधुर गंध श्रेष्ठता और दिव्यता से भर देती है, उसी प्रकार कमला महाविद्या की साधना भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आलोकित एवं सुगंधित कर देती है। इसे केवल एक मात्र धन प्राप्ति की साधना मानना ही पर्याप्त नहीं, क्योंकि यह तो एक ऐसी अद्भुत साधना है, जो कि अपनी सम्पूर्णता से व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त हो गई दरिद्रता, कायरता, कटुता और हीनता को समाप्त करने की शक्तिमय प्रक्रिया है और लक्ष्मी के अभाव में फिर व्यक्ति का यही तो स्वरूप शेष रह जाता है- हताश, निराश, चिड़चिड़ा और उदास, जो केवल शक्ति की विशिष्ट कृपा से ही समाप्त हो सकता है। **यह केवल एक साधना ही नहीं जीवन की एक अनिवार्यता है और इसी से व्यक्ति के जीवन में आ सकती है पूर्ण निर्भिकता और पूर्ण निश्चिंतता**। मानसिक शांति प्रदान करने की कमला महाविद्या से श्रेष्ठ कोई साधना ही नहीं। भगवान विष्णु की परामाया महालक्ष्मी की इस विशिष्ट साधना से साधक के जीवन में उसे लक्ष्मी तत्व की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही उसे स्वयमेव नारायणत्व भी प्राप्त होता है, क्योंकि लक्ष्मी - नारायणत्व अभेद जो है, और जहां नारायणत्व है, वहीं पौरुष है, क्षमता है, श्री है, एवं सुख -समृद्धि है। नारायण का ही दूसरा नाम है अनन्त और कमला महाविद्या के सिद्ध साधक को जीवन में अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है।

केवल प्रयोग ही नहीं

कमला महाविद्या केवल एक प्रयोग ही नहीं, यह केवल अपने स्वरूप में प्रयोग होते हुए भी सम्पूर्ण रूप से एक पद्धति है, किसी भी प्रयोग की तीक्ष्णता उसकी आकार- प्रकार से नहीं मापी जाती, उदाहरणार्थ एक छोटा सा अंकुश होता है और उसके माध्यम से विशालकाय हाथी वश में आ जाता है, उसी प्रकार कोई भी तीक्ष्ण साधना अपने प्रभाव में समर्थ और तुरंत फलदायक हो सकती है, आवश्यकता है केवल सही उपकरण एवं विशिष्ट मंत्र की, जो प्राण ऊर्जा से घर्षित कर उत्पन्न किया गया हो, और यह कार्य केवल सक्षम गुरु ही कर सकते हैं। उनकी इसी विशिष्ट क्रिया का अन्य स्वरूप है **'दीक्षा'**। जब साधना पद्धति तांत्रोक्त हो अथवा शक्ति साधनाओं से संबंधित हो तब तो ऐसे मंत्रों का प्राण ऊर्जा से सम्पर्कित होना अति-आवश्यक होता है, और आगे प्रस्तुत की जाने वाली मां भगवती जगदम्बे की शक्ति साधना का यही स्वरूप एवं ऐसा ही मंत्र है कमला महाविद्या का नाम आते ही उनके बारह विशिष्ट स्वरूपों का स्मरण करना भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उनका विराट स्वरूप इन्हीं बारह स्वरूपों से मिलकर ही बना है। इस साधना में जिस कमला महायंत्र की आवश्यकता पड़ती है उसे प्रत्येक स्वरूप के मंत्रों द्वारा प्राण

(शेष पृष्ठ ५० पर)

सिद्धाश्रम

जीवन की पूर्णता, जीवन का आनन्द और जीवन का सौन्दर्य यदि एक शब्द में समेटा जाए तो वह शब्द है 'सिद्धाश्रम'। एक ऐसी आध्यात्मिक पुण्यस्थली जहां पहुंचने का स्वप्न प्रत्येक सन्यासी , ऋषि व साधक संजोये रहता है। उच्चकोटि के साधुओं, सन्यासियों और योगियों में भी सिद्धाश्रम प्रवेश की जितनी लगन, उत्कट इच्छा और तीव्र लालसा होती है, वह शब्द से परे है, सैकड़ों वर्षों तक तपस्या करते हैं वे , किन्हीं भी परिस्थितियों से समझौता करने को तैयार होते हैं, कठिनतम परीक्षाओं से भी गुजरने को कटिबद्ध होते हैं बशर्ते उन्हें सिद्धाश्रम ले जाने वाला सद्गुरु प्राप्त हो जाए . . .

अपने आठ वर्षों के साधनात्मक जीवन में यह पवित्र सिद्धाश्रम शब्द मेरे मानस में बराबर घुमड़ता रहा। अमृत के इस दिव्य - धाम को मैं अपनी आंखों से देखना चाहता था और इसीलिए पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी का शिष्यत्व प्राप्त होते ही मैंने उन्हें अपने संकल्प से अवगत करा दिया था। उस समय उन्होंने आशीर्वाद तो दिया पर यह भी इंगित कर दिया था कि इसके लिए अत्यन्त उच्च साधनात्मक धरातल प्राप्त करना अनिवार्य है। तुम्हें स्वयं को पूर्णरूपेण उच्चकोटि की साधनाओं में निमग्न करना होगा।

फिर तो उन्होंने अगले पांच वर्षों तक सिद्धाश्रम के विषय में मुझसे कोई चर्चा ही नहीं की। प्रसंग चलने पर भी टाल जाते, 'अभी समय नहीं आया।' मैंने भी मौन साध लिया और पूरी क्षमता के साथ साधनाओं में लीन हो गया। कुछ ही दिनों के अन्तराल में मैं समझ गया था कि गुरुदेव अत्यधिक अनुशासन - प्रिय और कठोर हैं, शिष्य की शिथिलता उनकी सहन -शक्ति से परे है। निरन्तर साधनाओं में शिष्यों को लगाये रखना और उन्हें उन्नति के पथ पर अग्रसर करना ही उनका ध्येय है।

उनके सानिध्य में रहकर मैंने सर्वप्रथम **दिव्य तेजस मंत्र** की साधना में आंतरिक जीवन को पवित्र किया तथा कुण्डलिनी जागरण का अभ्यास कर षट्चक्र भेदन में सफलता प्राप्त की। कुछ समय बाद मैं सहस्रार में प्राण - वायु स्थापन कर समाधिस्थ होने लगा। तत्पश्चात मैंने महाविद्या साधना सिद्ध करने का निश्चय किया। आरम्भ में कुछ असफलताएं भी मिली, पर अन्त में मेरी साधना सफल हुई और पूज्य गुरुदेव ने मेरा **' ब्राह्मी अभिषेक'** किया।

और मेरे जीवन का वह स्वर्णिम प्रभात भी आ पहुंचा, जब गुरुदेव जी ने मुझे अपने साथ सशरीर सिद्धाश्रम चलने की अनुमति प्रदान की। रहस्यमय तरीके से मुस्कराते हुए उन्होंने मुझसे कहा, " माउंट आबू चलने की तैयारी करो।" अगले ही दिन मैं, गुरुदेव जी और अन्य कई शिष्यों के साथ माउंट आबू पहुंच गए। कई मंदिरों में दर्शन कराने के पश्चात गुरुदेव जी मुझे लेकर गुरु शिखर नामक पर्वत के पीछे गए। वहां एक प्रस्तर खंड पड़ा था वह अन्य शिलाओं से सर्वथा भिन्न था। उसकी दिव्यता, उसकी जीवन्तता स्पष्ट अनुभव हुई ।

. . . उस प्रकाशवान गुफा का द्वार गुरुदेव के पहुंचते ही स्वतः खुल गया. . . बर्फ की गुफा के अन्दर हरी-भरी प्रकृति का साम्राज्य. . . गौरवर्ण, बलिष्ठ शरीर, मुख - मण्डल पर तपस्या का ओज, कन्धों पर लहराती जटाएं, मृग चर्म पहने विचरण करते सन्यासी. . .

उस विशाल प्रस्तर खंड पर गुरुदेव जी ने मुझे अपने साथ बिठा लिया और **मुझे नेत्र बंद करने की आज्ञा दी। नेत्र बंद करते ही मुझे वह प्रस्तर खंड गतिशील अनुभव हुआ, मानों वायु में उड़ा जा रहा हो। लगभग पांच मिनट बाद जब नेत्र खोलने की आज्ञा हुई तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा।** वह स्थान पूर्णतः भिन्न था।

मेरे समक्ष बर्फीली पर्वत श्रृंखला के मध्य एक विशाल द्वार था। पास ही एक वट- वृक्ष था जिसकी बांयी ओर सुरम्य सरोवर था। गुरुदेव जी सरोवर में उतर गये। मैंने भी उनका अनुसरण किया, धीरे - धीरे पानी वक्षस्थल तक आ पहुंचा पर वे बराबर गतिशील थे। अधिक आगे बढ़ने पर हम पूरी तरह जल - मग्न हो गये पर श्वास प्रक्रिया पूर्ववत् ही चलती रही। कहीं कोई असुविधा नहीं हो रही थी।

अब एक प्रकाशवान गुफा दृष्टि गोचर हुई। गुरुदेव के पहुंचते ही उसका द्वार स्वतः खुल गया। द्वार के भीतर प्रविष्ट होते ही मेरे सारे शरीर में अन्तश्चेतना और प्राण ऊर्जा प्रवाहमान हो गई। मैं अचम्भे में था कि उस बर्फीले प्रदेश में जहां घास का तिनका भी नहीं उगता वहां उस द्वार के भीतर प्रकृति का ही साम्राज्य था। हरे - भरे नवीन वृक्ष, हजारों प्रकार के पुष्प उस भूखण्ड को इन्द्र के नन्दन - कानन की संज्ञा दे रहे थे। उन पुष्पों की मधुर गंध से शरीर, मन और प्राण सुवासित हो उठे।

अब हम आश्रम के मुख्य भाग में प्रवेश कर गए थे जहां मृगचर्म पहने हुए कई सन्यासी विचरण कर रहे थे। गौरवर्ण, बलिष्ठ और आर्यों की तरह लम्बी-चौड़ी काया, मुख - मण्डल पर तपस्या का ओज और कन्धों पर लहराती हुई जटाएं उनके भव्य व्यक्तित्व को साकार कर रही थीं। गुरुदेव जी को देखते ही सब एक बारगी थम से जाते और अपना कमण्डल एक ओर रखकर साष्टांग दण्डवत करने लग जाते।

मनोहारी पर्णकुटियों के बीच से गुजरते हुए हम सिद्धयोगा झील तक पहुंचे। नीले पारदर्शी जल की लहरों पर कई साधक स्फटिक नौकाओं में विचरण करते हुए आह्लादित हो रहे थे। कई साधिकायें उस स्वच्छ निर्मल जल में स्नान कर एक दूसरे पर पानी उछाल रहीं थीं तो उसी झील में कुछ योगी संध्या वन्दन कर रहे थे। सारा वातावरण उत्साह, उमंग, मस्ती और आनन्द से भरा हुआ था।

गुरुदेव जी की आज्ञा से मैंने झील में उतर कर स्नान भी किया और बाहर निकलते ही मेरे मन में उमंग और उत्साह की लहर सी फूट पड़ी। मेरा सम्पूर्ण शरीर अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक और तेजस्वी हो गया था और मैं स्वयं को अपनी उम्र से कई वर्ष कम का युवक अनुभव कर रहा था।

झील के बायें पार्श्व में ही एक दिव्य उद्यान था, जहां श्यामवर्णी हिरण निर्द्वन्द्व, निश्चिन्त घूम रहे थे। कई आकर्षक साधिकाएं उन्मुक्त भाव से बैठी परस्पर चुहल कर रही थीं, और कई मृग शावक बैठे- बैठे उन्हें टुकुर - टुकुर निहार रहे थे। एक स्थान पर अत्यन्त भव्य स्फटिक शिलाओं पर कई ऋषि-मुनि ध्यानस्थ थे। सभी के मुख - मण्डल तेज युक्त, दिव्य आभा से ओत-प्रोत थे, जिसे देखते ही मन में उनके प्रति नमन करने की इच्छा हो रही थी।

उद्यान के अन्त में एक अत्यन्त घना और छायादार वृक्ष था, उसके पत्ते ताम्रवर्णी थे, जिनमें से हल्का प्रकाश झर रहा था। पूरा वृक्ष गुलाबी पुष्पों से आच्छादित था। वहां रुककर **गुरुदेव जी ने मुझे बताया, ' यह मूल कल्प -वृक्ष है, यहां जिस वस्तु की भी इच्छा की जाती है, प्रकृति स्वतः ही उसकी पूर्ति तत्क्षण कर देती है।'** कुछ क्षणों के लिए मैं कल्प - वृक्ष के नीचे ध्यान मग्न होकर बैठ गया और मन में भगवान श्री कृष्ण के दर्शन की इच्छा प्रकट की। तुरन्त ही *एक दिव्य प्रकाश पुंज मेरे समक्ष उपस्थित हुआ और अगले ही क्षण वह प्रकाश भगवान श्री कृष्ण की मनमोहिनी छवि में साकार हो उठा - पीताम्बर धारी, गले में वैजयंती माला, सिर पर मोर मुकुट और हाथों में बांसुरी, - उनके होठों पर हृदयग्राही मुस्कान खेल रही थी।* मेरा रोम - रोम पुलकित हो उठा, अपने आराध्य प्रभु के जाज्वल्यमान स्वरुप के दर्शन कर, मैं कृत्य-कृत्य अनुभव करने लगा।

तभी गुरुदेव जी ने आगे अग्रसर होने का संकेत किया। आगे कुछ हलचल सी सुनाई दे रही थी। देखा तो **देवांगनाओं और अप्सराओं का समूह राह के दोनों ओर खड़ा था, गुरुदेव के दर्शन के लिए, उनमें आपस में ही कहासुनी हो रही थी।** हर कोई ग्रीवा ऊंची कर सामने खड़ी होने की आकांक्षी थी पर गुरुदेव जी तटस्थ भाव से आगे बढ़ते गये, किसी की ओर दृष्टि तक नहीं डाली।

गुरुदेव आ गए . . . गुरुदेव आ गए . . . लगा कि जैसे पतझड़ में बसंत आ गया हो, उदास आकाश पर इन्द्र - धनुष खिंच गया हो, और सांसों की बांसुरी पर गुरुदेव शब्द गुंजरित होने लगा . . .

आगे ऋषियों की कोई सभा हो रही थी। वहां बैठे हुए सभी ऋषि-मुनि, योगी, सन्यासी देव- दूत से प्रतीत हो रहे थे। उनके पुष्ट शरीर से एक ऐसी ज्योति, एक ऐसा प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था जो इस धरती पर सम्भव ही न था। गुरुदेव जी के पहुंचते ही सभी आत्मविभोर हो उठे, उनका पूरा शरीर रोमांचित हो उठा और अत्यंत विनम्रता से उन्होंने गुरुदेव जी से कुछ क्षण वहां बिताने का अनुरोध किया।

अब वहीं पर अद्वितीय अनिन्द्य सुन्दरी अप्सरा 'उर्वशी' ने मंगल वाद्यों के साथ सिद्ध नृत्य प्रारम्भ किया। उसके चपल नृत्य ने एक अपूर्व समां चारों ओर व्याप्त कर दिया, जिसकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती। नृत्य की समाप्ति पर पूज्य गुरुदेव की अभ्यर्थना की गई और पूज्य गुरुदेव भी सबको आशीर्वाद देते हुए उठ खड़े हुए।

इसके आगे जाने पर प्रतिबन्ध था परन्तु पूज्य गुरुदवे के साथ जाने में कोई रोक टोक नहीं थी। थोड़ी ही दूर जाने पर एक भव्य पर्णकुटी दृष्टिगोचर हुई। उस कुटिया के चारों ओर अपूर्व आभा मण्डल था। गुरुदेव जी के साथ मैं अन्दर प्रविष्ट हुआ। सामने ही वह महान दिव्यात्मा उपस्थित थी, जिसके दर्शन को देवगण भी तरसते हैं। ऐसा लग रहा था मानों प्रकाश पुंज ही सशरीर अवतरित हो गया हो। यही दादागुरु **'स्वामी सच्चिदानंद महाराज जी'** थे। गुरुदेव जी के प्रणाम करते ही योगिराज ने उन्हें उठाकर अपनी भुजाओं में भर लिया।

उनका परिचय ज्ञात होते ही, मैं उनके श्री चरणों में सिर रखकर फफक कर रो पड़ा। तत्क्षण ही ऐसा आभास हुआ मानों मेरी ही आत्मा, मेरे ही प्राण सामने बैठे हों। भावविह्वल होकर मैं अवरुद्ध कंठ से, अपने अश्रुओं की अविरल धारा से उनके चरण प्रक्षालित करता रहा। अर्धनिमिलित नेत्रों से मैं उनके सुखद दिव्य स्पर्श को अनुभव कर रहा था। कितना समय बीत गया इसका मुझे भान नहीं। अचानक पूज्य गुरुदेव का हाथ मेरी पीठ पर पड़ा। आंखे खोलकर चैतन्य हुआ तो वहां न तो कोई गुफा थी, न ही दादागुरुदेव जी। मैं पुनः उसी वट -वृक्ष के नीचे प्रस्तर खण्ड पर बैठा था। तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने मेरे नेत्र बन्द करा कर, वायु मार्ग से पुनः मुझे माउंट आबू में ले आए।

वास्तव में ही **मैं पूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का आभारी हूं कि उन्होंने अत्यधिक कृपा कर, मुझे शिष्य रूप में स्वीकार किया और इस चोले को सिद्धाश्रम तक पहुंचने की सामर्थ्य प्रदान की।** मेरे शरीर का रोम - रोम उनके प्रति ऋणी है, कृतज्ञ है।

-- स्वामी भूमानन्द

(पृष्ठ ४६ का शेष भाग)
प्रतिष्ठित होना अति आवश्यक है। कमला के ये विशिष्ट स्वरूप हैं--
१. महालक्ष्मी, २. ऋणमुक्ता, ३. हिरण्यमयी, ४. राजतन्या, ५.दारिद्रयहारिणी, ६. कांचना, ७. जया, ८. राजराजेश्वरी, ९. वरदा, १०.कनकवर्णा , ११. पद्मासना, १२. सर्वमांगल्य युक्ता।

साधना विधान

सर्वप्रथम किसी भी बृहस्पति वार को साधक प्रातः काल उठकर स्नान आदि से निवृत होकर अपने पूजा स्थान को स्वच्छ करें और श्वेत आसन बिछाकर पूर्व की ओर मुंह करके बैठे। अपनी पत्नी को भी साधक अपने साथ बैठा सकते हैं, जो आभूषणों से सुसज्जित होकर पति की बांयी ओर बैठ कर साधना में प्रवृत्त हो, पृथ्वी पर स्वस्तिक बनाकर पूजन करें और उस पर आसन बिछाकर स्थान ग्रहण करें। साधना में प्रयुक्त होने वाली प्रत्येक छोटी से छोटी सामग्री पहले से ही एकत्र कर लें जिससे बीच में न उठना पड़े, क्योंकि किसी भी *साधना के बीच में उठना विघ्न तुल्य एवं असफलता- दायक होता है।* अपनी दाहिनी ओर घी का तथा बांयीं ओर तेल का दीपक प्रज्वलित करें जो सम्पूर्ण साधना काल में जलते रहना आवश्यक है, उसके पश्चात निम्न मंत्र का उच्चारण करें--

यं संकोच – शरीरं शोषय शोषय स्वाहा
रं संकोच – शरीरं दह दह पच पच स्वाहा
वं परम – शिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा
लं शांभवं – शरीरं उत्पादय उत्पादय स्वाहा
रं हंसः सोहम्अवतर अवतर शिव पदाज्जीवं सुषुम्णा पथेयं प्रविश मूल श्रृंगाटकम् उल्लास उल्लास ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहम् स्वाहा।।

यह अमृतीकरण न्यास है जिसके द्वारा सम्पूर्ण शरीर का अमृतीकरण हो जाता है, और साधक को साधना में सफलता मिलने के अवसर बढ़ जाते हैं। इसके पश्चात हाथ धो कर हाथ में जल ले कर साधना का संकल्प करें कि **"मैं अमुक गोत्र का अमुक नाम का साधक इस तांत्रोक्त पद्धति से, भगवती लक्ष्मी के महालक्ष्मी स्वरूप की साधना करने में प्रवृत्त हो रहा हूं",** यह कह कर जल भूमि पर डालें एवं पुनः हाथ में जल लेकर विनियोग करें --

विनियोग --

ॐ अस्य श्री सिद्ध - मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं। सर्व क्लेश पीड़ा - परिहारार्थं सर्व - दुख दारिद्र्य नाशनार्थं सर्व कार्य सिद्धयर्थं च श्री सिद्ध लक्ष्मी मंत्र जपे विनियोगः ।

अब सामने बाजोट पर स्थापित मां भगवती महालक्ष्मी के चित्र का संक्षिप्त पूजन करें एवं पात्र में स्थापित (जो लोहे या स्टील का न हो) **कमला महायंत्र** का भी संक्षिप्त पूजन करें। उसके सामने **मोती शंख** को स्थापित करें, क्योंकि मोती शंख ही लक्ष्मी के स्थायित्व का आधार है। इनके चारों ओर **पांच हकीक पत्थर** स्थापित करें जिनके पूजन से जीवन का दुख , दारिद्र्य, अभाव, कष्ट और ऋण समाप्त हो। मोती शंख पर अष्ट लक्ष्मी की प्रतीक अष्ट गंध की बिन्दियां लगाएं और प्रत्येक बिन्दी लगाने के साथ - साथ उच्चारण करें --

१. ॐ विभूत्यै नमः । २. ॐ उन्मत्यै नमः । ३. ॐ कान्त्यै नमः । ४. ॐ सृष्टयै नमः । ५. ॐ कीर्त्यै नमः । ६. ॐ सन्नत्यै नमः । ७. ॐ पुष्टयै नमः । ८. ॐ उत्कृष्ट्यै नमः

इन अष्ट बिन्दियों के ऊपर केसर की एक बड़ी सी बिन्दी लगाकर उच्चारण करें -

'पीठ मध्ये ॐ ऋद्धये नमः '

जो प्रतीक है भगवती ऋद्धि की। इसके बाद पांचों हकीक पत्थरों का भी संक्षिप्त पूजन करें, उन्हें धो पोंछकर उन पर केसर का तिलक लगायें और उच्चारण करें -

१. ॐ लोहिताक्ष्यै नमः २. ॐ विरूपायै नमः ३. ॐ करालयै नमः ४. ॐ समदायै नमः ५. ॐ अमोघायै नमः ।

इसके पश्चात **कमल गट्टे की माला** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जप करें । यह मंत्र है --

मंत्र --

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः । ।

इसके बाद साधक वहीं बैठे - बैठे किसी पात्र में अग्नि स्थापित कर घृत की १०८ आहुतियां उपरोक्त मंत्र की दें। ऐसा करने से यह साधना सम्पूर्ण होती है और इस एक दिवसीय साधना का फल साधक को शीघ्र ही देखने को मिल जाता है। साधना की समाप्ति पर मोती शंख को धन रखने के स्थान पर स्थापित कर दें । भगवती महालक्ष्मी के चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा कमल गट्टे की माला को धारण कर लें । इस साधना में जिन पांच हकीक के पत्थरों का प्रयोग हुआ है उसे उचित दक्षिणा के साथ या तो दान कर दें अथवा किसी मंदिर में चढ़ा दें, जिससे घर में व्याप्त दुख, दारिद्र्य, अभाव, कष्ट एवं ऋण से स्थायी मुक्ति प्राप्त हो सके।

◆

जब मैंने मरघट चण्डी सिद्ध की

मोहन, वशीकरण, उच्चाटन की अचूक शक्ति पाने के लिए चल पड़ा श्मशान की ओर,और फिर. . .

और फिर . . . . अगला आग का गोला एक विस्फोट की तरह मेरी ओर बढ़ता हुआ दिखाई दिया। सांप, छछूंदर की गति में फंसकर न आसन छोड़ा जा रहा था न बैठा ही जा रहा था, यह लगातार तीसरा विस्फोट था जो मेरी ओर बढ़ते - बढ़ते बीच में बुझ गया था, रात के उस तीसरे प्रहर में जब कि अंधियारा इतना घना हो गया था कि बस अपने से चार पांच फुट की दूर की झाड़ी ही दिखाई दे रही थी , मैं अपनी साधना के **तीसरे दिन** मंत्र जप कर रहा था। दो दिन निर्विघ्न बीत जाने से मन में गर्व भर गया था और आज तो कुछ ऐंठ कर बैठा था कि देखो मैंने उस श्मशान में लगातार दो दिन तक साधना कर ली जिसमें पांव रखने से ही अच्छे - अच्छे साधकों को पसीना आ जाता है। घोर उत्पाती आत्माओं के इस क्षेत्र में जिस चुनौती से मैं कूद पड़ा था वही आज मुझे अपनी मूर्खता लग रही थी और याद आ रही थी इस क्षेत्र की अनेक रोमांचक घटनायें कि कैसे किसी साधक को बैठते ही सीधे उठा के बीस - बीस फिट दूर तक यहां के भूत-प्रेत फेंक देते हैं। आज ऐसा ही लग रहा था कि उन्होंने ठान ली है कि यों नहीं तो यों सही लेकिन अब मुझे भगाकर दम लेना है . . . .तभी चौथा गोला भी आया और इस बार ठीक आसन के सामने गिरा, सारे रक्षा प्रयोग, दिग्बन्धन, अन्तरिक्ष बंधन सब एक ओर धरे रह गये और उससे छिटके हुए अंगारे मेरी जांघों को जहां - तहां झुलसा गये, अपनी इस दुर्दशा पर मेरा मन रो उठा, कहां भागूं, कहां जाऊं, किसको पुकारूं रात के इस पहर में, जबकि आबादी नदी के तट पर बने इस श्मशान से चार किलो मीटर दूर थी, और किसी ने सुन भी ली तो कौन विश्वास कर यहां तक आयेगा। साधना भी तो मैंने चुन कर करने की ठानी थी -- **मरघट चण्डी,** जिसको सुनकर अघोरी भी कतराकर निकल जाए , और अभी बस तीसरा ही दिन तो हुआ था, अभी तो इस साधना के कई चरण बचे थे, अभी तो चिता के पास बैठकर भी मंत्र जप करने थे और जब पहले चरण में यह हाल था तो पता नहीं आगे क्या होना है।

. . . . . . हल्की खिलखिलाहट, रोम-रोम को सनसनी से भरती हुई, हंसी से अधिक विभत्सता से भरी, अगल - बगल बिखरने लगी, हंसी से उबरूं कि तब तक पायल की छम-छम अपनी पूरी मादकता से उस श्मशान में भीगा - भीगा वातावरण बनाने लगी . . . पर कोई भी तो नहीं था उस सुनसान अंधेरे में, कौन आ गयी ये मुझे छलावा देने के लिए, और तीव्र सुगन्ध का झोंका जैसे कि चम्पा की कोई डाल मेरे आस पास ही झूल रही हो, कोई सिहरन ठंडी हो गयी हवा को और भी ठंडा बनाने लगी ,लग ही नहीं रहा था कि यह श्मशान का कोई कोना है, पर ठीक उसी समय कहीं से आयी तेज सड़ी बदबू का झोंका याद

दिला गया कि यह श्मशान ही है। मन भटक चुका था और मंत्र जप एक ओर धरा रह गया। अंधेरे की चादर को फाड़कर देखने में आंखें ही फटने-फटने को हो आयीं और चारों ओर दृष्टि घुमा कर देखते देखते ही पौ फट गयी। ऊषा की लालिमा झलकने से मन आश्वस्त हुआ। सूरज की उस पहली किरण से मेरे लिये नया जीवन आया। यह जो कल रात में मेरे पास उस एकान्त में आयी थी, और क्या रही होगी उसकी इच्छा. . . . ?

सुन रखा था कि भूतनियां भी छलने के लिए इतनी अधिक सौन्दर्यवती और मादक बन कर आती हैं कि अप्सराओं का गर्व एक ओर धरा रह जाता है, जो भी हो अब तो ये सब अभी और भी देखना था।

चौथा दिन . . . . रात कल की तरह ही घनी और उससे भी ज्यादा घना मेरा मन, जो भय और जिज्ञासा के कई - कई विचारों से भरा था, यदि बीच में छोड़ने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की देवेश की चेतावनी याद न होती तो आज मैं आता ही नहीं।

लेकिन मजबूरी थी और 'मरता क्या न करता' वाली बात बन गई थी. . चड़चड़ की आवाजों ने ध्यान भंग किया और मन में हैरानी भर गयी कि रात के इस प्रहर में इतनी वीभत्सता से कौन कुछ खा रहा है, और खा ही नहीं रहा है झिंझोड़ - झिंझोड़ कर खा रहा है, कौन है यह देखने के लिए मंत्र जप रोक कर आंखें खोलीं नहीं कि गले से चीख निकलने के साथ - साथ ही प्राण भी निकलते - निकलते बचे। ठीक मेरे सामने बैठी वह भयावह आकृति जिसकी सांसें सीधे मेरे मुंह पर पड़ रही थीं, मांस के लोथड़े इस तन्मयता से चिचोड़ रही थी कि जैसे मेरा तो उसके लिए कोई अस्तित्व ही नहीं। मैं कुछ बोलूं - बोलूं तब तक वह आखिरी बोटी, जो कि एक मानव का हाथ था उसे चबाचूस कर मेरे पास फेंक एक ओर चलती बनी, उबकाई और भय से मैं बेहोश होने - होने को हो गया। लेकिन क्या मरघट की देवी मरघट चण्डी से यूं ही साक्षात्कार होना था?

आज के बाद तो मेरा मन हिल

सारा शरीर ज्यों कंकाल पर कहींसे लाकर काली चमड़ी मढ़ दी गई हो . . .

गया था क्योंकि जो मेरे आसन के सामने बैठ कर इस तरह से किसी मुर्दे को चिचोड़ सकती है, वह कल मुझको ही जिन्दा नहीं चिचोड़ लेगी, इसका क्या भरोसा? श्मशान की उस चण्डी के लिये कठिन ही क्या? लेकिन कल तो मुझे चिता पर बैठने की बारी थी और जब यहां यह हाल था, तो साक्षात उस स्थान पर जहां पर दाह संस्कार किया गया हो, वहां क्या घटित होगा? पर ओखली में सिर दिया तो मूसलों का भय छोड़कर, जो दो एक घंटे मेरे पास बच रहे थे उनमें आज की यहां की साधना पूरी करनी थी, पर क्या मेरे सोचने से ही कुछ होना था?

कुछ देर पहले बीती बातों को भूला कर आंखे बंद हुई नहीं कि आस-पास जो धमक भरी चहल कदमी शुरू हुई वह आंख खोलने के लिए उत्तेजित कर गयी, लेकिन इससे तो मेरी साधना ही भंग हो जानी थी।

और जब मेरी ओर से कोई हलचल नहीं रही तो फुसफुसाहटों का ऐसा सिलसिला शुरू हुआ जिससे सिर से पांव तक शीत की लहर दौड़कर मुझे अर्धमृत बना गई।। रात कटी और अब आने वाली रात में चिता के समीप बैठ कर मुझे इसी साधना का दूसरा चरण पूरा करना था। सारा दिन सही मुर्दे की तलाश में भटकते - भटकते बीत गया। **रात की थकान, जुगुप्सा और चिड़चिड़ाहट से मैं बेचैन हो गया था लेकिन सही मुर्दा मिलने से मन में कुछ दिलासा आयी। यह शव ठीक उन्हीं चिन्हों से युक्त था जिसके समीप बैठ कर मरघट चण्डी सिद्ध की जाती है,** और मैं चिता भूमि में एक ओर बैठ कर चुपचाप देखने लगा कि उसके साथ आये व्यक्ति कहां उसका दाह संस्कार करते हैं। उसकी चिता को पहचान कर मैं वहां से वापस आ गया। अब मुझे अपने पुराने स्थान पर जाकर अपनी कुछ आवश्यक वस्तुएं वापस लानी थीं और चिता भूमि से सौ गज हट कर जब मैं अपने साधना स्थल पर पहुंचा तो उफ. . . . . **वहां पड़ी हड्डियां, मानव अंग के अवशेष, रक्त के छींटे देख कर दिन की उस भरी दोपहरी में भी रोंगटे खड़े हो गये,** मैं तो कल रात में मुंह अंधेरे ही लौट आया था और यह हाल देखकर सिहरन से भर उठा। काश! मैंने ऐसी भीषण साधना हाथ में न ली होती, लेकिन मरघट चण्डी से जुड़ी सिद्धियां किस साधक या तांत्रिक को नहीं ललचा देती। तंत्र के तीव्र और तुरंत असरकारी प्रयोग तो इसी साधना से जुड़े हैं। चाहे वह मारण - मोहन, उच्चाटन की बात हो या आंखों ही आंखों में देखकर पूरी जिन्दगी भर के लिये किसी को भी जड़ बना देने की बात हो, करने को

तो यह साधना श्मशान काली के रूप में भी की जा सकती है लेकिन श्मशान काली के ही तीव्रतम और प्रचंड स्वरूप, उनके तामसिक स्वरूप मरघट काली की तो बात ही निराली है। मरघट काली के सिद्ध साधक को एक क्षण भी बड़ा से बड़ा तांत्रिक देख ही नहीं सकता और **जिसकी ओर वह सिद्ध साधक दृष्टि तरेर कर एक बार देख भर ले तो वह कटे पक्षी की तरह तड़ से गिर कर छटपटा कर , प्राण त्याग देता है, और ऐसी ही तीव्रतम सिद्धियां प्राप्त करने के लिये मैं लालायित हुआ था।**

-- खैर . . . . अब तो रात की साधना की बात सोचनी थी और अपनी सामग्री समेट, उन बिखरे मानव अवशेषों की ओर, जिन्हें एक दो कुत्ते अभी तक चिचोड़ रहे थे, उनकी ओर उचाट दृष्टि डालता हुआ जाकर मैं एक विशाल वट वृक्ष के नीचे सो गया।

दिन ढला और हल्की - हल्की हवा से भी ज्यादा मन में सनसनी भरी थी रात की साधना को लेकर। एक - एक करके लोग श्मशान से जाते रहे और जब विलाप के सभी स्वर बंद हो गये तब एकांत जानकर चुपचाप मैं उठा और अपनी उसी पहचान की हुई चिता के पास जाकर बैठ गया। चिता ठण्डी हो चली थी और ठीक उसी के बीचों-बीच बैठकर मंत्र जप करना जिसमें शेष रह गयी थी मानव हड्डियां और न जल पाये अंगों के बचे - खुचे टुकड़े। अब मेरी परीक्षा की असली घड़ी थी और मंत्र जप आरम्भ करते ही तीव्र हुंकार और धमक से आसन हिल गया। पहले से लेकर रखी मांस की बोटियों को मैं एक - एक करके जिस जिस दिशा से अदृश्य हुंकार की ध्वनि आ रही थीं, उन उन दिशाओं में फेंकता जा रहा था और घोर आश्चर्य . . . . . वे सभी बोटियां जमीन पर गिरने की बजाय हवा में ही खो जा रही थीं, जो संकेत था कि अवश्य ही सैकड़ों अदृश्य आत्माओं ने मुझे घेर रखा है, लेकिन अभी तो सबसे कड़ी चुनौती उस आत्मा से मिलनी बाकी थी, जिसकी चिता पर बैठकर यह साधना की जा रही थी। वैसे मैं मृत आत्मा के लिए बलि देकर ही बैठा था लेकिन जिसकी चिता पर बैठकर ही मरघट चण्डी को साधा जा रहा हो, वह आत्मा क्या यूं ही छोड़ देगी? और यही सोचते - सोचते ही मेरा सिर बहुत तेज चकराया . . . . . एक झटके से उसी चिता में लुढ़क कर मैं उसकी राख से सिर से पांव तक रंग उठा,

पर उस बलि देने से ही क्या होने वाला है जिसकी चिता पर मरघट चण्डी को साधा जा रहा हो वह आत्मा क्या एक बलि से ही मान जाएगी. . .

कोई न दिखाई पड़ने वाली शक्ति मुझे उठा उठा कर पटक रही थी और चिता के चारों ओर खींचे रक्षा कवच के बाहर फेंक देना चाह रही थी, पर कुछ देर की खींच - तान में मैं ही सफल रहा।

अब मुख्य और अन्तिम साधना की स्थिति थी क्योंकि आखिरी चुनौती भी निपट चुकी थी। अब तो सीधे ही मरघट चण्डी के मंत्रों का उच्चारण करना था। इस चरण में या तो मुझे पूर्ण सिद्धि मिल जानी थी अथवा मृत्यु , क्योंकि इस चरण में जपे जाने वाले मंत्रों को यदि साधक सह नहीं पाता तो उसका सारा शरीर फटकर चिता की उसी राख में मिल जाता है, इसी से इस साधना को चिता पर करने का विधान है, कि साधक को प्रतिक्षण याद रहे यह जीवन की तीव्रतम साधना है, और सच बात तो यह है कि साधक को बिना गुरु आज्ञा अथवा गुरुदेव के सतत निर्देशन के बिना इस साधना में उतरना ही नहीं चाहिए। मैंने मरघट चण्डी के मंत्र का जप प्रारम्भ किया और सारा वातावरण एकदम से स्तब्ध हो गया, स्पष्ट लग रहा था कि वातावरण में व्याप्त जितनी भी हलचल है, वह थम गयी है। श्मशान की अधिष्ठात्री प्रचण्ड स्वरूपा मरघट चण्डी के आह्वान उपासना के बाद किस भूत-प्रेत और यहां तक कि ब्रह्म राक्षस जैसी भीषण योनि की हिम्मत है, कि वह श्मशान भूमि में टिका रह सके, अब तो केवल मरघट चण्डी ही चाहे तो मुझे परीक्षा में डालकर कोई भी स्थिति खड़ा कर दे।

मंत्र जप के तीन घंटे बीत गये और कोई हलचल नहीं हुई। एकाएक तीव्र प्रकाश का एक गोला शून्य से आता दिखाई दिया और मेरे शरीर को भेदता हुआ चला गया, जिसमें न कोई झुलसन थी न ऊष्मा। क्या यही संकेत था मेरी साधना में सफलता का? आज तो साधना का अंतिम दिन था और सच बात तो यह है कि पिछले दिनों के भयावह अनुभवों के बाद मेरी इच्छा भी नहीं रही थी कि मैं आगे इस साधना को और करूं। मरघट चण्डी का जो स्वरूप सोच कर मैं बैठा था वह तो नहीं प्रकट हुआ।

लेकिन इस साधना के करने के एक माह बाद तक मेरा सारा शरीर खण्ड - खण्ड करके टूटता रहा और कई बार सन्निपात की अवस्था आ गई। ऐसा लगता था कि कोई तीव्र ऊर्जा मेरे शरीर के रोम - रोम में समाई जा रही है। देखते ही देखते एक माह के भीतर ही मेरा सारा चेहरा अपूर्व तेज और लालिमा से भर उठा, साथ ही मेरे सारे शरीर में इतना अधिक बल समा गया था जो कभी - कभी लगता था कि शरीर में टिक ही नहीं पा रहा है। मुझसे मिलने वालों का कहना है कि अब मेरी आंखों में ऐसी तीव्रता आ गई है कि मैं जिसकी ओर देखता हूं उसे लगता है कि कोई अग्नि पुंज उसे झुलसा रहा है।

राजनैतिक भविष्य व शेयर मार्केट

केन्द्र की दशा में स्थितियां स्पष्ट और निश्चित हो जाने के बाद यह माह पिछले उथल - पुथल भरे माह की अपेक्षा अधिक शांत व्यतीत होगा। केन्द्र के सशक्त दबाव से विभिन्न प्रांतों में चल रही उठा पटक की राजनीति में अंकुश लगेगा। केन्द्र में सत्तासीन दल विभिन्न प्रान्तों में अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रबल प्रयास करेगा और सफल भी रहेगा। वैसे तो केन्द्र में सत्तारूढ़ हुए दल के अन्दर मतभेद और राजनीति तो चलती रहेगी लेकिन देश के सामने उपस्थित कुछ बाह्य चुनौतियों के कारण वह आन्तरिक रूप से ही व्याप्त रहेगा और इस माह में राजनीति सड़कों पर चर्चा का विषय नहीं बनेगी। कश्मीर प्रान्त में गम्भीरतम स्थिति होने के बाद भी केन्द्र सरकार की उदासीनता और पर्याप्त सुरक्षा के अभाव से सारे देश में जबर्दस्त प्रतिक्रिया होगी । प. बंगाल में विभिन्न कारणों से उथल - पुथल चलती रहेगी और कोई भीषण रेल दुर्घटना भी संभावित है। कर्नाटक में आतंकवादी और नक्सलवादी गतिविधियां जोर पकड़ेंगी। नर्मदा विवाद के संदर्भ में केन्द्र को हस्तक्षेप करना पड़ेगा। उत्तराखण्ड में भी निर्माणाधीन परियोजना को लेकर पर्यावरणवादी विशाल जन - आंदोलन खड़ा करेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय पटल पर पदासीन प्रधान मंत्री का खाड़ी देशों के संदर्भ में झुकाव अधिक होगा और इजराइल से उनकी संबंधों में प्रगाढ़ता लाने के प्रयासों का स्वाभाविक परिणाम होगा, खाड़ी के अन्य देशों से वैमनस्य की स्थिति। पाकिस्तान अपने आंतरिक मामलों को लेकर ही उलझा रहेगा और प्रकट रूप से कुछ करने की अपेक्षा अपनी उसी पुरानी नीति के अंतर्गत कश्मीर में आतंकवादियों के घुसपैठ करवाता रहेगा । फिलिस्तीनी मुक्ति आंदोलन शान्त होगा पश्चिम एशिया में एक बार फिर युद्ध जैसी स्थितियां बनने लगेंगी। ईराक व ईरान की स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अमेरिका के राष्ट्रपति अपनी राष्ट्रीय नीतियों और व्यक्तिगत व्यवहार के साथ - साथ रंगभेदी आंदोलनों को नियंत्रित न कर पाने तथा उपेक्षा बरतने के कारण आलोचना के पात्र बनेंगे। अमेरिका के रंगभेदी आंदोलनों का केन्द्र भारतीय व पाकिस्तानी मूल का एशियाई जन समुदाय होगा।

शेयर मार्केट

पिछले माह से चल रही स्थितियों में परिवर्तन होने के साथ - साथ कुछ नये नाम बाजार में उछल कर विशिष्ट शेयर की सूची में अपना नाम दर्ज करा लेंगे। जिसमें केल्विनेटर और बजाज ऑटो का नाम निर्विवाद रूप से लिया जा सकता है। बी.पी.एल. सान्यो, मोदी रबर और होटल लीला भी इसी सूची में आने वाले नाम हैं। टेल्को व टिस्को की स्थिति में पहले की अपेक्षा थोड़ा सुधार होगा, लेकिन अभी वे विशिष्ट शेयर की सूची में नहीं आ पायेंगे। मोदी समूह के लिए यह माह विशेष लाभदायक है, जबकि उनके सभी शेयरों की स्थिति अच्छा स्थान प्राप्त करेगी। रिलायंस इन्डस्ट्रीज के भाव स्थिर रहेंगे। संभव है वे नया ऑफर प्रस्तुत करें। जे.पी. होटल भी अच्छा व्यवसाय देगा। डी.सी.एम. लिमिटेड तथा डी.सी.एम. टोयेटा की स्थिति संदिग्ध है।

इस माह की विशेषता यह है कि राजनैतिक उथल - पुथल शांत होने से उद्यमियों में उत्साह आयेगा और कई एक परियोजनाएं जो विदेशी सहयोग द्वारा आरम्भ होनी थीं अथवा प्रवासी भारतीयों द्वारा आरम्भ की जानी थीं, वे साकार रूप लेंगी। लघु उद्योगों एवं मध्यम दर्जे के उद्योगों के लिए भी इस माह १५.१०.९३ के बाद से अच्छा समय रहेगा।

अनाज के मामले में यह माह बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता। गेहूं देशी और गेहूं दड़ा के भावों में तो उछाल आयेगा लेकिन चावल परमल, चावल सेला और चावल बासमती तीनों के भावों में मंदी आयेगी। बाजरा तथा सफेद मटर का भाव स्थिर रहेगा। ज्वार, मक्की के भावों में गिरावट आयेगी। जौ की मांग बढ़ेगी। दालों के मामले में बाजार अच्छा रहेगा। मूंग , मूंग धोया, उड़द, उड़द धोया, मसूर व मोठ के भाव चढ़ेंगे, जबकि अरहर, राजमा व चने के भाव में मामूली सा उतार - चढ़ाव होगा। सरसों व वनस्पति के भावों में भी चढ़ाव आयेगा। मूंगफली रिफाइंड के मांग में कमी आयेगी, उसके स्थान पर सोयाबीन रिफाइंड की मांग बाजार में बढ़ेगी। किराना बाजार में काली मिर्च, दाल चीनी , जावित्री, लाल मिर्च, सोंठ के भाव में तगड़ी बढ़ोत्तरी होगी। अजवाइन, इमली, छोटी इलायची, सौंफ, धनियां अच्छा व्यापार देंगें। जीरे का भाव और गिरेगा। ♦

गजब की उपलब्धि है दुर्गा वशीकरण प्रयोग

वशीकरण — जीवन का मार्ग निष्कंटक करने के लिए, प्रत्येक ऐसी दुःसाध्य और अप्रिय स्थिति जिसका कि बने - बनाये नियमों से निराकरण संभव न हो तो फिर वशीकरण ही एक मात्र उपाय शेष रह जाता है. . .

दुर्गा शब्द का यदि वर्णों के अनुसार विभाजन करके अर्थ समझने का प्रयास करें, तो इसमें 'द' वर्ण दैत्यों के संहार का सूचक है , 'उ' विघ्न का नाशक है, 'र' रोगों को समाप्त करने की क्रिया है, 'ग' पाप का विमोचन है और 'आ' भय व शत्रुओं का पूर्ण निराकरण है। स्पष्ट है जीवन की इतनी विसंगतियों को केवल महामाया मां भगवती जगदम्बा ही अपने विशिष्टतम स्वरूप दुर्गा के रूप में अवतरित होकर समाप्त कर सकती हैं। तभी तो दुर्गा के प्रति सहज सम्मान से भी अधिक अपनत्व का भाव हमारे लोकजीवन में गहरे तक जाकर पैठा है। देवी के अनेक स्वरूप हैं लेकिन इस दुर्गा स्वरूप में वह इतनी विविधता से भरी, तीक्ष्ण शक्ति और अचूक निवारक उपायों को समाहित करके अवतरित होती हैं कि देवी के इस विशिष्ट स्वरूप और इसमें निहित शक्ति को आधार बना कर यदि कोई साधना की जाए तो फिर असफलता कैसे संभव है? दुर्गा की मूलभूत शक्तियों में मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण प्रमुख शक्तियां है, जो प्रत्येक के जीवन में सहायक सिद्ध होती हैं।

वशीकरण शब्द आते ही जो सहज धारणा बनती है, उसको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन वशीकरण स्त्री - पुरुष संबंध से आगे बढ़कर जीवन के किन - किन पक्षों में विस्तारित हो सकता है, यह तो एक अलग चर्चा का विषय है। **प्रत्येक ऐसी दुःसाध्य और अप्रिय स्थिति जिसका कि बने- बनाये नियमों से निराकरण संभव न हो, वशीकरण ही एक मात्र उपाय शेष रह जाता है।** ऐसी स्थितियों को यदि आपने स्वयं भुगता हो, तो आप सरलता से समझ सकते हैं, अन्यथा कल्पना करके भी अनुगान लगा सकते हैं कि जहां आपका कोई मित्र आपके विश्वास को धोखा देता हुआ, आपका धन हड़प कर गया हो, या आप की सारी सौजन्यता के बाद भी कार्यालय में आपके विरुद्ध षडयंत्र चलते रहते हों अथवा आपका पड़ोसी आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर अनिधाकृत रूप से भूमि हड़पने के दाव में हो , या ऐसी ही कई एक स्थितियां, जिनमें आप सभ्य नागरिक के नाते खुल कर न लड़ सकते हैं, और न अपमानजनक स्थितियों को सहन करते हुए, ज़ीवन व्यतीत कर सकते हैं, वहां फिर क्या उपाय शेष रह जाता है? सम्मोहन और सौजन्यता

तो सभ्य समाज की बात है। *इस पशु समाज में तो हाथ में वज्र जैसी ताकत रखना ही होगा, और वज्र के समान शक्ति प्रदान करने वाली एक मात्र दुर्गा ही तो है।* दुर्गा के समाहितीकरण से ही ऐसी अप्रिय स्थितियों का निपटारा किया जा सकता है क्योंकि वशीकरण की शक्ति का उद्भव ही उनके द्वारा हुआ है। जहां शक्ति के समाहितीकरण की बात आती है, जहां वज्र समान बनने की बात आती है, वहां साधना के पक्ष स्वतः ही आकर स्पष्ट हो जाते हैं, क्योंकि साधना ही वह मार्ग है जिसके द्वारा किसी पात्र में कुछ रखने की क्रिया की जाती है। केवल पात्र में भरने की क्रिया ही नहीं, वरन यथोचित पात्रता भी व्यक्ति के अन्दर साधना के माध्यम से ही आती है।

शक्ति अपने आप में नारी स्वरूपा होती है और जिस प्रकार से नारी को निरन्तर संतुष्ट रखना आवश्यक होता है उसी प्रकार साधना भी एक ऐसी प्रक्रिया होती है, जिसे निरंतर करना आवश्यक होता है। साधना किसी बिन्दु पर आकर समाप्त हो जाने वाली घटना नहीं होती। इसे जीवन में एक नियमित स्थान देना पड़ता है और जब हमारे जन्म - जन्म के संस्कार क्षीण होते हैं, तभी नवीन संस्कार धारण करने की स्थितियां निर्मित होती हैं। वशीकरण की इस विशिष्ट साधना में, जो कि प्रकारान्तर से दुर्गा की ही साधना है, उनके एक विशिष्ट स्वरूप की उपासना है, यही बात व्यव्हत होती है। दुर्गा, मां भगवती महाकाली क़ा ही एक रूप है, और काली को परम्परा से भगवान श्री कृष्ण की भगिनी कहा गया है, जिनमें आकर्षण और वशीकरण की स्थितियां प्रचुर रूप से निहित हैं। वशीकरण की इस तीव्र साधना में व्यक्ति को साधना से भी अधिक जिस बात पर ध्यान देना होता है, वह है कि यह उसके मन में दृढ़ संकल्प हो, कि मुझे हर हालत में यह सिद्धि प्राप्त करनी ही है, रो - झींक कर और गिड़गिड़ा कर कोई भी शक्ति - साधना कदापि नहीं सिद्ध की जा सकती।

साधना किसी बिन्दु पर आकर समाहित होने की क्रिया मात्र ही नहीं, इसे तो नित्य अपनाना पड़ता है जीवन में नित नूतन ढंग से . . .

साधना विधान

किसी भी कृष्ण पक्ष के रविवार की रात्रि में की जाने वाली इस तीव्र साधना में निश्चित रूप से तीन सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है, जिनके अभाव मे साधना में सफलता की कोई आशा करना व्यर्थ है, क्योंकि जहां तांत्रोक्त रूप से साधना की बात आती है, वहां मंत्र से भी अधिक उन विशिष्ट सामग्रियों का प्रभाव होता है जो प्रयुक्त की जायं। **काली महामोहन यंत्र, पांच गोमती चक्र एवं दो तांत्रोक्त नारियल** के अलावा इसमें आवश्यक रूप से **वियुत माला** प्रयुक्त होती है। साधक रात्रि में ११ बजे के पश्चात् एक एकान्त कक्ष में अकेला बैठे और सामान्य गुरु पूजन कर, पांच माला गुरु मंत्र का जप करें, इसके पश्चात् निम्न रक्षा मंत्र पड़ता हुआ चारों दिशाओं में चावल के दाने फेंक कर अपने देह की सुरक्षा करे।

मंत्र

अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इसके पश्चात लाल वस्त्र बिछाकर उस पर काली महामोहन यंत्र रखें जो ताम्र पत्र पर अंकित हो, इसके ऊपरी भाग में सभी गोमती चक्र स्थापित करें एवं नीचे दोनों तांत्रोक्त फल स्थापित करें, जिससे त्रिकोण जैसी आकृति बन जायेगी, इसके बीचों बीच में काजल से **'क्रीं'** बीज लिखें एवं स्वयं भी लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर स्थापित होते हुए लाल पुष्प, सिंदूर एवं कोई बड़ा फल जैसे सेब या तरबूज अर्पित करते हुए निरन्त मानसिक रूप से **'क्रीं'** बीज का मंत्र जप करते रहें। सबसे अन्त में पहले से रंगे हुये लाल रंग के चावल यंत्र पर अर्पित करें और विद्युत माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मंत्र :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कामेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भनि सर्वराजवशंकरी सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बन्दी श्रृंखलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रूनभंजय भंजय दुष्टन् निर्दलय निर्दलय सर्व स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्व कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः।

मंत्र जप के उपरान्त काली महामोहन यंत्र को तो लाल वस्त्र में लपेट कर सुरक्षित स्थान पर रख दें। गोमती चक्र एवं दोनों तांत्रोक्त नारियल जल में प्रवाहित कर दें। विद्युत माला गले में धारण कर लें तथा यंत्र पर चढ़ाए हुए रंगीन चावल घर से दूर कहीं जमीन में गाड़ दें। प्रति अमावस्या को इस मंत्र का २१ बार रात्रि में उच्चारण, काली महामोहन यंत्र के सामने नियम पूर्वक करते रहें। विद्युत माला को विशेष रूप से तब अवश्य धारण कर लें जब किसी मुकदमे, व्यापारिक समझौते, लेन, देन, किसी वाद- विवाद में जाने की आवश्यकता पड़े। इस माला का तो धारण करना ही पूर्ण वशीकरण सिद्धि प्रदाता है। ◆

आपके जीवन का अनुपम सौभाग्य एवं गौरव है

गौरवशाली मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान मासिक पत्रिका की

आजीवन सदस्यता

आजीवन सदस्यता . . . केवल पत्रिका का आजीवन ग्राहक बनने की ही क्रिया नहीं, यह तो ऋषियों, सन्यासियों एवं विश्व के श्रेष्ठतम योगियों द्वारा अनुप्राणित **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** की भी सदस्यता है . . . उसके आधार एवं सम्पर्क सूत्र पूज्यपाद गुरुदेव के होठों पर अपना नाम अंकित कराने की बात है . . . जो जीवन की सम्पूर्णता और सौभाग्य है . . .

अब तो पूज्य गुरुदेव ने निश्चित कर लिया है, अपने प्रत्येक ऐसे सजग पाठक को सर्वथा निःशुल्क रूप से **महालक्ष्मी दीक्षा** देना भी . . . जिससे चैतन्य हो सके संवर सके पाठक एवं शिष्यों का सांसारिक पक्ष . . .

अन्य भी तो कई उपहार . . . सर्वथा निःशुल्क -- पारद शिवलिंग, गुरुचित्र, सूर्य कांत उपरत्न, प्रथम शिविर में शिविर सिद्धि पैकेट, गुरु यंत्र . . . और भी बहुत कुछ . . . केवल **६६६६/-**, यदि एक मुश्त न संभव हो तो तीन किश्तों में जमा करने की सुविधा भी . . .

नोट : विना उपरोक्त उपहारों के केवल २४००/- द्वारा भी आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४,
फोन - ७१८२२४८
फेक्स- ०११-७१८६७००

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१,
फोन - ०२९१-३२२०६

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

सुनीता, कोटा
प्रश्न : **पदोन्नति कब तक होगी?**
उत्तर : १९९९ में अप्रत्याशित रूप से लाभ मिलेगा।

हरीराम उपाध्याय, बस्ती
प्रश्न : **पारिवारिक समस्या का समाधान कब तक होगा?**
उत्तर : वर्तमान संबंध से कोई लाभ संभव नहीं।

चन्द्रशेखर झा, मुज्फ्फरपुर
प्रश्न : **साधना में सफलता कैसे मिलेगी?**
उत्तर : पूर्णता से गुरु साधना सम्पन्न करें।

अरविन्द कुमार शर्मा, जबलपुर
प्रश्न : **क्या निर्माण के व्यवसाय में सफल रहूंगा?**
उत्तर : नहीं।

प्रीति पाठक , जबलपुर
प्रश्न : **सरकारी नौकरी के विषय में बताइये?**
उत्तर : २६ वें वर्ष में मनोनुकूल पद मिलेगा।

राजकिशोर चौबे, पूर्णियां
प्रश्न : **पुत्री किस क्षेत्र में सफल रहेगी?**
उत्तर : चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में।

संजीव कुमार सोनी, मेरठ
प्रश्न : **सुख शांति के उचित रत्न बताइये?**
उत्तर :वैदूर्य मणि अथवा माणिक्य।

जसवंत राय गर्ग, पंचकूला
प्रश्न : **पुत्री के स्वास्थ्य एवं शिक्षा का उपाय बताइये?**
उत्तर : पुखराज रत्न धारण कराएं।

ब्रह्मदेव शर्मा , हमीदपुर हि.प्र.
प्रश्न : **क्या व्यापार के लिए स्थान परिवर्तन उचित होगा?**
उत्तर : कदापि नहीं।

सुभाष कुमार यादव, अंबिकापुर
प्रश्न : **परीक्षा फल कैसा रहेगा।**
उत्तर : सफलता संदिग्ध है।

प्रेमनाथ गुप्ता, गया
प्रश्न : **मुझे किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर :यक्षिणी साधना में।

शालूमेहर, दमोह
प्रश्न : **मेरा परीक्षा फल कैसा रहेगा?**
उत्तर : सफल ।

चन्द्रशेखर शुक्ल , रायबरेली
प्रश्न : **कौन सा रत्न धारण करूं?**
उत्तर : मोती।

मुकेश कुमार सक्सेना, ग्वालियर
प्रश्न : **मैं कितना पढ़ सकूंगा?**
उत्तर : उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे।

जगदीश कुमार यादव, बस्तर
प्रश्न : **उन्नति की संभावना कब तक?**
उत्तर : वर्तमान में संभव नहीं।

रमेश कुमार, पिपरोटिया
प्रश्न : **व्यापार में उन्नति के लिए मार्ग दर्शन दें?**
उत्तर : तीन रत्ती का पुखराज धारण करें।

सुरिंदल कौर, खांग
प्रश्न : **भाग्योदय कब तक होगा?**
उत्तर : अभी तीन वर्ष समय कठिन है।

प्रभात कनौजिया, फैजाबाद
प्रश्न : **पारिवारिक कष्ट कब तक दूर होगा?**
उत्तर : स्थायी निदान मिलना कठिन।

महावीर जैन, दुर्ग
प्रश्न : **क्या मैं डॉक्टर बन सकता हूं?**
उत्तर : सफलता की संभावनाएं प्रबल हैं।

आनंद पुनप्पा सावंत, बम्बई
प्रश्न : **किस देवी या देवता की साधना प्रारम्भ करूं?**
उत्तर : गणपति साधना।

क्षेत्रपाल सिंह, आगरा
प्रश्न : **क्या प्रशासनिक सेवाओं में जाने का योग है?**
उत्तर : अत्यंत कठिन परिश्रम से संभावित ।

अरुण वशिष्ठ , चण्डीगढ़
प्रश्न : **सरकारी मकान कब तक मिलेगा?**
उत्तर : तीन माह पश्चात्।

मुरारी राम खोंगन, रायपुर
प्रश्न : **मुझे किस क्षेत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर : आपके लिए शिक्षा जगत ही श्रेष्ठ है।

प्रवीण कुमार पटेल, भोपाल
प्रश्न : **मेरे स्वास्थ्य में सुधार कब तक होगा?**
उत्तर : अगले वर्ष जून माह तक निश्चित रूप से लाभ होगा।

कूपन क्रमांक :- ११४ **(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)**

नाम :-...
जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............
जन्म स्थान .... जन्म समय ....
पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...
....
आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

कुण्डलिनी जागरण एवं षट्चक्र भेदन

● बिना चक्रों के पूर्ण ज्ञान के कोई आधार ही नहीं कुण्डलिनी जागरण का . . . तभी तो होती है जीवन में पूर्ण आनंद की अनुभूति अलौकिक और वर्णन से परे . . . ●
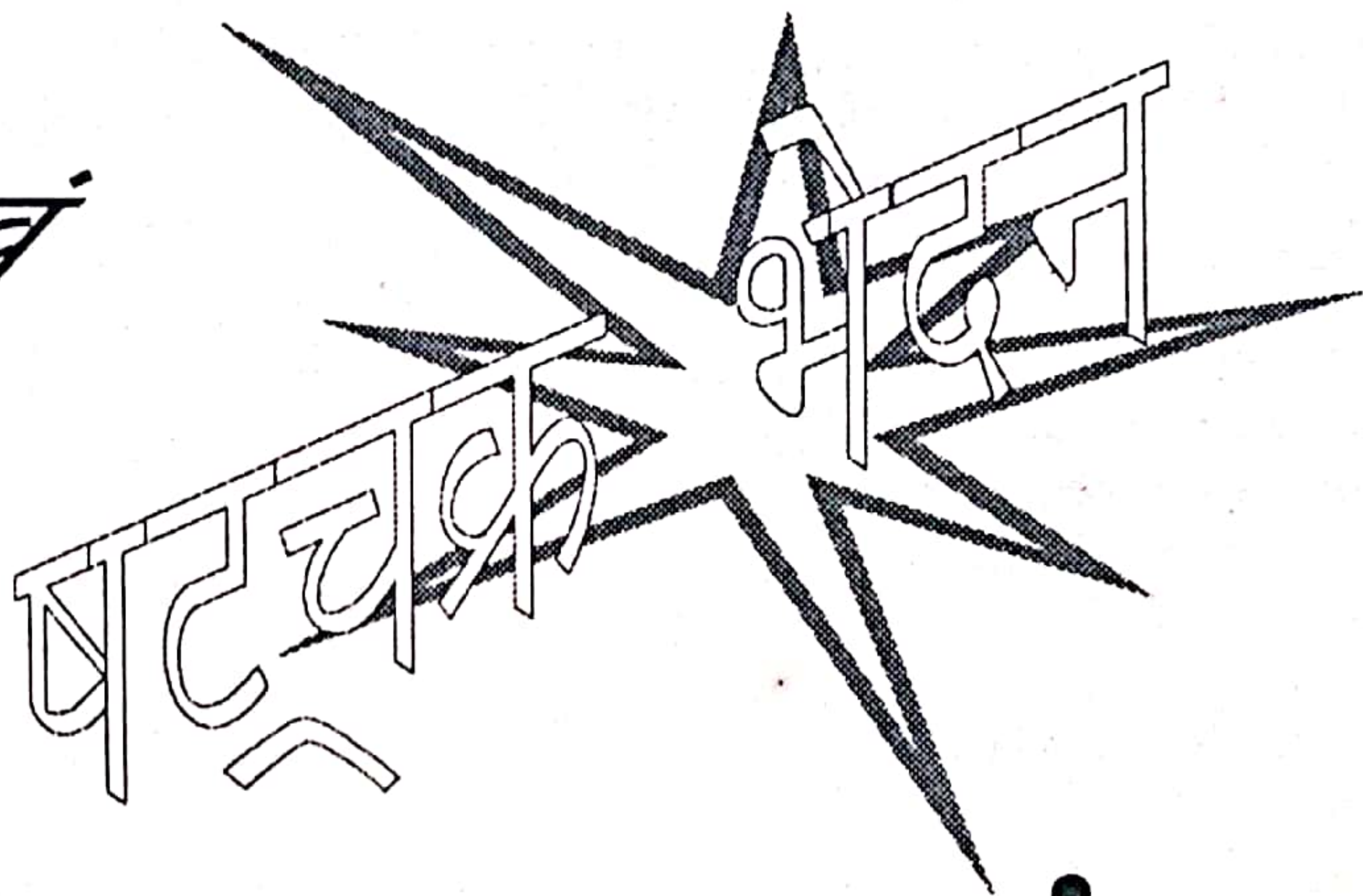
मनुष्य शरीर में मूलाधार आदि छः चक्र हैं इन्हीं का स्पष्ट और प्रामाणिक वर्णन यहां स्पष्ट किया गया है।

मूलाधार चक्र -

यह मूलाधार गुदा और लिंग के मध्य में सुषम्ना नाड़ी से वेष्ठित अधोमुख चार दलों वाला कमल होता है जो गज शुण्डाकृति के रूप में होता है। इसका देवता पृथ्वी है, तथा रंग लाल है, इस चक्र के जाग्रत होने पर साधक रोग रहित हो जाता है। ध्यानावस्था में पहले- पहले साधक को दीप शिखा के समान रोशनी, धुंधला प्रकाश दिखाई देता है। कुछ साधकों को यह चक्र सर्पाकार के रूप में, कुछ को शालीग्राम के पिण्ड जैसा दिखाई देता है। जब साधक प्राणायाम के द्वारा मूलाधार को स्पर्श करता है तो कभी - कभी विचित्र अनुभव होने लगते हैं। जैसे -- पसीना आना , शरीर का कांपना, अर्धमूर्छित होना। इससे साधक को घबराना नहीं चाहिए, समय आने पर यह सब अपने - आप शांत हो जाता है । कभी- कभी साधक को प्राकृतिक दृश्य, देवताओं का मंदिर या सिद्धों की गुफाओं का दृश्य भी दिखाई देता है।
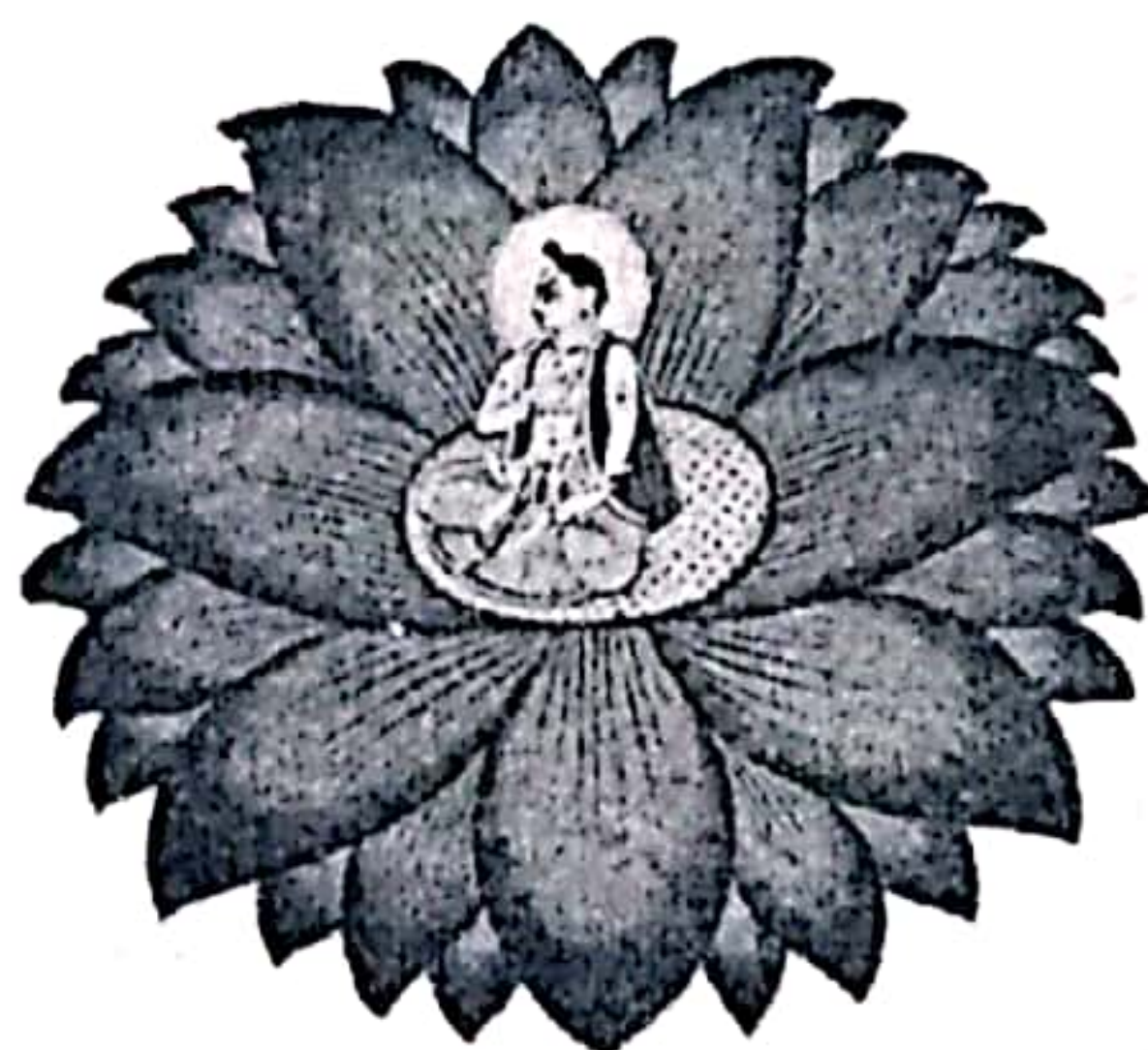
स्वाधिष्ठान चक्र -

मूलाधार के चार अंगुल ऊपर मूत्राशय या गर्भाशय के मूल स्थान के मध्य में छः दलों का कमल, जिसका रंग सिन्दूरी होता है, उसे स्वाधिष्ठान कहते हैं। उसके जाग्रत होने पर साधक का काम, लोभ, मोह आदि दोष तथा अज्ञान रूपी अंधकार स्वतः ही दूर होने लगता है। इसके जाग्रत होने पर साधक का मुख मण्डल स्वतः ही दीप्त होने लगता है। इस चक्र पर ध्यान देने से ब्रह्मचर्य में वृद्धि होती है तथा वैराग्य युक्त मन के द्वारा विषयों पर

विजय प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मणिपुर चक्र -

स्वाधिष्ठान के ऊपर नाभि के मूल में दस पंखुड़ियों वाला एक कमल है जिसका स्वरूप नीलश्याम होता है। इसी को मणिपुर चक्र कहा गया है। इस चक्र के भेदन से साधक में अपूर्व शक्ति आ जाती है तथा कण्ठ में वाक्‌देवी सरस्वती समाहित होती है। इसे नाभि चक्र भी कहते हैं। यह नाभि प्रदेश में मेरुदण्ड के सामने स्थित है। मनुष्य की देह का केन्द्र नाभि है, इस चक्र के जाग्रत होने पर सम्पूर्ण शरीर का तथा उसके आभ्यान्तरिक क्रियाओं का ज्ञान होने लगता है। इस चक्र के दर्शन से साधक पूर्ण रूप से संयमित और योगी बन जाता है। इस चक्र पर ध्यान करने से साधक को हजारों- हजारों सूर्य का प्रकाश दिखायी देता है। वह प्रकाश अत्यन्त शीतल और आह्लादकारी होता है।

अनाहत चक्र -

मणिपुर चक्र के ऊपर हृदय प्रदेश में बारह पंखुड़ियों का लाल रंग का कमल है, जिसे **'हृत् चक्र'** भी कहा जाता है। इस चक्र का ध्यान करने से साधक का मन गुरु से जुड़ जाता है तथा वह सब शास्त्रों का ज्ञाता एवं ज्ञानवान हो जाता है। दोनों फेफड़ों के बीच में यह चक्र विद्यमान है। जब साधक की पहली दृष्टि इस पर पड़ती है तो हाथ की छोटी उंगुली के अग्रपौर के समान अंगूरवत् चक्र दिखायी देता है। इस पर ध्यान करने से परम तत्व का आभास होता है तथा उसे दिव्य दृष्टि भी प्राप्त होती है। जिससे साधक अहंकार शून्य हो जाता है। जीवात्मा का निवास इसी चक्र में माना गया है।

विशुद्ध चक्र -

अनाहत चक्र के ऊपर कण्ठ स्थान में सोलह दलों वाला गुलाबी रंग का कमल है, उसे ही विशुद्ध चक्र कहते हैं। इस चक्र के जाग्रत होने पर साधक कवि, ज्ञानी एवं त्रिकालज्ञ होता है। इस चक्र के जाग्रत होने पर साधक दिव्य - श्रुत बन जाता है। इस चक्र के जाग्रत होने पर साधक को भूख और प्यास का आभास नहीं होता ।

क्या वास्तव में यही स्वरूप है चक्रों का? क्या इसी रूप में दिखते हैं? क्या साधक सचमुच अपने ही शरीर में स्थित पद्‌मदल को अनुभव कर सकता है . . .

आज्ञा चक्र -

मस्तक पर दोनों भौंहों के बीच में दो दलों वाला सफेद रंग का कमल आज्ञा चक्र है। जिसका देवता स्वयं गुरुदेव हैं, इसका ध्यान करने से साधक त्रिकाल दर्शी, परोपकारी, दीर्घायु तथा अनन्त सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। इस चक्र का आकार दीप शिखा के समान होता है। इस चक्र के जाग्रत होने पर साधक हजारों मील दूर के दृश्य को भी देखने में समर्थ हो जाता है, अनेक सिद्धों का दर्शन या देवी देवताओं से मिलन होता है। इसी चक्र को तृतीय नेत्र भी कहा है। यहां पर इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी परस्पर मिलती है। इसीलिए इसे ज्ञान नेत्र या भ्रामरी गुहा भी कहा जाता है।

सहस्रार चक्र -

आज्ञा चक्र के ऊपर मस्तिष्क के बीच में अधोमुख, एक हजार पंखुड़ियों वाला सहस्त्रदल कमल है उसी को सहस्रार कहते हैं। इसके जाग्रत होने पर साधक अपने इष्ट का वहां दर्शन करता है और मंत्र सृष्टा कहलाता है।

अनन्त सिद्धियों का स्वामी बनकर जन्म - मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है। इसे **'दर्शन द्वार'** या **'ब्रह्मरन्ध्र'** भी कहते हैं। यही स्थान है जिसे जीवात्मा का मुक्ति स्थान भी कहा जाता है

इस चक्र का जागरण अपने- आप में बहुत महत्वपूर्ण है, इसके जाग्रत होने पर साधक कर्मबन्धन से छूट जाता है। वह पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र, शोक और मोह रहित होकर मनोवांछित जीवन प्राप्त करता है। मृत्यु इसके नियंत्रण में होती है। सभी विभूतियां इसके पास निवास करती हैं। साधक परम विज्ञानी और स्थित प्रज्ञ कहा जाता है।

ज्योंहि शरीर के भीतर प्रसुप्त प्राणश्चेतना जिससे समस्त शरीर संचालित होता है, जिसे कुण्डलिनी शक्ति कहते हैं।

जब शक्तिपात के माध्यम से यह शक्ति उर्ध्वमुखी होती है तब क्रमशः इन चक्रों को भेदती हुई, उद्‌घाटित करती हुई आगे बढ़ती है और सहस्रार भेदन करती है। तब वह साधक का परम सौभाग्य माना जाता है। यही मानव से महामानव बनने की, नर से नारायण एवं पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की क्रिया है। ◎

कैसे अद्भुत क्षण होंगे ये

जब

जब चार ही दिनों में प्राप्त हो जाएंगे

जीवन के चारों पुरुषार्थ

. . . प्राप्त करने वाले सौभाग्यशाली साधक ही नहीं, इन क्षणों को तो देखने वाले भी पुण्य -भागी हो जाएंगे . . . क्योंकि यह क्षण होंगे ही ऐसे, जो अब तक कभी घटित ही नहीं हो सके इस धरा पर। चार दीक्षाओं के माध्यम से जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्रदान कर देने का मूर्तरूप -- **"दीक्षा चतुष्टय"**। वैष्णव तंत्र का आधार

एक अलौकिक घटना

जो क्रम गोपनीय रहा अब तक इस धरा पर

इस धरा पर छलके चार पीयूष कण . . .

ये चार दीक्षाएं

धनवन्तरी दीक्षा (०४.१२.६३) -

स्वस्थ्य शरीर ही बन सकता है जीवन में समस्त पुरुषार्थों को प्राप्त करने में सहायक, तभी तो पुष्टि दायक योग पुष्य नक्षत्र के अवसर पर विधान रखा गया है, इस दुर्लभ दीक्षा का -- जीवन में रस के आधार एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण "काम" को प्राप्त करने के लिए. . .

ज्ञान दीक्षा (०५.१२.६३) -

व्यक्ति क्यों नहीं प्राप्त कर पाता अपने जीवन में सुख सम्पदा और धन का बहता हुआ स्रोत . . . या दूसरे शब्दों में जीव - जीवन का पुरुषार्थ -- "अर्थ" . . . क्योंकि उसके साथ जन्म - जन्मान्तर से चलते जो रहते हैं, तीन दोष -- देह दोष, आयु दोष एवं भोग दोष। इनकी शुद्धि हो सकती है तो केवल ज्ञान दीक्षा से।

शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (०६.१२.६३) -

जीवन के सीमित वर्षों में आवश्यक नहीं कि एक - एक चक्र जाग्रत करके पाया जा सके कुण्डलिनी जागरण का पूर्ण लाभ और एक ऐसा तेज . . . जो आधार बन सके **"धर्म"** का . . .

एक ही दिवस, एक ही क्रिया और एक ही पल . . . सप्त चक्र जाग्रत करने का दुर्लभ प्रयोग।

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा (०७.१२.६३) -

त्रिपुर सुन्दरी समेटे है रहस्य **"मोक्ष"** का . . . मोक्ष अर्थात जीवन के सभी द्वंद्वों से मुक्ति . . . कष्टों और तनावों के घने अंधकार में मिल गया कोई मार्ग . . अद्भुत समन्वय -- महाविद्या साधना और कालाष्टमी का, मंगलवार का दिवस . . . फिर तो कुछ नया घटित होगा ही . . . जीवन के सभी पक्षों के लिए।

जीवन के चार पुरुषार्थ जो सन्तुलन हैं, चार पायों की तरह, जिन्हें दृढ़ बनाती हैं ये दीक्षाएं. . .

यह बार - बार घटित होने वाला अवसर नहीं बार - बार रचे जाने वाले मुहूर्त नहीं . . .

ये केवल दिल्ली में ही दीक्षाएं दी जा सकेंगी

स्थल -- ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४, फोन :०११-७१८२२४८, फेक्सः ०११-७१८६७००

(पृष्ठ १२ का शेष भाग)

है। इसी क्षण दोनों हाथ फैला कर कह देना है, मैं आपका हूं, आपके चरणों में विसर्जित हूं, आप मुझे उस स्थान का रास्ता बताइए जहां मैं पहुंचना चाहता हूं। जिसको अमरत्व कहा है, जिसको पूर्णता कहा गया है, जिसको सिद्धाश्रम कहा गया है और ऐसी स्थिति ही तुम्हें पूर्णता तक पहुंचाने का रास्ता दिखाएगी।

यह दीक्षा के माध्यम से ही संभव है -

इसके लिए साधना करने की आवश्यकता नहीं है, महाविद्याएं सिद्ध करने की भी जरूरत नहीं है, माला जपने की भी जरूरत नहीं है, दीपक जलाने, अगरबत्ती लगाने की भी जरूरत नहीं है इसके लिए तो एक ही जरूरत है 'समर्पण'। इसके लिए जरूरी है पूर्णता की दीक्षा प्राप्त करना, पूर्णत्व दीक्षा प्राप्त करना और गुरुदेव तुम्हें इसके लिए तैयार करेंगे।

दीक्षा का तात्पर्य है – जो तुम नहीं प्राप्त कर सको गुरु तुम्हें दे, तुम साधनाओं के माध्यम से पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकोगे, कितने साल तक मंत्र जप करते रहोगे। मैंने देख लिया है कि इस जन्म में दस- पांच साल हो गये और तुम कुछ कर नहीं पा रहे हो, तब मुझे यह बात लिखनी पड़ रही है, तब मुझे तुमसे यह बात कहनी पड़ रही है, तब चैलेंज के साथ यह बात तुम्हें समझानी पड़ रही है कि तुम्हारा यह जीवन कहीं बरबाद न हो जाए, तुम कुछ कर नहीं सकते तो मैं करूंगा। कई बार तो तुम हाथ छुड़ाकर भाग गए पिछले जीवन में, उससे पिछले जीवन में, इस बार मैं तुम्हारा हाथ पकड़ रहा हूं, जिससे तुम भाग नहीं सको। इस बार मैं तुम्हें सीने से लगा लूंगा कि तुम अलग नहीं हो सको, इस बार मैं तुम्हें वह सब कुछ दे देना चाहता हूं जिसके लिए आया हूं। ***अभी तक मैं तुम्हारा रखवाला रहा हूं – तुम्हारे जीवन का भी, तुम्हारी साधनाओं का भी। मैं रखवाला कब तक रहूंगा? कब तक मैं तुम्हें खुद उस लायक बना नहीं दूंगा कि तुम दूसरे का रखवाला बन सकोगे, दूसरों का मार्गदर्शन कर सकोगे, दूसरों को अमरत्व दे सकोगे, दूसरों को पूर्णता दे सकोगे*** और यह सब **पूर्णत्व दीक्षा** के माध्यम से संभव है। मैं तुम्हें यह पूर्णत्व दीक्षा देने के लिए तैयार हूं। यह तभी संभव होगा जब तुम मुक्त होकर आ सको, जब तुम्हारे मन में छल - कपट, असत्य विचार नहीं होगा। जब तुम्हारे मन में शंका नहीं होगा, जब तुम्हारे मन में न्यूनता नहीं होगी सब कुछ छोड़कर आना ही पूर्णता और पूर्णत्व दीक्षा का भाग है।

पूर्णत्व दीक्षा : गुरु चरणों में विसर्जन ही पूर्णता

मैं तुम्हें इस जीवन में ही उस जगह पहुंचा देना चाहता हूं जहां वापस जन्म नहीं होता जहां तनाव नहीं होता, जहां किसी प्रकार की परेशानियां नहीं आती, जहां किसी प्रकार का कष्ट - अभाव नहीं होता, जहां एक आनन्द है, एक उमंग है, एक पूर्णता है, एक मस्ती है, एक चैतन्यता है, एक सम्पूर्णता है, ऐसा आनन्द है जिसको **अखण्ड आनन्द** कहा गया है। अपनी मस्ती में झूमते हुए उस ईश्वर की, उस ईश्वरत्व के दर्शन करना है, जो अपने आप में अद्‌भुत है, अनिवर्चनीय है, अद्वितीयता है। करोड़ों में कोई एक बिरला ही प्राप्त कर सकता है। तुम वहां खड़े होकर देख सकोगे कि तुम्हारे परिवार वाले, तुम्हारे परिचित कितना खोखला और घटिया जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तुम्हारे परिचित किस प्रकार से दुखी, परेशान और व्यथित हैं, तब तुम अहसास कर सकोगे कि तुम कितनी ऊंचाई पर पहुंचे हुए हो और जब वे आंख उठाकर तुम्हें देखेंगे तो उनके मन में ग्लानि और पछतावे के अलावा कुछ होगा भी नहीं। वे सोचेंगे कि काश! वहां तक हम पहुंच पाते, मगर वहां पहुंचने के लिए आवश्यक है पूर्ण रूप से गुरु चरणों में विसर्जन। उस जगह पहुंचने के लिए जरूरी है पूर्णत्व दीक्षा और उस जगह पहुंचने के लिए जरूरी है गुरु की सेवा। *सेवा के माध्यम से ही, गुरु के कार्यों को निरंतर करते हुए ही गुरु के चरणों में समर्पित होते हुए भी वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो ऋषि - मुनियों का लक्ष्य रहा है* जो देवताओं का लक्ष्य रहा है, जो समाज का लक्ष्य रहा है। यही तुम्हारा लक्ष्य है। मैं तुम्हें इन शब्दों के साथ आवाज दे रहा हूं अपने सीने से लगाने के लिए, आवाज दे रहा हूं इस जीवन से छुटकारा दिलाने के लिए, आवाज दे रहा हूं इन सारे बंधनों से मुक्त होने के लिए, आवाज दे रहा हूं जीवन की पूर्णता देने के लिए, अगर तुम्हारे पांव ठिठक गए अगर तुम रुक गये तुम्हारा जीवन बर्बाद हो जाएगा, गुरु तुम्हें नहीं प्राप्त हो सकेंगे। फिर तुम्हारा यह जीवन बर्बाद हो जाएगा, मैं नहीं कह सकता कि अगली योनि तुम्हें कैसी मिले, मैं तो इस बार सब कुछ सौंप देना चाहता हूं, सब कुछ सौंप देना चाहता हूं अपने पूर्णगुरुत्व के साथ।

मैं एक बार फिर तुम्हें आवाज देता हुआ चेतावनी देता हुआ प्रेम से, स्नेह से, भाव - विहवलता से, अपने सीने से लगाने के लिए, दोनों हाथ फैलाए आतुर खड़ा हूं। तुम्हें अपनी भुजाओं में भरने के लिए, अपने - आप में समाने के लिए, अपने - आप में समर्पित करने के लिए, अपने- आप में विसर्जित करने के लिए अपने- आप में समायोजित करने के लिए, पूर्णता देने के लिए। मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद दे रहा हूं। ◎

तुम्हारे बीच जितने समय तक हूं, उतने समय के एक-एक क्षण की तो सार्थकता प्राप्त कर लो, प्रत्येक क्षण को जीवित जाग्रत बना लो . . .

महालक्ष्मी दीक्षा

जो संभव ही कहां बिना भाग्य के

"क्या है महालक्ष्मी दीक्षा का अर्थ, कैसे घटित हो सकता है इसके द्वारा जीवन में कोई परिवर्तन . . . भाग्योदयकारी, अचूक और सम्पूर्ण ढंग से . . . . यह दीक्षा नहीं, सही अर्थों में महालक्ष्मी स्थापन की क्रिया है, भाग्य से सौभाग्य तक की यात्रा है . . . "
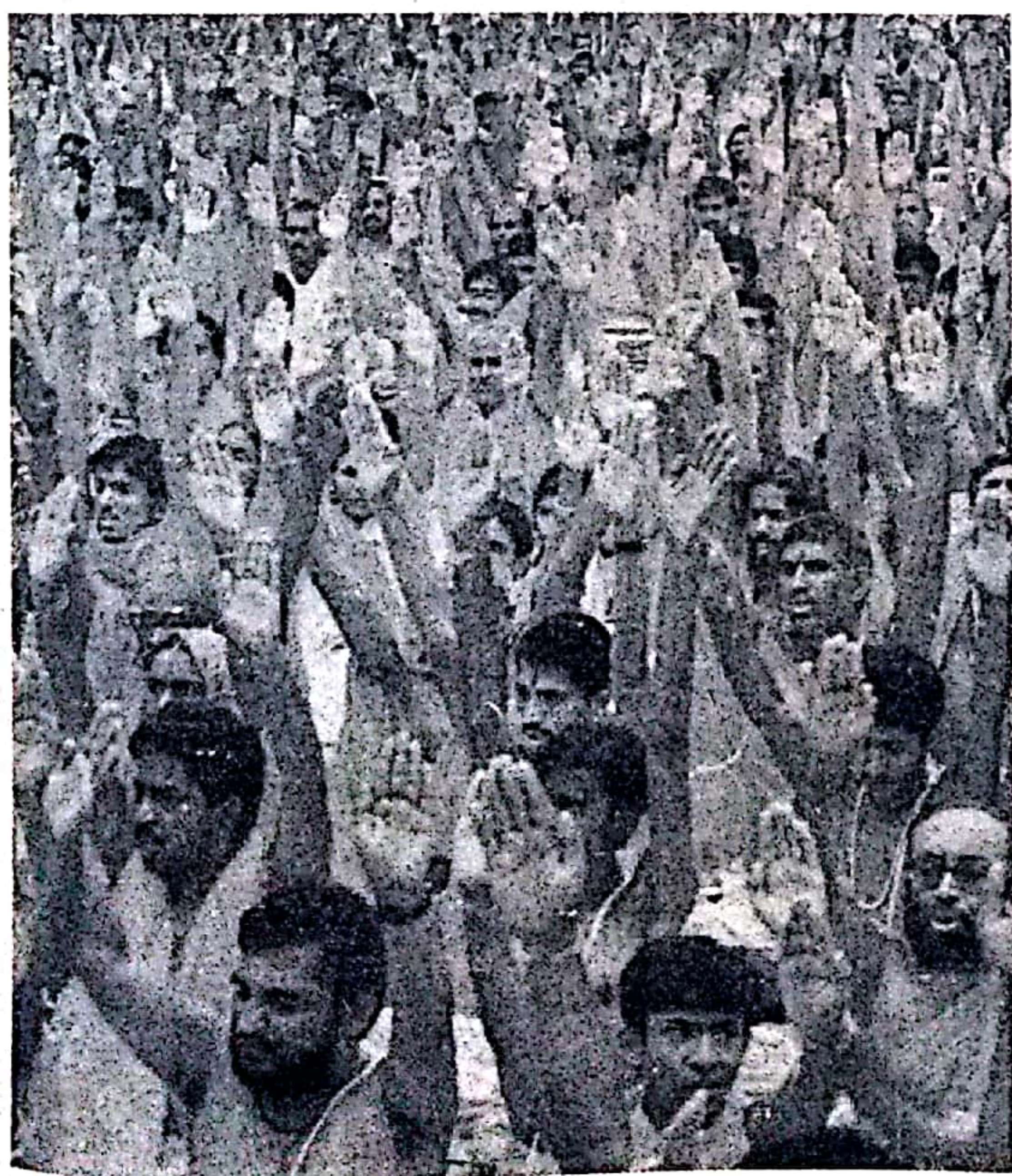
त्रिविध पक्ष होते हैं व्यक्ति के जीवन में -- दैहिक, दैविक और भौतिक। सारे कष्ट और सारे सुख इन्हीं तीन पक्षों के आस - पास घूमते रहते हैं। आद्य - शक्ति के भी तीन ही मुख्य स्वरूप हैं और सूक्ष्मता पूर्वक देखें तो वे जीवन के इन्हीं तीनों पक्षों से ही सम्बन्धित हैं। जहां **दैहिक पक्ष** रोग बाधा, पीड़ा, कष्ट का निवारण **महाकाली** की उपासना से संभव है, वहीं **भौतिक पक्ष** पूर्ण रूप से **महालक्ष्मी** से संबंधित है और महाकाली , महालक्ष्मी की संयुक्ति से ही संभव हो पाती है महासरस्वती की आराधना। **महासरस्वती** केवल विद्या की ही देवी नहीं अपितु जीवन के कलात्मक स्वरूप, चिन्तन, आध्यात्मिक आधार

की देवी है जिसकी कृपा से भेद होता है, सामान्य और असामान्य में यदि हम अपने पर्वों और परम्परा को देखें तो हमारे पर्व भी ठीक उसी क्रम में आते हैं जिस क्रम में जीवन की प्राथमिकता का निर्धारण होता है, सबसे पहले महाकाली का पर्व नवरात्रि फिर महालक्ष्मी का पर्व दीपावली और उसके बाद महा सरस्वती का प्रकट दिवस -- बसंत पंचमी। हमारी दृष्टि धुंधली हो गई विभिन्न संस्कृतियों की घाल- मेल से, जबकि भारतीय संवत तो आरम्भ होता है चैत्र नवरात्रि से -- महाकाली की उपासना से। आश्विन नवरात्रि भी परम्परा से वर्षारम्भ के रूप में ही मानते हैं। यह संक्रमण का काल होता है और संक्रमण के काल में जिस चैतन्यता और ऊर्जा के विस्फोट की दशाएं होती हैं, उसी के सदुपयोग से नव निर्माण संभव हो पाता है, अन्यथा जीवन तो बंधी - बंधायी लीकों पर चलता रहता है, उसमें विशेषता क्या और नवीनता क्या?

कार्तिक माह ऐसा ही संक्रमण का चैतन्य माह है जबकि ज्योतिषीय दृष्टि से, भौतिक दृष्टि से, प्राकृतिक दृष्टि से विशेष योग निर्मित होते ही रहते हैं। यह अनायास ही नहीं है। इस माह में दीपावली जैसा महत्वपूर्ण पर्व तो पड़ता ही है साथ ही पूरे माह लक्ष्मी साधनाओं के लिए अवसर उपस्थित होते रहते हैं। यदि इस विषय में आर्य जीवन पद्धति को समझते हुए शोध किये जाएं तो अनेक रोचक और ज्ञान वर्धक तथ्य प्राप्त हो सकते हैं।

उस युग की दुर्गम जीवन - शैली हो या आज का भौतिक परिवेश यह बात तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए, सामान्य से कुछ अधिक प्राप्त करने के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है और केवल घोर परिश्रम ही नहीं, अब तो बहुत अधिक छल -प्रपंच और जोड़-तोड़ भी करनी पड़ती है, जिससे कहीं न कहीं व्यक्ति को मानसिक खिन्नता और तनाव आकर घेर ही लेता है। मनुष्य की प्रकृति रही है, कि उसने व्यवहारिक नीतियों के साथ - साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे उपाय प्राप्त करने चाहे जिससे अल्प काल में ही जीवन के सभी सुखों का, समस्त प्रकार के वैभव का भोग किया जा सके। ऐसा न हो कि किसी एक

मधुर कह देने से ही मधुरता नहीं घुल जाती . . . व्यवहारिक प्रक्रिया अपनानी ही पड़ती है, प्राप्त करने के लिए महालक्ष्मी दीक्षा . . .

अभाव में, किसी एक कामना की पूर्ति न हो पाने में, फिर अन्य सभी सुख - सुविधाएं व्यर्थ हो जाएं। क्या जीवन में प्रत्येक स्थिति का निर्माण संभव है, क्या जीवन में व्याप्त किसी अभाव को समाप्त करने के साथ - साथ, क्या कोई ऐसी भी क्रिया संभव है, जिससे जीवन में समा गई कोई विसंगति भी समाप्त की जा सके? जीवन के इस बिन्दु पर आकर एक ही तथ्य, एक ही उपाय शेष रह जाता है और वह होता है-- दैवी कृपा का।

जीवन में साधना में देवी - देवताओं का महत्व तो होता ही है लेकिन जैसा कि पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर स्पष्ट किया था कि मानव जीवन में वे योगी, वे चैतन्य माध्यम अधिक स्तुत्य हैं, जो किसी देवी अथवा देवता की अपेक्षा हमारे समक्ष प्रकट, प्राप्त और सहज उपलब्ध हैं।

भगवती महालक्ष्मी से हम सीधे धन की याचना नहीं कर सकते। महाकाली हमारे सामने उपस्थित होकर सहज हमारे जीवन के अभाव समाप्त नहीं कर सकती, और ऐसी स्थिति में जीवन को संवारने के लिए दो ही उपाय हैं प्रथम साधना का और द्वितीय गुरु कृपा का। सक्षम गुरु अपनी कृपा की वृष्टि करते हैं दीक्षा के माध्यम से। दीक्षा जो कि सीधे - सीधे परिवर्तन की क्रिया का दूसरा नाम है, दीक्षा जो कि अनगढ़, बेडौल पत्थर को तरासने की क्रिया है। जीवन को बेडौल और निष्प्राण पत्थर सा बनाए दैन्य, तनाव, ऋण, दारिद्रय, अपमान जैसे कई अनगढ़ किनारों को काट कर उसे जीती - जागती, सजीव, सप्राण, बोलने - बोलने, लगती मूर्ती का आकार देने की क्रिया है -- **'महालक्ष्मी दीक्षा'**।

यह भाग्य से प्राप्त होने वाली दीक्षा है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति तो इसके लिए उपस्थित नहीं होगा और जो उपस्थित होगा उसके जीवन में आरम्भ होगी निर्धनता से वैभव की यात्रा तथा शून्य से सम्पूर्ण की यात्रा।

''सम्पूर्णता'' ही महालक्ष्मी का सही विश्लेषण है।

संतान प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि प्रयोग
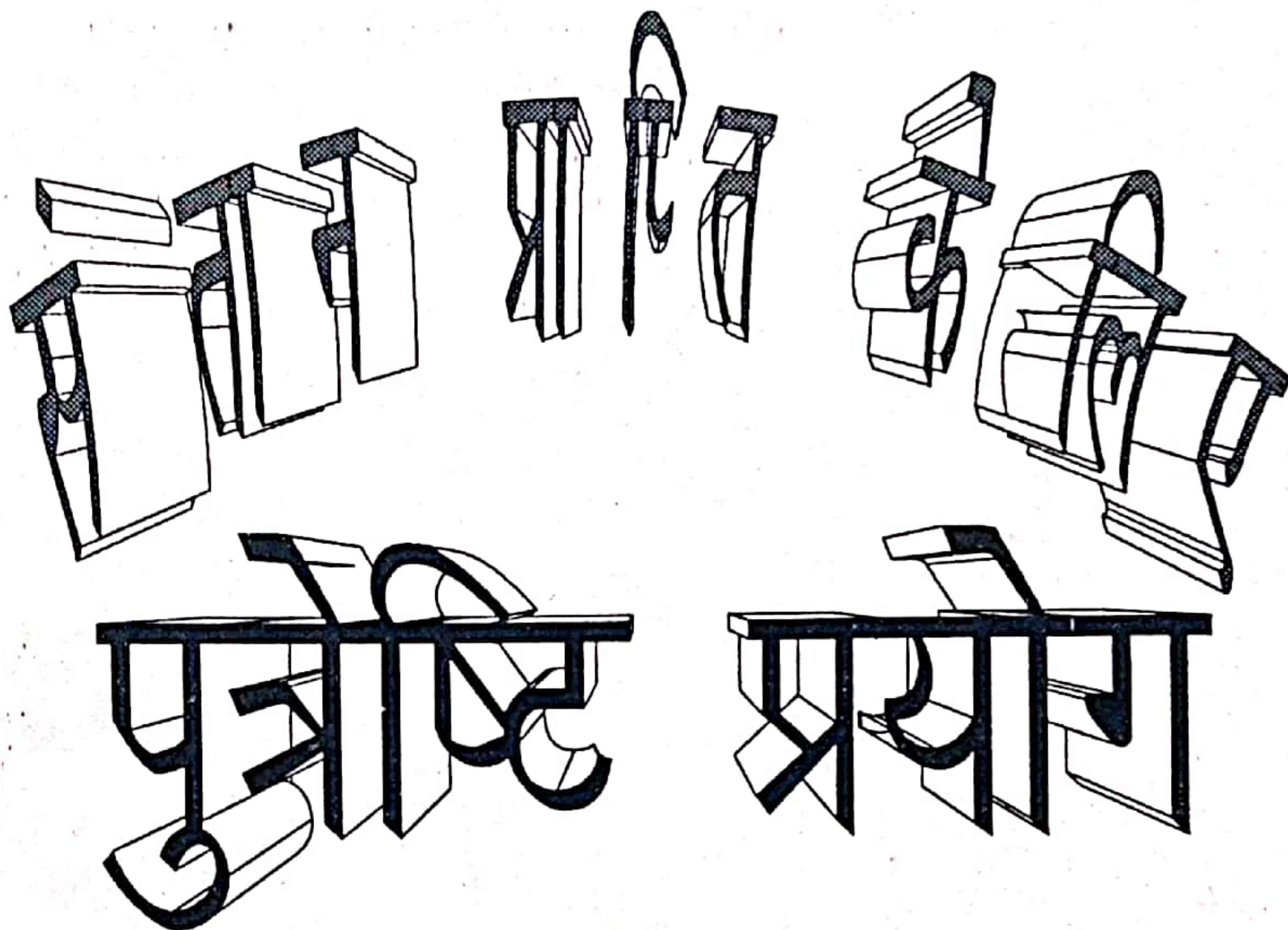
धर के आंगन में खेलता हुआ, नन्हा सा, प्यारा सा फूल की तरह कोमल बच्चा जब दौड़ता हुआ अपनी मां के आंचल में छुप जाता है, तब उस मां के चेहरे पर छलकने वाले आनन्द का वर्णन करना असम्भव सा लगता है। अपने आप को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानती है एक पुत्रवती स्त्री। पुरातन काल से चली आ रही है यह परम्परा जब भी स्त्री किसी बुजुर्ग का चरण स्पर्श करती है तो उसे आशीर्वाद मिलता है - 'सौभाग्यवती भव', 'पुत्रवती भव' . . .

निश्चय ही स्त्री की पूर्णता उसके संतानवती, पुत्रवती होने से जुड़ी है। संतान सौभाग्य का प्रतीक है। वह स्त्री जो संतानोत्पत्ति के सौभाग्य से वंचित रह जाती है, वह भले ही ऊपरी तौर पर सामान्य व्यवहार दिखलाए, किन्तु उसे उसका जीवन बोझ की तरह लगने लगता है, हर पल एक टीस सी रहती है -- क्या कभी मेरे आंगन में भी बच्चों की किलकारी गूंजेगी?

आज के युग में डॉक्टरों ने "परखनली शिशु" का आविष्कार करके एक नवीनतम उपलब्धि हासिल की है। किन्तु इसकी सफलता का प्रतिशत बहुत कम है। साथ ही यह विधि अत्यन्त महंगी है, जिसे मध्यम वर्गीय परिवार के लोग आसानी से नहीं अपना रहे हैं। परखनली विधि के द्वारा उत्पन्न बच्चा जब परिवार से निकलकर समाज में पैर रखता है, तब उसे अत्यन्त आश्चर्यजनक वस्तु मानकर लोग उसके साथ विचित्र व्यवहार करते हैं। ऐसी

स्थिति में इसके साथ होने वाले व्यवहार के कारण, बच्चा मानसिक रूप से परेशान रहने लगता है, साथ ही उसके मां- बाप को भी मानसिक उलझनों का सामना करना पड़ता है।

विज्ञान अब इस कोशिश में लगा है कि पुत्रहीन दम्पत्ति को प्राकृतिक विधि के द्वारा ही संतान उत्पन्न हो।

अनन्त है साधना का क्षेत्र -

जिन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान के पास नहीं है, उनका ही उत्तर तो हमारे तंत्र, मंत्र , शास्त्र, साधनाओं में निहित है । *हमारे ऋषि, मुनियों ने जो तपस्याएं की, उनमें उन्होंने सिर्फ भगवान के नाम की मालाएं ही नहीं फेरी, उन्होंने मानव जीवन को पूरा महत्व देते हुए, उसकी प्रत्येक समस्या का समाधान ढूंढा।* उनकी तपस्या का मुख्य उद्देश्य रहा कि समाज में रहने वाले व्यक्ति के जीवन को कैसे साधारण से श्रेष्ठ और श्रेष्ठतम बनाया जाय। इसके लिए नक्षत्रों का अध्ययन किया, प्रयोग किये, उनकी प्रामाणिकता को परखा और जब पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गये तो उसे संहिता बद्ध कर समाज के समाने प्रस्तुत किया।

रामचरित मानस में वर्णन है कि महाराजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति के लिए प्रयोग कराया था। प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने तक, जब दशरथ के घर संतान उत्पन्न नहीं हुई तो उन्हें इस बात की अत्यन्त चिंता हुई कि उनके बाद इस राज्य को कौन संभालेगा? उनकी मृत्यु के बाद कौन पिण्ड दान देगा? अपनी इस समस्या को उन्होंने अपने गुरु वशिष्ठ से बताया। **महर्षि वशिष्ठ ने उस समय के मंत्रों के ज्ञाता श्रृंगी ऋषि को इस समस्या के समाधान हेतु बुलाया और उनके द्वारा पुत्रेष्टि प्रयोग सम्पन्न कराया** । सर्वविदित है कि इस प्रयोग के बाद दशरथ के घर चार पुत्र रत्न उत्पन्न हुए । जिनकी वन्दना आज तक लोग करते हैं।

द्वापर युग में भी दुर्वाशा ऋषि ने कुन्ती की सेवा से प्रसन्न होकर पुत्रेष्टि प्रयोग की साधना सिखाई थी, कालान्तर में इस प्रयोग के द्वारा ही कर्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव कुन्ती तथा माद्री के गर्भ से जन्म लिये थे।

युग परिवर्तन के साथ - साथ यह प्रयोग भी काल के गर्भ में जा छुपा, किन्तु समाज के हितार्थ परम पूज्य गुरुदेव ने अत्यंत कृपा करके पुनः इस प्रयोग को बताया। इसे पत्रिका पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने में अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है –

क्या संभव है कि कृत्रिम उपायों द्वारा, परखनली शिशु जैसी क्रिया द्वारा, जीवन में पूर्ण संतान सुख और संतुष्टि मिल सके? आत्मीयता और सहजता पनप सके . . .

श्रेष्ठ पुत्रेष्टि प्रयोग -

यह प्रयोग पति-पत्नी दोनों को समन्वित रूप से सम्पन्न करना चाहिए। सर्वप्रथम पति-पत्नी सद्गुरु देव के पास आकर **''मनोवांछित गर्भ निर्माण दीक्षा'** प्राप्त करें फिर गुरु आज्ञा प्राप्त करके यह प्रयोग सम्पन्न करें।

साधना विधि -

एक छोटी चौकी पर अष्ट दल कमल अंकित कर उसके ऊपर मिट्टी का कलश स्थापित कर कलश को जल से अच्छी तरह भर दें। इसके ऊपर एक दीप प्रज्वलित करें। कलश के सामने त्रिगन्ध से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर **''पुत्रदा यन्त्र''** स्थापित करें। यन्त्र के दाहिने तरफ **पांच पुत्रदा फल** एक क्रम में स्थापित करें। इनके सामने पांच दीपक शुद्ध घी का जलायें। यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। कलश स्थापन से पूर्व , गुरु चित्र स्थापित कर के संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न करें। त्रिगन्ध से यंत्र और पुत्रदा फल पर तिलक करें। यंत्र के चारों ओर **पुत्र जीवा माला** रखें। एक नारियल मौली में बांध कर यंत्र के बांये तरफ स्थापित करें।

पति - पत्नी दोनों ही हाथ जोड़ कर परम पूज्य गुरुदेव से विनती करें **'' हे गुरुदेव आप की आज्ञानुसार हम पुत्रेष्टि प्रयोग सम्पन्न करने जा रहे हैं, आप कृपा करके हमें भगवान कृष्ण और भगवान राम की तरह श्रेष्ठ पुत्र प्रदान करें।**

इसके बाद क्रमशः पति और पत्नी दोनों पुत्र जीवा माला से क्रमशः निम्न मंत्र की पांच - पांच माला मंत्र जप करें और दूसरा साथ में बैठ कर मानसिक जाप करे-

मंत्र --

ॐ नं वै पुत्र प्राप्त्यर्थं वै नं नमः

पांच दिन तक इसी प्रकार प्रयोग सम्पन्न करें। रोज मिट्टी के दीपक बदलते रहें, अंतिम दिन प्रयोग पूर्ण होने पर नारियल को फोड़कर उसकी कुछ गिरी पूजा स्थान पर ही पति -पत्नी दोनों खा लें।

प्रत्येक रविवार को पुत्रजीवा माला से मंत्र जप सम्पन्न करें। ऐसा ११ रविवार तक करें। प्रत्येक रविवार को सिर्फ फल या दूध ही आहार के रूप में ग्रहण करें। ग्यारहवें रविवार के बाद पुत्रदा यंत्र को सिद्ध सूत्र में पिरोकर पत्नी धारण कर ले। पुत्रदा फल को एक स्वच्छ कपड़े में बांधकर सुरक्षित जगह में रखें। इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न करके फोन द्वारा या पत्र द्वारा अथवा स्वयं आकर पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करें।

अलौकिक गुटिका पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

. . . जीवन साधक का हो या गृहस्थ का - बाधाएं आती ही रहती हैं, और हर बार नई बाधा क्या बता कर आती है कि वह कैसी होगी?

आकस्मिक बाधा हो या न भी हो लेकिन हर समस्या के लिए जो उपचार चाहिए, वह तो चाहिए उसी पल, तत्क्षण . . .

ऐसे में तो बस . . .

वर्षों से आजमाये छोटे - छोटे टोटके या ऐसे ही यंत्र जो रचे गये हैं दिव्यता से, बनाते हुए उनको अलौकिक . . .

- घर में आशाओं का केन्द्र होता है , परिवार का बच्चा, लेकिन वही मंद बुद्धि हो या उसकी स्मरण शक्ति क्षीण हो तब . . . , इसी गुटिका को धारण कराना ही पड़ता है।
- आयु बीत जाने पर भी स्त्री का विवाह न होना अभिशाप बन जाता है, जीवन में तब मदद के लिए आगे आती है यही गुटिका, मनोवांछित वर के चित्र के साथ बांध कहीं गुप्त रूप से रखने पर . . .
- बच्चों और केवल बच्चे ही क्यों? बड़ी आयु के व्यक्तियों को भी बाधा घेर लेती है -- रात में भयंकर स्वप्नों की, ऐसे में यही गुटिका सिरहाने रख मुक्ति पायी जा सकती है।
- कैसा भी शत्रु हो यदि उसके नाम के साथ इस गुटिका को लाल वस्त्र में बांध, आक के पेड़ से बांध दें, तो सप्ताह बीतते न बीतते शत्रु निस्तेज हो जाए।
- दुकान का गल्ला हो या घर का अन्न भण्डार, यही गुटिका तो वृद्धि प्रदान करती है।
- व्यापार वृद्धि न हो रही हो, तो इसे दुकान पर ऐसे स्थान पर स्थापित करें, कि प्रत्येक आने - जाने वाले की निगाह इस पर पड़े ही।
- और न मिल रहा हो नौकरी में प्रमोशन, तो इसे अपने ऑफिस की दराज में गुप्त रूप से डिब्बी में बंद करके अवश्य रखें।
- मोह लेना हो जिसका भी दिल , उसके घर के दरवाजे पर इसी गुटिका का चूर्ण बनाकर, नाम लेते हुए चुपचाप बिखेर दें।
- किसी भी साधना में और विशेष रूप से अप्सरा वर्ग की साधना में इसे स्थापित करना आवश्यक ही बन जाता है।
- जीवन में जहां कोई मन - चाहा काम न हो रहा हो या कोई बाधा वर्षों से पीछा न छोड़ रही हो, तो इस गुटिका को चावल के ढेर में दवा कर, चुपचाप किसी को दान कर दें और मन ही मन अपनी मनोकामना बोल दें।

. . . अपने नाम के ही अनुरूप यह सचमुच है "एक अलौकिक रचना" और अलौकिक वस्तुएं घर में स्थापित होते ही दिखा जाती हैं ऐसे - ऐसे चमत्कार . . .

बन जाती हैं ऐसी सहायक कि फिर दांतो तले ऊंगली ही दबा लेनी पड़ी। प्रत्येक साधक और गृहस्थ के घर में निश्चय ही स्थापित होने योग्य . . .

पल पल अमृत छलके वाणी से

जो निरन्तर सृजित हो रहा है
पूज्यपाद गुरुदेव
की रसमय वाणी में

ऑडियो (प्रति कैसेट - ३०/-)

मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं --

संभव है जीवन को पूर्व के काल में पहुंच कर खुद अपनी ही आंखों से देख लेना और पा लेना, सभी रहस्य इसी जन्म के . . .

समाधि के सात द्वार -

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध, जिसकी सैकड़ों प्रतियां प्राप्त कर मुग्ध हो चुके हैं, ब्रिटेन और अमेरिका के साधक भी तो . . .

विडियो (प्रति कैसेट - २००/-)

अन्जानी पगडंडियों पर पूज्य गुरुदेव के साथ -

जीवन की रोमांचक अनुभूतियों को बताता और प्रदर्शित करता एक जीवित पृष्ठ . . .

तंत्र के गोपनीय रहस्य -

उन सूत्रों का सजीव प्रस्तुतीकरण, जो आधार है तांत्रिक साधनाओं में, एक सजीव चित्रण, पूज्यपाद गुरुदेव के संग .

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४,
फोन - ७१८२२४८
फेक्स- ०११-७१८६७००

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१,
फोन - ०२९१-३२२०६

महालक्ष्मी का स्वर्णिम स्वरूप है

कनकधारा

-- शंकराचार्य

भगवतपाद आद्यशंकराचार्य अपने युग के ही नहीं प्रत्येक युग के लिए और युग - युगान्तरों तक के लिए देवी प्रज्ञा संपन्न युग पुरुष के रूप में विख्यात हैं। एक भारतीय जीवन का एक अत्यन्त उज्जवल पृष्ठ जब एक तेजस्वी पुरुष ने अपने अदम्य साहस और बल से पूरे भारत - वर्ष को नवीन चेतना से प्रकाशित कर दिया, केवल ३२ वर्ष की अल्पायु में सम्पूर्ण भारत को एक छोर से दूसरे छोर तक ज्ञान और साधना द्वारा एकीकृत कर दिया। परम्परा से चली आ रही जटिल और गूढ़ साधनाओं के स्थान पर उन्हीं साधनाओं को सरलतम तांत्रोक्त अथवा मांत्रोक्त रूप से प्रस्तुत कर, प्रत्येक सामान्य व्यक्ति के लिए, और साधक - संसार से निकाल कर, गृहस्थों के जीवन तक प्रवेश दिया। उनके प्रयोगों के साथ में जुड़ी कथाएं तो रूपक हैं, जबकि सत्यता यह है कि उनके आग्रह का परिणाम ही रहा, जो हमें अनेक लुप्त साधनाएं और ज्ञान प्राप्त हो सका।

कनक धारा स्तोत्र भी एक ऐसा ही अत्यन्त सरस पद है, जब कि भगवतपाद शंकराचार्य एक वृद्धा की दरिद्रता पर भावविह्वल होकर मधुर कंठ से भगवती लक्ष्मी की आराधना की और उन्हें बाध्य कर दिया कि वह केवल महालक्ष्मी स्वरूप में ही नहीं कनकधारा स्वरूप में उपस्थित हों और जब - जब ऐसे श्रेष्ठ ऋषि और यति आह्वान करते हैं, तो वे आह्वान ही नहीं करते आदेश करते हैं कि उनकी मनोवांछित देवी - देवता उस रूप में उपस्थित हों। कनकधारा स्तोत्र ऐसा ही स्तोत्र है। कनकधारा स्तोत्र भगवतपाद की अन्य रचनाओं की भांति ही अनुपम और विलक्षण है ही , केवल काव्य की दृष्टि से ही नहीं, अपने प्रभाव की दृष्टि से भी. आग्रह और प्राणों के बल का ऐसा समायोजन है कि जो भी उसका सस्वर पाठ करे, उसके लिए तो लक्ष्मी हस्तकमलावत हो जाए। हाथ में रखे पुष्प के समान स्पष्ट अत्यन्त सुलभ, दरिद्री से दरिद्र व्यक्ति भी मिटा दे अपने दुर्भाग्य की पंक्तियां, और स्वयं अपना भाग्यविधाता बनकर अपने ही हाथों से लिखे अपने सौभाग्य की पंक्तियां --

कंठ में आतुरता भगवतपाद के समान भाव विह्वलता और योगियों के समान आग्रह, इन्हीं का संयोजन करके स्तुति पाठ करने का विधान है कनकधारा स्तोत्र -

कनकधारा स्तोत्र

अंगं हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती, भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांग लीला, मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवताया।। १ ।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीय महोत्पले या, सा में श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ।। २ ।।
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष, मानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषो पि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध, मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ।। ३ ।।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द, मानन्दकन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम्।
आकेकरस्थितिकनीकिमपक्ष्म नेत्रं, भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ।। ४ ।।
बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या, हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोपि कटाक्ष माला, कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ।। ५ ।।

कालाम्बुदालितलिसोरसि कैटभारे, र्धाराधरे स्फुरति या तु तडंग दन्यै ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति, र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ।। ६ ।।
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान, मांगल्यभाजि मधुमाथिनी मन्मथेन।
मयूयापतेत्तदिह मन्थम मीक्षणार्द्ध, मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ।। ७ ।।
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा, मस्मिन्न वि किंचनविहंगशिशौ विषाणे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं, नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ।। ८ ।।
इष्टा विशिष्टमतयोपि यया दयार्द्र, दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभंते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां, पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ।। ९ ।।
गीर्तेवतेति गरुडध्वजभामिनीति, शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषुं संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ।। १० ।।
श्रुत्यै नमोस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै, रत्यै नमोस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोस्तु शतपत्रनिकेतनायै, पुष्टयै नमोस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ।। ११ ।।
नमोस्तु नालीकनिभान्नायै , नमोस्तु दुग्धोदधिजन्म भूत्यै ।
नमोस्तु सोमामृतसोदरायै, नमोस्तु नारायणवल्लभायै ।। १२ ।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि, साम्राज्यदान विभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्द्वनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ।। १३ ।।
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः , सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
संतनोति वचनांगमान, सैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरींभजे ।। १४ ।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते, धवलतमांशुकगन्धमाल्य शोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे, त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।। १५ ।।
दिग्धस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट, स्वर्वाहिनीतिमलचारुजलप्लुतांगम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष, लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ।। १६ ।।
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं, करुणापूरतरंगितैरपाङ्ग्यै ।।
अवलोकय मामकिंचनानां, प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।। १७ ।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं , त्रयोमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभामिनी, भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ।। १८ ।।

देवी की इस फलदायी रूप में स्तुति करने का प्रयास अपने आप में अलौकिक है और जब भी देवी के इस फलदायी और वरदायक स्वरूप की विधिवत साधना किसी भी नाम से की जाती है, जब भी उनके कनकवर्षिणी या स्वर्णावती स्वरूप की साधना की जाती है, तब उस साधना के अन्त में इस स्तोत्र का पाठ करना आवश्यक हो जाता है।

जहां मंत्र द्वारा साधना एवं स्तोत्र पाठ द्वारा आराधना का सुखद संगम होता है, वहीं लक्ष्मी का प्रादुर्भाव होता है। जैसा कि इस स्तोत्र से स्पष्ट है कि इस भगवती लक्ष्मी की आराधना भगवान श्री नारायण की अभिन्न स्वरूप में की गई है अतः इस स्तोत्र का पाठ **शालीग्राम की स्थापना** कर यदि उसके समक्ष किया जाय तो यह स्तोत्र मात्र स्तोत्र न रह कर साकार रूप धारण कर लेता है , ऐसा कुछ विशिष्ट साधकों ने अपने अनुभव से ज्ञात किया है, क्योंकि इसमें शालिग्राम - स्थापना का विशेष महत्व है, और उसके सामने ही इस स्तोत्र का पाठ करना ज्यादा फलदायक माना गया है।

मृत आत्माओं का आह्वान

क्या यह संभव है . . . ? प्रवेश कीजिए मृतात्माओं के रहस्यमय संसार में और स्वयं ही उनसे वार्तालाप करके वास्तविकता जान लीजिए . . . !!

मनुष्य जब मरता है तो उसका शरीर निश्चय ही जमीन में गड़कर या चिता में जलकर समाप्त हो जाता है, परन्तु उसके प्राणतत्व जिसे हम मृतात्मा कहते हैं, वह वायुमण्डल में ऊपर उठकर विचरण करती रहती है । मनुष्य पंचतत्वों से निर्मित होता है उसमें जल तत्व, भूमि तत्व, अग्नि तत्व, वायु तत्व और आकाश तत्व ये पांचों तत्वों के होने से वह किसी को भी दिखाई दे जाता है, परन्तु **मृत्यु के बाद जब उसका भूमि तत्व लोप हो जाता है और केवल चार तत्व ही बाकी रहते हैं तो वह सामान्य व्यक्ति को दिखाई नहीं देता,** इसीलिए ये मृतात्माएं अशरीरी अथवा अदृश्य होती हैं।

हमारे इस विश्व के ऊपर एक और वायुमण्डल है या एक और वातावरण है, जिस वातावरण में ये मृतात्माएं बराबर विचरण करती रहती हैं। यद्यपि हम उन्हें नहीं देख पाते, परन्तु वे बराबर हमें देखती रहती हैं, और इससे भी बड़ी बात यह है कि वे हमसे बातचीत करने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। हम उनकी भाषा नहीं समझ पाते और यदि कभी उनकी छाया देख लेते हैं, तो भूत समझ कर भयभीत हो जाते हैं, थरथर कांपने लगते हैं, और उससे परे हटने की कोशिश करते हैं।

ये अशरीर आत्माएं दो कार्यों के लिए प्रयत्नशील रहती हैं, एक तो इन अशरीर आत्माओं की इच्छा रहती है क्रि वह अपनी पत्नी, पुत्र या परिवार के किसी सदस्य से बात करे और अपनी समस्या बताए। **वह यह बताना चाहती है कि उसकी मृत्यु किन परिस्थितियों में हुई, यदि उसका मर्डर हुआ है तो किसने किया है, और कहां किया है? यदि उसने जमीन में कहीं पर धन गाड़ रखा है तो वह किस स्थान पर है,** क्योंकि उसकी तो अचानक मृत्यु हो गई थी और वह यह बताने में समर्थ नहीं हो सका था।

और दूसरी उसकी यह इच्छा होती है कि वह किसी श्रेष्ठ गर्भ से जन्म ले ले और उसके लिए वह कोई न कोई गर्भ ढूंढता रहता है। पर उस जैसी और हजारों - लाखों आत्माएं होती हैं, तथा वे भी बराबर प्रयत्नशील रहती हैं कि किसी न किसी श्रेष्ठ गर्भ से जन्म ले ले, ऐसी स्थिति में जो शांत और सरल, सीधी -सादी आत्माएं होती हैं, वे पिछड़ जाती हैं और जो क्रूर आत्माएं होती हैं, जो जीवन काल में गुण्डा, बदमाश तथा क्रूर रही हैं, ऐसी आत्मा दूसरी सरल आत्माओं को धक्के देकर आगे बढ़ जाती हैं, और उस समय जो भी गर्भ खुला होता है, दूसरी आत्माओं को पीछे धकेल कर उस गर्भ में प्रवेश कर लेती हैं।

जो मृतात्मा होती है, जब तक उनका किसी न किसी गर्भ से जन्म नहीं हो जाता तब तक वह मृतात्मा अपने परिवार के चारों ओर विचरण करती रहती है, वह अपने परिवार के साथ बैठना चाहती है, अपने परिवार के सदस्यों से बातचीत करना चाहती है, पर कोई ऐसा सम्पर्क सूत्र नहीं बन पता, जिससे कि दोनों के बीच बातचीत हो सके, या संवादों का आदान - प्रदान हो सके।

और फिर हमारी ये समस्याएं -

हमारी भी इस संबंध में कई समस्याएं होती हैं, यदि हमारे माता - पिता या घर के किसी मुखिया की मृत्यु अचानक हार्ट अटैक से, एक्सीडेन्ट से या किसी यात्रा में हो जाती है तो कई समस्याएं हमारे सामने उठ खड़ी होती हैं, क्योंकि व्यक्ति अपने जीवन में कुछ गोपनीयता बनाये रखता है, अपने सारे भेद स्पष्ट नहीं कर देता, और फिर जब उसकी मृत्यु अचानक हो जाती है तो वे भेद, वे रहस्य उसके साथ ही चले जाते हैं। उदाहरण के लिए -- उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्रों को यह ज्ञान नहीं रहता कि यदि उनके पिता ने जमीन में स्वर्ण या गहने गाड़े थे तो कितनी गहराई में रखे थे, जिससे कि वे प्राप्त हो सके। यदि उन्होंने कुछ लोगों को रुपये उधार दिये थे, तो किन- किन लोगों को कितने रुपये उधार दिये थे, उनकी सूची उनके पास नहीं होती, या तो वे डायरी हिसाब -किताब की अपने पास रखते थे, वह डायरी अब मिल नहीं पा रही है। तो उस डायरी को उन्होंने कहां रखी है, जिससे कि लेने - देने की जानकारी प्राप्त हो सके, अथवा **उनकी मृत्यु के बाद जो इतने अधिक लोग वसूली लेने वाले आ गये हैं, और कह रहे हैं कि आपके पिताजी को हमने उधार दिया है तो क्या यह सही है?** इसकी कोई सूची या विवरण भी प्राप्त नहीं होता और उनकी पुत्र दुविधा - ग्रस्त और दुखी हो जाता है।

और फिर मृतात्माओं की भी तो इच्छा रहती है कि वे अपने परिवारजनों से बातचीत कर सकें, उन्हें गोपनीय रहस्य बता सकें, गड़ाधन या कोई जरूरी कागज दिखा सके . . .

कई बार जब व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो जाती है तो उसकी पत्नी के मन में हसरत बनी रहती है कि न मालूम अंतिम समय में वे क्या सोच रहे थे, जरूर वे कोई न कोई बात मुझसे कहना चाहते होंगे और कहने का कोई अवसर नहीं मिला या मरते समय उनकी आवाज बंद हो गयी थी और उंगलियों के इशारे से कुछ समझा रहे थे, पर हम सब समझ नहीं पा रहे थे कि वे क्या कहना चाहते हैं? ऐसी कई बातें होती हैं कि जो पीछे बचे हुए परिवार के लोगों को विचलित करते रहते हैं, और उनका कोई समाधान प्राप्त नहीं हो पाता।

आत्माओं से सम्पर्क-

ऐसी स्थिति में उस विशेष आत्मा या परिवार के उस व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित कर उसके विचार को जाना जा सकता है। इस संबंध में कई प्रकार की विधियां प्रचलित हैं और उन विधियों के माध्यम से परिवार के मृत सदस्य की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर उसके विचारों को जाना जा सकता है। या पीछे बचे हुए परिवार के सदस्य जो प्रश्न पूछते हैं उनका उत्तर प्राप्त किया जा सकता है।

"स्टैंड पद्धति", चम्मच पद्धति, छोटे बालक को माध्यम बनाकर जानने की पद्धति, बोर्ड पद्धति, आदि कई विधियों से इस जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है अथवा उस व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। और ये सभी विधियां अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक हैं।

संसार के प्रत्येक देश में इस संबंध में प्रयत्न हुए हैं और उपरोक्त विधियों के माध्यम से, आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया गया है। अमेरिका, इंगलैण्ड आदि में तो यह विधा ज्यादा प्रचलित है और ऊंचे से ऊंचे वैज्ञानिक ने यह स्वीकार किया है कि आत्माओं का अस्तित्व है और उचित माध्यमों द्वारा उन आत्माओं से सम्पर्क किया जा सकता है तथा उनसे संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

मैं लगभग ५२ प्रकार की पद्धति से परिचित रहा हूं और प्रत्येक प्रकार की पद्धति से आत्माओं का आह्वान करने में सफल हो सका हूं। और मैं यह प्रामाणिक रूप से कह सकता हूं कि वास्तव में यह सभी विधियां सही और उचित हैं तथा इन विधियों के माध्यम से हम वे रहस्य प्राप्त कर सकते हैं, जो उनके साथ समाप्त हो गये।

इन सब विधियों में **"मृतात्मा तंत्र"** से संबंधित जो विधि है, वह ज्यादा सरल है, और इसके माध्यम से ज्यादा प्रामाणिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है क्योंकि अन्य विधियों में एक कमी यह रहती है कि जब आप किसी आत्मा को बुलाते हैं तो उसके स्थान पर कोई दूसरी आत्मा भी आ जाती है और वह झूठ बोल देती है कि मैं ही तुम्हारा मृत पिता हूं और इस प्रकार वह आत्मा गुमराह करने का प्रयत्न करती है। कभी - कभी ऐसी क्रूर आत्मा भी किसी शरीर में आ जाती है, जो दुष्ट स्वाभाव की होती है और आने के बाद वापिस जाती ही नहीं। इस प्रकार एक नई समस्या उत्पन्न हो जाती है।

पर मृतात्मा तंत्र में ऐसी कोई समस्या नहीं होती, क्योंकि इसके द्वारा जिस आत्मा का आह्वान किया जाता है उससे

केवल इच्छित आत्मा ही आ पाती है और उसके द्वारा प्रामाणिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है, कई बार इस मंत्र के माध्यम से उस मृतात्मा की आवाज को सुन सकते हैं, जिससे यह विश्वास हो जाता है कि मृत आत्मा सही है और जिनसे हम सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं, वह यही है।

मृतात्मा यंत्र प्रयोग -

यह एक विशेष प्रकार का यंत्र होता है जो ताम्र पत्र पर अंकित होता है, और मृतात्मा तंत्र से इसे सिद्ध किया जाता है, जिससे कि यह यंत्र पूर्ण रूपेण प्रामाणिक हो जाता है।

फिर इस मृतात्मा प्रयोग को सिद्ध करना पड़ता है, सिद्ध करने के लिए किसी भी साधक को इस मृतात्मा यंत्र को सामने रखकर **काली हकीक माला** से सवा लाख मंत्र जप करना होता है, जिससे कि मृतात्मा सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ऐसी सिद्धि प्राप्त करने में किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती और न कोई नुकसान होता है। न उसे भूत-प्रेत तकलीफ देते हैं, और न वे अकारण दिखाई देते हैं। इस प्रयोग से तो उसका शरीर मृतात्माओं को आह्वान करने में समर्थ हो पाता है, और लाखों मृतात्माओं में से उस विशेष आत्मा को जल्दी से जल्दी बुलाने में समर्थ हो पाता है।

साधक को चाहिए कि यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करे, काले आसन पर, काली धोती पहन कर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं और किसी पात्र में "**मृतात्मा यंत्र**" को रख दें, और फिर एक तेल का दीपक लगा दें, तथा काली हकीक माला से मंत्र जप सम्पन्न करें।

मृतात्मा सिद्धि मंत्र -

मंत्र -

ॐ क्लीं क्रीं फट्

जब सवा लाख मंत्र जप पूरा हो जाता है तो उसे यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह किसी विशेष आत्मा को आत्माओं की इस भीड़ में से बुला सकता है, और उससे बातचीत कर सकता है, वह एक प्रकार से सही और प्रामाणिक माध्यम बन जाता है।

मृतात्मा प्रयोग -

सिद्धि प्राप्त होने के बाद वह किसी भी मृतात्मा को उपरोक्त मंत्र से ही आह्वान कर बुला सकता है। उसे स्पष्ट दिखाई देगा कि सामने धुंधला सा आकार आकर बैठा है या खड़ा हो गया है।

ऐसा मृतात्मा आह्वान प्रयोग लगभग सायं- काल ही करना चाहिए, ६ से ७ का समय ज्यादा उपयुक्त रहता है। जिस कमरे में यह प्रयोग करें, उस कमरे का वातावरण बिल्कुल शांत होना चाहिए, और कमरे में तीन-चार लोग ही बैठने चाहिए। दरवाजे और खिड़कियां पूरी तरह से बंद कर देना चाहिए। बहुत छोटा सा जीरो वाट का बल्ब लगाये रख सकते हैं। सामने लोबान, धूप या अगरबत्ती लगा देनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि कमरे में या बाहर किसी प्रकार का शोरगुल न हो।

प्रयोगकर्ता अपने सामने उस "मृतात्मा यंत्र" को रख दे, और जिस काली हकीक माला से मंत्र साधना की थी, उस माला को गले में धारणकर लें तथा जिस मृतात्मा को बुलाना है, उस मृतात्मा का नाम लेते हुए २१ बार या कुछ ज्यादा उपरोक्त मंत्र का धीरे-धीरे उच्चारण करना चाहिए। जब वह मृतात्मा सामने आकर खड़ी हो जाती है या बैठ जाती है, तो उससे प्रश्न करें कि आपका नाम क्या है, आप कौन हैं तो उसकी आवाज कानों में साफ-साफ सुनाई देगी कि मैं अमुक व्यक्ति हूं और मेरा अमुक नाम है।

उसके संबंधी जो प्रश्न पूछना चाहें वे प्रश्न का उच्चारण करें, उसी प्रश्नों का उच्चारण प्रयोग कर्ता भी करे, क्योंकि मृतात्मा केवल प्रयोग कर्ता की आवाज ही सुन पाती है और मृतात्मा की आवाज भी केवल प्रयोग - कर्ता ही सुन पाता है। उसके परिवार के सदस्य किसी भी गोपनीय बात को पूछकर तसल्ली कर सकते हैं कि वास्तव में ही सामने बैठी हुई प्रामाणिक आत्मा ही है, जिससे हम बातचीत करना चाहते थे।

जब संबंधियों के तरफ से प्रयोग - कर्ता प्रश्न करता है तो उसका समुचित उत्तर भी मिल जाता है, वह उत्तर आप मृतात्मा के संबंधियों को बता सकते हैं। इस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान हो सकता है, पर एक बार में १५ से २० प्रश्न चाहे वे किसी भी प्रकार के हों पूछना ही

मृतात्मा तंत्र . . . अविभाजित भारत के मशहूर औलिया- फकीर बदरुद्दीन की खोजी गई विधि जिसके प्रदर्शन से उसने सैकड़ों अंग्रेज अधिकारियों को अपना मुरीद ही बना लिया . . .

उचित रहता है।

प्रयोग समाप्ति पर प्रयोग कर्ता को चाहिए कि वे मृतात्मा को कष्ट के लिए धन्यवाद दें और उसे जाने को कहे, तब वह मृतात्मा अपने आप दूर चली जाती है।

वास्तव में आज के वैज्ञानिक युग में भी यह एक प्रामाणिक विज्ञान है कि हम उपरोक्त तंत्र से मृतात्माओं से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं, और उनसे बातचीत कर गोपनीय रहस्यों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ◎

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

की वार्षिक सदस्यता इस जीवन की बहुमूल्य एवं बेमिसाल उपलब्धि है।

उपहार ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/-
डाक खर्च सहित १६२/-,
बैंक ड्राफ्ट द्वारा,
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
जोधपुर के पक्ष में देय हो अथवा
वी.पी.पी. द्वारा मंगाएं।

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ - साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . .

जिनका ठोस आधार है --ज्ञात - अज्ञात, शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं . . .

. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन , सम्पदा, सुख - शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे . .

ज्योतिष , योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र -मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं। और ये सब कुछ प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई . . .

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४,
फोन - ७१८२२४८
फंक्स- ०११-७१८६७००

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१,
फोन - ०२९१-३२२०६

नाम ____________ पोष्ट ____________ जिला- ____________

पता ____________ पिन - ____________

राज्य ____________ - १६२/- ☐ वी.पी.पी ☐ बैंक ड्राफ्ट द्वारा

हस्ताक्षर ____________

पद्मासन

पिछले कई अंकों में जहाँ साधना में बैठने के ढंग या आसन का वर्णन आता है, वहां इस बात पर विशेष बल दिया गया है, कि साधक या साधिका पद्मासन में बैठ कर यदि साधना करें, तो सफलता प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। हमें कई ऐसे पत्र मिले जिनमें पाठकों ने जानना चाहा है कि 'पद्मासन' का साधना से क्या कोई विशेष संबंध होता है? यदि सामान्य रूप से ही साधना में रत हों तो, इसकी अपेक्षा क्या अन्तर पड़ता है? इस सहज जिज्ञासा का उत्तर देने के लिए हमने इस अंक में पद्मासन को ही अपना विषय बनाया है।

पद्मासन ही व्यक्ति को ऊर्ध्वगामी प्रवाह की ओर गतिशील करता है। जिसमें आरम्भ होती है आत्म चैतन्यता, ऊर्जा और केन्द्रीयता की भावना और इनके संयुक्त प्रभाव से मन विविध विषयों से कट कर किसी एक बिन्दु पर रुका रहने की स्थिति में आने लगता है।

पद्मासन की विधि :

पद्मासन के द्वारा ही साधक का शरीर स्वतः संतुलन और स्वसम्मोहन की स्थिति में रहता है, जिससे हमें भागते हुए मन पर नियंत्रण करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना नहीं पड़ता और जो ऊर्जा मन पर नियंत्रण करने में अपव्यय हो जाती है, उसका सदुपयोग साधना में किया जाता है।

पद्मासन एक कठिन आसन है और इसके लिए एकदम से हड़बड़ी करना हानिकारक भी हो सकता है। आयु, वजन अधिक होने के कारण या शरीर में लचीले-पन का अभाव होने के कारण प्रारम्भ में यह आसन एकाएक नहीं लग सकता। इसका नियमित अभ्यास, अर्द्धपद्मासन के द्वारा किया जा सकता है। अर्द्धपद्मासन में एक पांव दूसरे पांव की जंघा पर रखें और सुख पूर्वक कुछ देर इस स्थिति में रहने के पश्चात पैर का क्रम बदल दें। इस अभ्यास से धीरे-धीरे जंघाओं पर एकत्रित व्यर्थ का मांस एवं चर्बी पिघल जाती है, जंघाएं सुडौल आकार ले लेती हैं, जिससे व्यक्ति भविष्य में पूर्ण पद्मासन लगाने में भी सक्षम हो जाता है।

पद्मासन लगाने में सावधानियां

इस आसन को विशेष रूप से प्रातः काल के शांत वातावरण में ढीले-ढाले वस्त्र पहन कर करना चाहिए। जिस आसन पर बैठ कर इसका अभ्यास करें, वह कम से कम दो इंच मोटा और मुलायम होना चाहिए, स्त्रियां इस आसन को गर्भावस्था एवं ऋतुकाल में न करें। कभी भी भोजन के उपरान्त अथवा भरे पेट इसका अभ्यास करने से आंतों में सूजन आ जाने की संभावना रहती है।

आध्यात्मिक लाभ :

पद्मासन का पूर्ण रूप कमल खिलने का माना गया है, इससे व्यक्ति को असीम मानसिक शांति और आत्म-साक्षात्कार का लाभ प्राप्त होता है। मेरुदण्ड सीधा रहने से प्राण वायु के संचरण में सफलता मिलती है। नाभि के नीचे का प्रदेश कटिगत से आबद्ध होने के कारण मानसिक विकार एवं कुप्रवृत्तियों में कमी आती है। इन्द्रियां और मन शांत होता है। पद्मासन में बैठ यदि ठोड़ी को गले से लगाएं तो सहस्रार में प्राणों का संचरण सुचारु रूप से होने लगता है।

स्वास्थ्य लाभ :

सम्पूर्ण शरीर में सुडौलता आती है। दृष्टि तीक्ष्ण और स्वच्छ हो जाती है। चेहरे पर ओज बढ़ता है, मानसिक तनाव में शांति मिलती है और स्नायविक रोगों में कमी आती है। मधुमेह और उच्च रक्त चाप के रोगी के लिए पद्मासन का प्रयोग लाभ दायक रहता है।

पद्मासन, योग-जगत का श्रेष्ठतम विधान है, और जो साधना में तेजी से बढ़ना चाहते हैं, उन्हें पद्मासन का अभ्यास करना ही चाहिए। पद्मासन के पश्चात बद्ध पद्मासन, ऊर्ध्व पद्मासन, उत्थित पद्मासन विशेष रूप भी किये जा सकते हैं।

साधना नहीं की और मैं इसी से अनुमान लगा रहा था कि कैसा होता होगा वह क्षण जब इस संपूर्ण चराचर की अधिष्ठात्री मां भगवती जगदम्बा अपने सर्वाधिक तेजस्वी और स्तम्भनकारी बगलामुखी देवी के विशिष्ट स्वरूप में साधक के रोम - रोम में उतर जाती हैं - जिनकी एक कृपा दृष्टि से साधक के सम्पूर्ण दुखों और भय का विनाश हो जाता है, उनका रोम - रोम में समाहितीकरण कैसा अद्‌भुत और विलक्षण होता होगा, इन्हीं भावनाओं में मैंने तृतीय चरण की साधना आरम्भ की। प्रसन्नता और उद्रेक से मैं बार - बार ध्यानस्थ हुआ जा रहा था।

गुरु चरणों को आधार बनाकर की जाने वाली श्रेष्ठतम पद्धति जिसमें लाखों की संख्या में मंत्र जप करना आवश्यक ही नहीं . . .

मैं अपने सामने उनकी बन रही इस छवि को देख - देख कर मुग्ध होता जा रहा था और उनके स्वर्णमय शरीर की स्वर्णिम रश्मियों से मेरे रोम - रोम में समा गई दरिद्रता, दैन्य और तनाव छंटता जा रहा था। अन्त का यह चरण मेरे लिये भावनाओं की तीव्रता के कारण पूरा करना कठिन हो रहा था, किंतु पूज्यपाद गुरुदेव के श्री चरणों का ध्यान कर मैं किसी प्रकार अपने को स्थिर चित्त बनाये रखने का प्रयास कर रहा था। **अन्तिम क्षण बीतते - बीतते मुझे ऐसा आभासित हुआ कि जैसे मेरे आज्ञा चक्र के समक्ष कई सूर्यों का प्रकाश जगमगा उठा है और मैं एक झटके से अपने आसन पर लुढ़क गया।** मेरा शरीर थरथरा रहा था और आंखों से अविरल अश्रुप्रवाह आरम्भ हो गया था। मैं समझने में असमर्थ था कि मेरी यह स्थिति क्यों हो गयी। मैं तो सर्वथा अज्ञानी हूं। भक्ति और चिन्तन रहित एक सामान्य साधक जिसे जीवन में न तो कोई धारणा रही, न भगवती बगला मुखी का बोध। वह कैसे इस स्थिति में आ गया, जो योगियों के लिये भी दुर्लभ कही गई है, जो भाव विह्वलता उच्च कोटि के साधकों को भी अप्राप्य रही है।

कुछ देर ऐसी स्थिति में रहने के बाद और अपने रोम - रोम में समा गयी अलौकिक शक्ति की तीव्रता को समेट लेने के बाद मैं किसी प्रकार सहज होकर बैठ गया, प्रायः रात्रि के क्षण आरम्भ हो चुके थे और वह देव पुरुष पता नहीं कब बाहर जा चुका था। सामने पूजा स्थान में जलते दीपक के मंद प्रकाश में मां भगवती बगलामुखी अपने चित्र में प्रकट तीव्रतम स्वरूप में मंद - मंद मुस्कराती लग रही थीं और मैं अपने रोम - रोम में ऐसी चैतन्यता और प्रवाह अनुभव कर रहा था, जिसे शब्दों में वर्णित नहीं कर सकता। मुझे स्पष्ट लग रहा था कि मेरे दुख - दैन्य और तनाव भरे जीवन के क्षण समाप्त हो चुके हैं। प्रसन्नता के अतिरेक से रोम - रोम थिरक रहा था मैं विधिवत आरती एवं जप समर्पण करते ही जाकर पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों से लिपट गया। उनका आशीर्वाद एवं वात्सल्य मय वरद हस्त अपने सिर पर स्पर्श प्राप्त कर साधना की पूर्णता प्राप्त की।

दूसरे ही दिन मैं वापस अपने शहर के लिये रवाना हो गया और पूज्यपाद गुरुदेव के निर्देशानुसार अपनी बंद पड़ी दुकान को पुनः साहस के साथ खोल दिया। मेरे रोम - रोम में ऐसा विश्वास समा चुका था कि मुझे अपनी सफलता के प्रति कोई संदेह ही नहीं रह गया था और आश्चर्य- जनक रूप से सप्ताह बीतते न बीतते जैसे - जैसे लोगों को मेरी दुकान के पुनः खुलने का पता लगा वे स्वतः आने प्रारम्भ हो गये। **मेरे प्रतिद्वन्दी मेरे स्वभाव व मेरे व्यापार में आये परिवर्तन से भौचक्के रह गये। मुझमें इतना आत्मविश्वास आ गया था कि मैं सीधे ग्राहकों की आंखों में आंखें डाल कर इस प्रकार से बातें करने लगा था कि वे मेरी दुकान से सामान खरीदने को बाध्य हो जाते थे।** जब एक बार सफलता का क्रम आरम्भ हो गया तो फिर सहयोगी भी मिलने प्रारम्भ हो गये, जिनके सहयोग और पूंजी से मैंने अपना व्यापार शीघ्र ही पहले की ऊंचाई में पहुंचा दिया। आश्चर्य तो यह रहा कि मेरे एक पार्टनर ने, जिसका बहुत सारा ऋण मेरे ऊपर बकाया था और जिसे वापस पाने के लिये उसने मेरे विरुद्ध मुकदमा भी दायर कर दिया, उसने स्वतः आकर मुझसे समझौता कर लिया। केवल समझौता ही नहीं किया बल्कि मुकदमा भी उठा लिया। निः संदेह सब कुछ पूज्यपाद गुरुदेव का आशीर्वाद एवं मां भगवती बगलामुखी देवी की ही कृपा से संभव होता जा रहा था।

मावन जीवन में तो अनेक प्रकार की स्थितियां बनती - बिगड़ती रहती हैं। कहीं घात लगाकर आक्रमण करने वाले शत्रु होते हैं, तो कभी आकस्मिक रूप से घट जाने वाली दुर्घटनायें होती हैं। ऋण, पारिवारिक समस्याएं, जीवन के उतार - चढ़ाव यह सब तो ऐसी स्थितियां हैं जिनसे व्यक्ति एक बार फिर भी अपने प्रयासों से जूझ सकता है, लेकिन जहां कोई भावी, अज्ञात अनिष्ट मंडरा रहा हो उसके निराकरण का तो एक मात्र उपाय इन दैवी बल का आश्रय ही होता है और मैं अपने अनुभवों से दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि <u>ऐसी समस्त अप्रिय स्थितियों से निपटने के लिये मां भगवती बगलामुखी की अहैतुकी कृपा से बढ़कर कोई कृपा है ही नहीं।</u> जिसके रोम - रोम में बगलामुखी समा जाय उसका तो विरोध करने वाला स्वतः पतन की ओर गतिशील हो जाता है- ऐसा शास्त्रोक्त कथन भी है।

पारदेश्वरी दुर्गा

"दुर्गा साधना का सीधा अर्थ है जीवन में शक्ति की उपासना करना, शक्तिमयता प्राप्त करना और जीवन के समस्त सुखों का पूर्ण क्षमता से उपभोग करना। शक्ति अपनी उत्पत्ति में तीन प्रकार से संभव होती है - प्रभाव ,उत्साह और मंत्र से उत्पन्न . . ."

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक शक्ति की महत्ता से संबंधित अनेक उपासनाएं और साधनाएं प्राप्त होती रही हैं। प्राचीन शास्त्रों में, उपनिषदों में जहां मुख्य विवेच्य विषय ब्रह्म रहा वहां भी स्पष्ट घोषित किया गया कि जिस प्रकार से ईश्वर का अंश - सत् एवं चित् इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त है, उसी प्रकार शक्ति अर्थात देवी का " आनन्द अंश' भी सर्वत्र व्याप्त है एवं इसी कारण वश व्यक्ति अपने जीवन के विविध क्रिया कलापों में सुख एवं तृप्ति की अनुभूति करता है। इस वर्णन से सहज ही ज्ञात हो जाता है कि जहां जीवन में सुख एवं आनन्द की तृप्ति का अनुभव करना है, वहां देवी की आराधना करनी ही होगी। उनके द्वारा प्रदत्त शक्ति से आपूरित होना ही होगा, अन्यथा जीवन में किसी सुख की बात करना तो दूर सामान्य क्रियाशीलता की अपेक्षा करना भी संभव नहीं।

मनुष्य के जीवन में भौतिक कामनाएं मूल -भूत रूप से बहुत अधिक नहीं होती हैं। मूल भूत आवश्यकताएं तो कुछ एक ही होती हैं, किन्तु उनके अभावों में विविध समस्याएं और बाधाएं आकर खड़ी हो जाती हैं। योग्य साधक जीवन की मूल भूत आवश्यकताओं को समझ कर उनका समाधान कर लेता है और विविध कष्टों से स्वयं को निरापद बना लेता है, जबकि एक सामान्य व्यक्ति जीवन की विविध बाधाओं में घिर कर ऐसा समझने लगता है कि उसके साथ अनन्त कठिनाइयां चल रही हैं। **जीवन की मूल - भूत आवश्यकताएं तो उंगलियों पर गिनी जा सकती हैं, स्वस्थ शरीर होना, पर्याप्त धन होना ,शत्रु बाधा न होना, राज्य कष्ट न होना, सुयोग्य पत्नी होना, श्रेष्ठ संतान होना और इन सबसे ऊपर जीवन में धार्मिक चिंतन एवं मोक्ष प्राप्ति की दशाएं होना, जीवन के यही सात सुख मुख्य माने गये हैं** और जीवन के नितांत भौतिक पक्ष से आरम्भ कर, उसे सर्वोच्च लक्ष्य मुक्ति तक पहुंचा देने की निर्विघ्न यात्रा, केवल शक्ति के साहचर्य से संभव होती है। यही जीवन की पूर्ण यात्रा है और शक्ति अथवा देवी इस सम्पूर्ण यात्रा में केवल एक सहायक तत्व ही नहीं है वरन नितांत आवश्यक तत्व है।

जैसा कि प्रारम्भ में स्पष्ट किया गया कि शक्ति अपने प्रभावों में तीन प्रकार से उत्पन्न हो सकती है, प्रभाव , उत्साह एवं मंत्र से उत्पन्न। जीवन में शक्तिमयता की दशा , देवी की अहैतु की कृपा से भी उत्पन्न

हो सकती है, भक्ति और भावविह्वलता की निश्छल दशा आ जाने पर मन में होने वाले आनन्द के स्फुरण से उत्पन्न उत्साह के द्वारा भी हो सकती है, अथवा सामान्य दशाओं में श्रेष्ठ साधक इसे साधना के द्वारा मंत्रोच्चार की विशिष्ट पद्धति को अपना कर भी प्राप्त कर सकते हैं। शक्ति प्राप्ति की तृतीय स्थिति मंत्रोच्चार अथवा मंत्र के द्वार उत्पन्न शक्ति ही जीवन में प्राप्ति की ऐसी दशा है जो कि निशिचत एवं तुरंत फलदायक है । यही व्यवहारिक मार्ग है, जिसे एक गृहस्थ साधक अपने जीवन में उतार सकता है।

पारद का शक्ति संस्कार

शक्ति साधना का उपाय देवी साधना ही है और वह भी तब सफलता दायक है, जबकि उसके निशिचत क्रम और पद्धति का अनुसरण किया जाए। प्राचीन काल में जबकि विशिष्ट योगीजन पारद के माध्यम से स्वर्ण निर्माण करने की ओर गतिशील थे तब उन्होंने एक विशिष्ट तथ्य यह भी पाया कि यदि तंत्र का एवं पारद का संयोग कर दिया जाता है, तो उसी तांत्रोक्त क्रिया में पहले की अपेक्षा प्रभाव कई गुना अधिक बढ़ जाते हैं। जहां तंत्र पद्धतियों में पारद विज्ञान का प्रवेश हुआ, वहां तंत्र की मूल आराध्या शक्ति भगवती दुर्गा से इसका संबंध होना स्वाभाविक ही था। ऐसे ही एक गोपनीय पद्धति है **'पारदेश्वरी दुर्गा साधना पद्धति'** जिसमें पारद की दुर्गा का निर्माण कर, साधना सम्पन्न की जाती है। पारदेश्वरी दुर्गा का निर्माण अत्यंत कठिन है क्योंकि पारद का बद्धिकरण दुरुह होने के साथ - साथ मूर्ति का निर्माण केवल एक आकार ही देने की प्रक्रिया मात्र ही नहीं होती।किसी भी मूर्ति का निर्माण करते समय कुछ गुह्य क्रियाओं, एवं प्राण प्रतिष्ठा की, तो साधारण मूर्ति में भी आवश्यकता पड़ती है , फिर जहां किसी विशिष्ट धातु से मूर्ति का निर्माण किया गया हो, वहां तो प्रक्रियाएं भी विशिष्ट होती हैं।पारद विज्ञान से संबंधित ग्रन्थ अधिकतर हस्तलिखित ही रहे और गुरु अपने किसी एक शिष्य को परम्परा से सौंपते रहे। ***पारद तो एक ऐसी धातु है, जो संस्कारित होने के पश्चात अनेक शास्त्रोक्त नियमों और बंधनों से मुक्त होती है, और जिससे निर्मित विग्रह पर की जाने वाली साधना सदैव फलदायक होती है।***

किन्तु पारद से संबंधित ज्ञान केवल परंपरा से ही ज्ञेय है और उसका पूर्ण व विस्तृत विवरण इन पन्नों के माध्यम से स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

पारदेश्वरी दुर्गा साधना प्रयोग

किसी भी पवित्र दिवस को जब मन में उत्साह हो, मां भगवती दुर्गा के सुखद स्पर्श की कामना और उनके आशीर्वाद प्राप्ति की भावना मन में बलवती हो, मन में दिव्य तरंगों का आवागमन हो तथा जीवन की आपाधापी से कुछ क्षण परे हटकर मां भगवती के चरणों में शिशुवत बैठने की भावना उमड़े, तब इस साधना को सम्पन्न करें। पीले रंग के वस्त्र धारण कर पीले ही आसन पर बैठें दिशा पूर्व हो और एक चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर किसी ताम्रपात्र में पुष्प की कुछ पंखुड़ियां बिछा कर **मां भगवती दुर्गा के पारदेश्वरी विग्रह** को सम्मान पूर्वक

स्थापित करें। घी का दीपक जलायें और प्रार्थना करें -- 'मां भगवती जगदम्बा इस विग्रह के माध्यम से उनके घर और जीवन में स्थायित्व ग्रहण करें।' सुपारी, अक्षत, पुष्प,सिन्दूर, कुंकुम, लौंग एवं इलायची से उनका पूजन करें और प्रार्थना कर निम्न ध्यान का उच्चारण करें-

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं,
वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये,
सुतरसि तरसे नमः ।।

अर्थात "जिनका वर्ण अग्नि के समान है जो स्वयं ही प्रकाशवान हैं और अपनी तपः शक्ति के द्वारा जाज्वल्यमान हो रही है, जो इस लोक और परलोक की पूर्णता प्रदान करने के लिए साधकों के आह्वान पर उपस्थित होती है, मैं उन्हीं देवी दुर्गा की शरण ग्रहण करता हूं, हे मां! तुम संसार सागर को पार करने के लिये श्रेष्ठ सेतु हो. तुम्हीं मुक्ति प्रदान करने वाली हो, मैं तुम्हें ही प्रणाम करता हूं!"

उपरोक्त ढंग से ध्यान करने के उपरांत **कामदा माला** से निम्न पारदेश्वरी दुर्गा मंत्र का मंत्र जप करें।

तंत्र और पारद एक दूसरे के पर्यायवाची ही है बिना पारद के तंत्र की कल्पना संभव ही नहीं . . .

यह माला अपने आप में इस प्रकार से चैतन्य की गयी होती है कि इसका उपयोग भविष्य में किसी भी शक्ति साधना अथवा महाविद्या साधना में कर सकते हैं , साथ ही ऐसी माला को निरंतर गले में धारण करना भी, साधक के जीवन का पुण्य होता है, जिसके स्पर्श से उसके अंदर निरंतर ऊर्जा का अतिरिक्त प्रवाह होता रहता है।

इस माला से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र करें। इसमें दिवसों की संख्या निर्धारित नहीं है और यदि साधक इस मंत्र का नित्य प्रति २१ माला मंत्र जप कर सकें, तो श्रेष्ठ माना गया है, अन्यथा प्रति सप्ताह एक दिन निश्चित कर इस मंत्र की २१ माला का जप अवश्य करें।

मंत्र-

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं पारदेश्वर्यै ह्रीं श्रीं ऐं फट्

उपरोक्त मंत्र की पूर्ण सिद्धि सवा लाख मंत्र जप करने से प्राप्त होती है यदि साधक पूरी किसी भी नवरात्रि में केवल उपरोक्त मंत्र का अनुष्ठान मात्र कर लें तो उसे दुर्गा सिद्धि के साथ - साथ मां भगवती महा लक्ष्मी की पूर्ण सिद्धि भी मिल जाती है क्योंकि संस्कारित पारद से निर्मित विग्रह अपने आप में लक्ष्मी तत्व का समावेश भी किए होता है।

शिष्यों के सात संकल्प
सद्गुरुदेव के प्रति

- मैं प्रतिमाह **'पत्रिका'** की कम से कम बीस प्रतियां मंगाकर वितरित करूंगा ही। (जोधपुर के पते पर पत्र लिख कर)
- अपने गांव या नगर में, दीवारों पर बीस स्थानों पर **'मंत्र- तंत्र - यंत्र विज्ञान'** के बारे में लिखाऊंगा।
- गांव या शहर के मुख्य चौराहे पर **होर्डिंग** बना कर उस पर पत्रिका के बारे में लिखवाऊंगा।
- स्थानीय या राज्य स्तरीय अखबार में पत्रिका का विज्ञापन दूंगा।
- प्रत्येक २१ तारीख को कुछ न कुछ गुरुदक्षिणा भेंट स्वरूप भेजूंगा।
- नित्य एक नया पत्रिका सदस्य बनाऊंगा।
- प्रत्येक रविवार को **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** के गुरुभाई - बहन एक स्थान पर एकत्र होंगे व पत्रिका प्रसार के बारे में कार्यक्रम बनाएंगे।

अलौकिक विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर	सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
इन्द्राक्षी यंत्र	१३	३००/-	लघु मोती शंख	५०	१२०/-
सम्पूर्ण १०८ लक्ष्मी यंत्र	१४	२४०/-	पांच हकीक पत्थर	५०	१२०/-
बड़ा गुरु चित्र	१७	३००/-	कमल गट्टे की माला	५०	१५०/-
सिद्धाश्रम संस्पर्शित गुरु यंत्र	१७	४५०/-	काली महामोहन यंत्र	५६	३९०/-
सिद्धाश्रम चैतन्य रहस्य माला	१७	३००/-	पांच गोमती चक्र	५६	१०५/-
आत्म यंत्र	१७	३७०/-	दो तांत्रोक्त नारियल	५६	१५०/-
मनोवांछित गर्भ चयन दीक्षा	३१	१५००/-	विद्युत माला	५६	४००/-
चिन्त्य साधना यंत्र	३४	२१०/-	महालक्ष्मी दीक्षा	६३	२१००/-
स्फटिक माला	३४	३००/-	पुत्रदा यंत्र	६६	३००/-
भुवनेश्वरी महायंत्र	३८	३६०/-	पांच पुत्रदा फल	६६	१०५/-
स्फटिक मणि माला	३८	२१०/-	पुत्रजीवा माला	६६	२००/-
बगलामुखी यंत्र	३९	४५०/-	अलौकिक गुटिका	६७	३००/-
पीली हकीक माला	३९	१५०/-	शालिग्राम	७०	१५०/-
षोडशी महायंत्र	३९	४१०/-	मृतात्मा यंत्र	७३	१५०/-
राज राजेश्वरी माला	३९	२४०/-	काली हकीक माला	७३	१५०/-
छिन्नमस्ता यंत्र	४४	२८०/-	पारदेश्वरी दुर्गा	७९	३७०/-
काली हकीक माला	४४	१५०/-	कामदा माला	७९	१४०/-
कमला महायंत्र	५०	३००/-			

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पताः-

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : श्री नन्द किशोर श्रीमाली

है . . . यह जीवन का पुण्य कार्य है, इस दुर्गन्ध पूर्ण वातावरण में . . . सेक्स , हिंसा व राजनीति के गंदले वातावरण में, अपनी परम्परा का स्मरण करांना ही सही अर्थों में यज्ञ की तरह पावन कार्य है। आपका यह सभ्य प्रयास इस यज्ञ में आहुति ही तो है . . . वातावरण को सुगन्धित व स्वच्छ करने में।

किसी को शीतलता का अहसास कराना, दो पल के लिए उसके तनाव से न केवल दूर ले जाना वरन स्थायी निदान का उपाय भी बताना। **यही कार्य सम्पन्न हो रहे हैं पत्रिका के निरन्तर प्रचार से . . . हमारे आपके परस्पर सहयोग से** -- क्या यह जीवन का सर्वोच्च पुण्य नहीं है।

यह आपका दायित्व है -

अभी आपका दायित्व समाप्त नहीं हुआ है, और सच कहा जाय तो अब आपका दायित्व प्रारम्भ हुआ है। यह तो कसौटी थी पूज्यपाद गुरुदेव की अपने शिष्यों के मध्य **" पुरुष"** ढूंढ लेनें की और पुरुष वह होता है जो जीवन में **"स्व"** से ऊपर उठकर **"सर्व"** की ओर उन्मुख होता है . . . और इसी में पूर्णता है पुरुषोत्तम बनने की . . . जब आप पुरुषों में भी उत्तम बन, यह कार्य सम्पन्न होगा तब आप इसके आगे के दायित्वों को वहन करेंगें, जो गुरु चरणों में व्यक्त की गई आपकी शिष्यता की सर्वोत्तम भावना और पत्र, पुष्प होगी। आप निश्चय कर लें --- " मुझे अगले वर्ष के लिए अभी से सदस्यता अभियान में संलग्न हो ही जाना है, जिससे अधिक से अधिक पाठक वार्षिक सदस्य बन कर, केवल पाठक ही नहीं हमारे पत्रिका परिवार के, हमारे **'मंत्रतंत्र यंत्र विज्ञान परिवार'** के अभिन्न अंग बन जाएं . . . एक रचनात्मक आंदोलन में सहभागी बनें, हम सभी परस्पर सुख- दुख के साथी बने"

. . . . लेकिन *जो प्रचार का कार्य अखबारों में विज्ञापन तथा होर्डिंग के माध्यम से आरम्भ हुआ है वह निरंतर चलता रहे, साथ ही वॉल पेन्टिग के द्वारा तथा छोटे - छोटे पोस्टरों को उचित स्थान पर चिपका कर इस कार्य को और भी अधिक आगे बढ़ाना है।* उपाय जो कुछ भी हो , उद्देश्य केवल एक ही है कि समाज का प्रत्येक वर्ग इस पत्रिका से परिचित हो।

. . . . जब आप नगर , कस्बे अथवा ग्राम में **"मंत्रतंत्र यंत्र क्लब "** की स्थापना करें तब समस्त नये पाठकों एवं जिज्ञासुओं को भी अपने साथ लेकर संस्था की गतिविधियों से परिचित कराएं। शिविरों में आप जिस आनन्द के साक्षी बन चुके हैं, जिस ज्ञान गंगा को पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीमुख से प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें भी उसका बोध कराना है। **आप के द्वारा स्थापित यह 'चेतना केन्द्र' ही भविष्य में संस्था के विभिन्न गतिविधियों को, आपके क्षेत्र में संचालित करने का आधार बनेंगे।** अतः आप जोधपुर या दिल्ली कार्यालय को सूचित क़रते हुए ऐसे 'चेतना केन्द्र' को अवश्य स्थापित करें।

यह **'चेतना केन्द्र'** आपके व्यक्तित्व एवं प्रयासों से सचमुच चेतना के केन्द्र बन सके, अन्य संस्थाओं की भांति राजनीति एवं चौपाल का रूप धारण न कर ले, यह बहुत बड़ा दायित्व आपका है, क्योंकि आप में है वह सामर्थ्य, वह चेतना, वह बल जो वर्षों से विभिन्न दीक्षाओं के माध्यम से सद्गुरुदेव ने आपको प्रदान किया है। यही आपका चतुर्थ चरण है . . . भावी समय के लिए आने वाली पीढ़ियों के लिए। सामूहिक गुरु मंत्र का जप, सामूहिक साधना के साथ - साथ आपको भी परिचित कराना है पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पाठकों को, उन्हें दीक्षा का अर्थ बताना है, उन्हें दीक्षा का अर्थ समझाना है, सम्पूर्ण रूप से एक आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करना है। **आप समाचार - पत्रों के द्वारा एवं घर - घर सम्पर्क करके उन्हें बताएं कि पत्रिका में प्रकाशित ज्ञान केवल आज के लिए ही नहीं, सदा - सदा के लिए संग्रहणीय है,** और केन्द्र में उपलब्ध प्राचीन अंको का वितरण भी आपके द्वारा, आपके स्थानीय कार्यालय से ही संपादित हो , जिससे सद्गुरुदेव द्वारा प्रदत्त ज्ञान का अधिकाधिक विस्तार हो सके। आप सक्षम हैं, समर्थ हैं, योग्य हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि पूज्यपाद सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में आस्थायुक्त हैं। आपको यह स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह बात सिद्ध हो चुकी है आपके द्वारा किये गए प्रयासों द्वारा, इस एक माह के अन्तर्गत ही . . . अब इस कार्य को रुकने नहीं देना है , परिवर्तन का जो क्रम प्रारम्भ हो गया है, चेतना की जो ज्वाला धधक गयी है, उसे पूर्णता दे ही देना है।

हमारे विश्वास का आधार ही हैं आप सभी शिष्य, साधक एवं पाठक गण।

संकल्प

गुरुदेव! मैं आपका यह उद्बोधन पढ़कर संकल्प लेता हूं कि पीछे दिये **"जागरण-प्रपत्र"** पोष्ट कार्ड भर कर ज्यादा से ज्यादा नवम्बर की पत्रिकाएं वी.पी. से मंगाकर वितरित करूंगा या बेचूंगा।

मैं आपका सही एकलव्य की तरह शिष्य हूं।

आपका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिवार

A.H.W. पोस्टल डी. एल.नं० १६०५२/६३

अद्‌भुत होंगे ये क्षण

जब पूज्यपाद गुरुदेव
इन चार दिनों में दे देंगे -- ' जीवन के
चारों पुरुषार्थ' अपने शिव स्वरूप में
औढर - दानी बन. . .

(०४.१२.६३) **धनवन्तरी दीक्षा -**
पुष्य नक्षत्र, ब्रह्म योग तो फिर क्यों नहीं सफल होगा कोई भी कार्य . . .

(०५.१२.६३) **ज्ञान दीक्षा -**
देह दोष शुद्धि, आयु दोष शुद्धि और भोग दोष शुद्धि इन तीन क्रमों से
गठित होती है यह ज्ञान दीक्षा, जीवन में नया पृष्ठ खोलने के लिए

(०६.१२.६३) **शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण -**
जब एक झटके में ही मूलाधार में सुप्त पड़ी ऊर्जा का प्रवाह हो जाएगा
सारे शरीर में, एक ही बार में सप्त चक्र जाग्रत करने की क्रिया . . .

(०७.१२.६३) **त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा -**
जो प्रतीक है **'सम्पूर्णता की'** कालाष्टमी एवं मंगलवार के
सुखद संयोग से चैतन्य हो गया है यह दिवस,
ऐसी ही दीक्षा के लिए . . .

धर्म, अर्थ, काम , मोक्ष चारों पुरुषार्थ
आ समाए हैं इन्हीं चार दीक्षाओं में . . .
सम्पूर्ण जीवन को संवारने के लिए सबसे संक्षिप्त
क्रम . . . या फिर साधक प्राप्त कर सकता है अपनी
मनोभावनाओं के अनुसार कोई एक क्रम भी . . .

सम्पर्क

गुरुधाम ३०६, कोहाट इन्क्लेव,पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४, फोन - ०११- ७१८२२४८

नोट -
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल 'गुरुधाम' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों पर प्रदान करेंगे।